राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार

(व्यक्तित्व-कृतित्व-सृजन प्रक्रिया अरु ब्रज-रचना माधुरी)

❑

भाग 14

❑

प्रधान सम्पादक

गोपालप्रसाद मुद्‌गल

❑

संपादक मंडल

गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

फतहलाल गुर्जर, नाथूलाल महावर, बिहारीशरण पारीक

विषय सूची

श्री रत्नगर्भ तैलंग

श्री आनंनदीलाल 'आनन्द'

सम्पादकीय.........

ब्रजभाषा के साहित्यकार यों तौ सिगरे भारत देस मे फैले भए है, पर राजस्थान माँहि इनकौ बाहुल्य है। याके पीछै अनेक कारन हैं, पर राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना सौं ब्रजभाषा के साहित्यकारन कूँ प्रकासन मे लाइबे कौ सुऔसर हाथ लग्यौ है। भरतपुर, धौलपुर, करौली अरु अलवर तौ ब्रजभाषा के गढ रहे हैं पर सवाईमाधोपुर, कोटा, राजसमंद (कांकरोली अरु नाथद्वारा) जैसे जिलेन में हू ब्रजभाषा की झलक देखवे कूँ मिलै है। राजस्थान के अन्य जिलेन में हू ब्रजभाषा के साहित्यकार सतत साधना में लीन है। जि दूसरी बात है कै ब्रजभाषा कौ पद्य अरु गद्य सब जगह इकसार नाहैं। "चार कोस पै पानी बदलै आठ कास पै बानी" लोकोक्ति के अनुसार क्रिया अरु विभक्ति रूपन में अंतर जरूर दिखाई परै। तौऊ अन्तरधारा एक है।

या संकलन के सन्दर्भ में एक बात दृष्टव्य है। चारों व्यक्तित्व डॉ त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', श्री रत्नगर्भ तैलंग, अरु आनंदीलाल आनंद, कवि हैं। इनमें डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी ब्रजभाषा के गद्य लेखन में अपनी अलग पहचान बनाए भए हैं। समीक्षक और व्यंग्यकार के रूप मे आप विसेस प्रख्यात भए हैं। इन चारों साहित्यकारन नै युगानुरूप साहित्य कौ सृजन करौ है। दीन, हीन, पददलित, तिरस्कृत पिछड़े वर्ग कूँ ऊपर उठावे मे अपनी प्रतिभा कौ उपयोग करौ है।

हर जगह ग्लोबल विलेज की बात है रही है। संचार के साधनन नै सिगरे संसार कूँ भौत निकट ला दियौ है। हम एक कौने में सिमट कै नाँय रह सकैं। हर देस की सामाजिक, आर्थिक, अरु राजनैतिक परिस्थितीन सौ प्रभावी होय। विदेसन के साहित्य कौ तौ विसेस प्रभाव पड़ै। तबई तौ कथ्य अरु शिल्प में नित नए बदलाव दिखाई परै। जि सुभ संकेत है कै ब्रजभाषा–साहित्यकार पद्य के संग गद्य की नई विधान में साहित्य सृजन कर रहे हैं।

या संकलन के संदर्भ में एक बात और निवेदन करनौ चाहूँ अब तक के संकलन कौ सीर्सक रखौ 'राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार पर या संकलन सौ 'अग्यात' सब्द हटावे कौ निरनय लियौ गयौ है। याकौ जि कारन है कि जो साहित्यकार लब्धप्रतिष्ठ हैं। पूर्व में ही स्थापित हैं बिनकूँ हू या स्तम्भ में लैकैं कोऊ न्याय नाँय कर पावैं। राजस्थान के व्रजभाषा साहित्याकार सीर्सक में ज्ञात अरु अग्यात सव समा जाएँ। मोय विसवास है कै पाठकन के जो पत्र या सन्दर्भ में आए, वे या सीर्सक सौं सन्तुष्ट हुंगे। आऔ अव चारों साहित्यकारन के अबदान कौ ब्यौरा क्रम सौं जान लैं।

❑ डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी

या संकलन के प्रथम साहित्याकार डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी हैं। पिछले छै दसकन सौं निरंतर लिखते रहे हैं जि बात अलग है कै हिन्दी और ब्रज दोनोंन में विन्नैं रचना करी है। विन्नैं काव्य सृजन के पीछें अपनौ संवेदनशील मन मानौ है। भावातिरेक सौं काव्य निसृत भयौ है। काव्य सौं अधिक जोर व्यंग्य गद्य लेखन की और रह्यौ है। कवि सम्मेलन में कहास और पत्र पत्रकान में छपास की खाज सौं दूर रहे पर--पत्र पत्रकान में खूब छपे। साहित्य में कला पक्ष के पक्षधर नहीं रहे। वे शिल्प में हू चमत्कार सौं बचकैं रहे।

श्री चतुर्वेदी गणेश चतुर्थी कूँ 18 सितम्बर 1998 कूँ जन्मे। पिताश्री मदनमोहन जी चतुर्वेदी अरु माता श्रीमती गुणवती चतुर्वेदी हीं। इनके घर में पुष्टिमार्गीय विचारधारा की प्रधानता रही। स्वयं श्री त्रिभुवनजी नैं लिखौ है कै बिनकी नानी सवेरे-सवेरे सूरदास अरु परमानंददास के पदन कूँ गायौ करैं ही जाकौ प्रभाव बाल मन पै ऐसौ परौ कै श्री त्रिभुवन भक्ति, अरु काव्य सौं संस्कारित है गए। प्रारम्भिक पढ़ाई वारां अरु कोटा में भई। वहीं पै बचपन सौं ही कविता के प्रति रुचि बढ़ी। समस्यापूर्ति सौं व्रजभाषा की सेवा प्रारम्भ करी। सेवाकाल में लेक्चरर के पद पै अलवर अरु भरतपुर रहे। यों तो परम्परावादी अरु प्रगतिवादी अनेक साहित्यकारन के सम्पर्क में आए पर डॉ. रामानंद तिवारी जी सौं वहुत प्रभावित रहे। गुरु कमलाकर जी के श्रीमुख सौं उद्धवशतक कई बार सुन्यौ जासौं प्रभावित हैकैं उद्धवशतक की समीक्षा लिखी। हरनाथ ग्रन्थावली हू व्रजभाषा की अमोल निधि है ताहू की प्रभावोत्पादक ढंग सौं समीक्षा करी है।

श्री त्रिभुवन, हिन्दी, व्रज और अंग्रेजी तीनों भाषान के साहित्य के सुपाठक रहे हैं। पच्छिम के ग्रन्थन कौ अच्छौ अध्ययन करौ है। तवई तौ बिनके काव्य में दोनों धुरीन की संतुलित छाप दिखाई परै। 'सुनौ युधिष्ठिर' चतुर्वेदी कौ ऐसौ काव्य है जो

नई पहचान करावै। या संकलन में परम्परागत अरु नए छन्दन के दरसन होय। 'सुनौ युधिष्ठिर' सीर्सक सौं ऐसौ लगै जैसें युधिष्ठिर कूँ कोऊ उपदेश दियौ होय। या सृजन में ऐसौ कहूँ नाँय। युधिष्ठिर तौ आम आदमी कौ प्रतीक है, जि वु आदमी है जो मेहनत करै अरु ईमानदारी सौं जीवन वितावै। वु तव तानूँ ईमानदारी अरु सत्यनिष्ठा कौ पालन करै जव लौं मुँड पै नाँय आय परै। सोलह कवित्त अरु एक सवैया की रचना में लोकतंत्रीय दुर्दसा कौ कच्चौं चिटठा खोल धरौ है। वर्तमान की ज्वलंत समस्या अरु कुत्सित वृत्तीन पै कस कै चोट करी है। हर जगह व्यंग्य के दर्सन होंय। एक वानगी देखौ--

देस तौ सुतंत्र भयौ, का जन कौ राज भयौ ?
नेता, अभिनेता, धर्म नेतन कौ राज है।
देस की कसमें खात, जमकै जे घूँस खात,
देस हित पै अघात, पोलपट्ट राज है।
अभिनेता देव बने, अभिनेत्री देवी वनी,
ऊँचे उपदेस तवऊ विगर्‌यौ समाज है।
मनमाने कृत्य करै, संस्कृत कूँ भ्रष्ट करै,
लोकई की चिंता नाँय, कैसौ लोकराज है।

श्री त्रिभुवन छन्दवद्ध रचनान के सग मुक्तछन्द के चतुर शिल्पी हैं। मुक्तछन्द में लय, गति अरु ध्वनि के पक्षधर रहे हैं। अल्हड़ वसंत पै एक कटाक्ष देखौ--

जे तूनै कहा कियौ
अल्हड़ वसंत
कैसी रंग भरी पिचकारी छिड़क दई
पुष्पन पै कलासन पै
जि कर दियौ सिगरौ निसर्ग हू वहुरंगी
मैं तौ देखतौई रह गयौ निस्तब्ध
पै जे का भयौ।
तू तौ अल्हड़ कौ अल्हड़ ई रह्‌यौ
पै मैं बूढ़ौ कौ बूढ़ौ।

या तरियाँ सौं श्री चतुर्वेदी नै लिखौ है थोरौ पर जि सिद्ध करौ है--गीत लिखै है मैंने थोरे कागद कम वरवाद किए हैं। श्री चतुर्वेदी नैं जि बात मानी है कै वे मूल में व्रजभाषा के कवि रहे पर व्रजभाषा के प्रकासन के अभाव में वे तटस्थ है गए। अव व्रजभाषा अकादमी की स्थापना सौ वे फिर व्रजभाषा की ओर झुके हैं। व्रज माधुरी की गोष्ठीन मे निरंतर नयौ सुना रहे हैं।

❐ डॉ. रामगोपाल दिनेश

'उपजहिं अनत, अनत छवि लहहीं' की उक्ति कूँ सार्थक करबे वारे डॉ. रामगोपाल दिनेश आगरा में सिंघावली ग्राम में 5 जुलाई 29 कूँ जन्मे। पं. कन्हैयालाल मिश्र आपके पिताश्री अरु माताजी कौ नाम है श्रीमती सीयादुलारी मिश्र। इनके घर में ब्रजभाषा बोली जावै ही यासौं घुट्टी में ही ब्रजभाषा कौ सुखद आस्वाद सहज रूप सौं मिल्यौ। तबई तौ सन् 1942 सौं ब्रजभाषा में ही रचना–कर्म प्रारम्भ करौ।

डॉ. रामगोपाल दिनेश बहुत दिनान तक भरतपुर एम.एस.जे. कालेज में अध्यापन करते रहे। भरतपुर में ही बिन्नैं खड़ी बोली में रचना करीं। मोय याद है स्व. मूलचन्द गुप्ता भरतपुर में पुस्तकन नैं छापौ करै हे। डॉ. साहब की कई किताब मूलचन्द गुप्ता नैं छापीं, जासौं डॉ. साहब कूँ प्रोत्साहन मिल्यौ, सारथी ग्रन्थ कौ प्रणयन मेरे विचार सौं भरतपुर में ही भयौ जाकूँ मूलचन्द जी नैं छापौ। सारथी महाकाव्य कूँ केन्द्रीय साहित्य अकादमी नैं पुरस्कृत करौ। याकी कथा कामायनी की पूरक है। डॉ. साहब की हिन्दी की कई पुस्तक पुरस्कृत भई हैं। 123 किताबन के प्रणेता डॉ. साहब की कई ग्रन्थ श्री राजेन्द्र जसोरिया राजस्थान प्रकासन जयपुर नैं छापे । 'पृथ्वीराज नाटक अरु उत्सर्ग' खंडकाव्य तो यूनीवर्सिटी में आजहू चल रहे हैं। राजस्थान प्रकासन सौं 'बदलती रेखाएं' उपन्यास, साहित्य का परिवेश और चेतना (छप रह्यौ है), शशिनाथ विनोद, साक्षी है सूर्य आदि प्रकासित हैं।

डॉ. दिनेश नैं भेंटवार्ता में डॉ. नंदवाना कूँ बतायौ कै ब्रजभाषा में बिन्नैं फुटकर रचना ही लिखीं। ब्रजलोक गीतन की समीक्षा हू लिखी। हाँ समीक्षा की भाषा खड़ी बोली रही। बिन्नैं अपनी हिन्दी अरु ब्रज की रचनान में जो कछु समाज कूँ सौंपौ है वाके बारे में लिखौ है– समाज में रहकैं गहरे अरु साँचे अनुभवन कूँ लैनौ फिर उनकूँ सहज बनाय कैं प्रस्तुत करबौ मेरी रचना प्रक्रिया कौ अंग है। जो लोग केवल कल्पना के आधार पै रचना करत हैं मैं उनमें ते नाँहूँ।

डॉ. दिनेश गद्य की रचनान में हूं सहजता के पक्षधर रहे है। बिनकौ माननौ है कै उपन्यास, निबन्ध, कहानी आदि में विसयवस्तु पहलैं सोचनी परै, पर याहू की कोऊ सीमा होय। नाटक में संवादन पै विसेस ध्यान दैबौ जरूरी है, बिनके चरित्रन कौ सहज विकास जरूरी होय। श्री दिनेश की सृजन यात्रा के पथ चिह्न और 'मेरी रचना प्रक्रिया' सौं आप या संकलन में बिनके कृतित्व के बारे में विस्तार सौं जान सकिंगे। गद्य रचनान में 'एकलिंगनाथ जू कौ मंदिर' अरु 'भाषा, लिपि अरु संस्कृति कौ भविष्य'' दो गद्य आलेख हू बानगी के रूप में दिए हैं जो डॉ. साहब की शैली

कौ चित्र प्रस्तुत करिंगे। '' भाषा, लिपि अरु संस्कृति कौं भविष्य'' लेख के एक अंश कूँ देखौ,'' आज तौ काहू के कानन पै जूँ नाहिं रैग रही। सब अपनी-अपनी स्वारथ की पूर्ति में लगि रहे हैं। जो चिनगारी भारत की संस्कृति के विसाल भवन में लगाई जाय रही है वाकी ओर अगर शुरू में ध्यान नहीं दियौ गयौ तौ सांस्कृतिक गुलामी कौ एक भयंकर इतिहास बनैगौ। भाषा भवन के अनुरूप मुहावरे युक्त असरदार हैं।'' भारतीय संस्कृति के संरच्छन के ताँई डॉ. दिनेश नै पुकार पुकार कै कही है कै विदेसीन के जाल सौ बचौ। चिनगारी ए मत लगन देऔ। डॉ. दिनेश कौ माननौ है सँभल गए तौ भली भला है नहीतौ बची खुची खट्टी छाछ तेऊ हाथ धोनौ परैगौ।

आऔ अब डॉ. साहब के काव्य पक्ष पै हू विचार करलैं। प्रारम्भ में कहौ गयौ है कै डॉ. दिनेश नैं ब्रजभाषा की कवितान सौ श्री गनेश करौ पर पीछैं खड़ी बोली की ओर अग्रसर है गए। ब्रजभाषा की रचनान में परम्परागत अरु मुक्त छन्दन मे दोनों तरह की रचना है। पुस्तक रूप मे ब्रजभाषा के तीन काव्य संग्रह तैयार हैं। विनमे एक है-दिनेश दोहावली है जामें शिव, दुर्गा गणपति सहित श्री राम कौ सुमरन करौ है-

शिव दुर्गा गणपति सहित, रमै हृदय श्री राम।
सीस जानकी चरन रज, मन में राधा स्याम॥
पवन पूत कौ वरद कर करै दुखनि कौ नास।
बीना वादिनि देहि नित, सास्वत ग्यान प्रकास॥

डॉ. साहब नै नए प्रतीकन के सहारे हू दोहा लिखे हैं। आधुनिक समस्यान पै लिखिबे कौ अंदाज देखौ-

बेटा हू का कर सकै, बिकौ सहर ये गाँव।
सन्नाटे सोए जहाँ, बोझिल करकै पाँव॥

धुँआ धूल पीकर जिएँ, कबलौं नीम रसाल।
रोगन कौ घर बन गए, कल जो थे चौपाल॥

युग के अनरूप लेखन में कवित, कुंडलियाँ, नवगीत आदि लिखे हैं। मुक्त छन्दन में पुरातन कथानक पै आधुनिक बोध देखवे जोग है-

एक बार लै चलौ
दम घोटि रही गैस
धुँआ

कानन कूँ फोरती
करकस धुनि
हत्यान सौं भरे अखवार
वलात्कार
हाँसिए पै इंसान
कान्हा!
शहर एक जंगल है
लै चलौ।
मोहि लै चलौ वृन्दावन।
करील की कुंजनि में सुननी है फेरि
तिहारी वाँसुरी
सीतल सुगंधित हवा सौं
भरनी है हर साँस।
राधा के नीम तरे
झूलनि के रागन तरे
झूलनि के रागन में
झूमनी है
कान्हा! मोहि
लै चल वृन्दावन

या मुक्त छन्द की भाषा हू भावन के अनुरूप है। डॉ. साहव नई पीढ़ी के ताँईं ऐसी रचनान सौं युगानुरूप लिखवे की प्रेरना देंते रहिंगे जि हमैं विसवास है।

☐ रत्नगर्भ तैलंग

या संकलन के तीसरे व्रजभाषा के ऐसे साहित्यकार हैं जिनके नाम मात्र सौं अकादमी गौरवान्वित है गई है। श्री कंठमणि शास्त्री के भांजे अरु प्रोफेसर कलानाथ शास्त्री के ससुर सौभाग्य सौं हमारी पकड़ में आ गए। जयपुर में हैवे वारी व्रजमाधुरी गोष्ठी में विनके व्रजभाषा के इक्का–दुक्का छन्द सुने। पर विनते ही पारखी, परख गए अरु श्री रत्नगर्भ तैलंग सौं अनुरोध कियौ। विन्नैं हमारौ अनुरोध स्वीकार करौ अरु कछू प्रसाद रूप में व्रजभाषा के छंद हमैं सौपे। ऐसे प्रवुद्ध साहित्यकार कौ जन्म जहानावाद (कानपुर) में भयौ। आपके पिता श्री शास्त्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलंग व्याकरणाचार्य हे। वे कर्मकांड प्रवीण हे। पौरौहित्य अरु पुरानन के अच्छे ज्ञाता हे। काव्य कला में निपुन हे। कविता लिखै हे। अपनी कवितान नैं रत्नगर्भ जी सौं कागज

पै सुलेख में उतरवाते। यासौ रत्नगर्भ जी कूँ लय, गति, विराम आदि कौ अच्छौ ज्ञान है गयौ। आपकी माताजी श्रीमती कालिंद्री देवी दतिया नरेश के राजगुरु श्री बालकृष्ण शास्त्री की एक मात्र कन्या ही। वे हू तेलगू भाषा मे निष्णात हीं। दोनोंन कौ रत्नगर्भजी कूँ अच्छौ लाड़-प्यार मिलौ। नाना-नानी के यहाँ हू अपार दुलार मिलौ।

बड़े हैवे पै आपकौ ब्याह सन् 30 मे शांताबाई सौ भयौ। इनसौं पहली संतान माधुरी शास्त्री है जो कलानाथ शास्त्रीजी कूँ ब्याही है। जि संयोग की बात है कै श्री रत्नगर्भ सपत्नीक माधुरी शास्त्री के यहाँ अलग सौं सानंद ब्रजभाषा साहित्य सृजन मे लीन है कैं रह रहे हैं।

श्रीमती माधुरी शास्त्री सौं बढकें श्री रत्नगर्भ के बारे में और कौन जान सकै। या संकलन में विन्नैं रत्नगर्भ जी की अभिरुचीन कौ अच्छौ परिचय दियौ है। विन्नै लिखौ है साँझी कला में दक्षता, ठाकुरजी के मंदिरन में देव विग्रहन की सिंगार झाँकी सजाबौ, प्राचीन सिक्कान के संग्रह करबौ, तास, टिकट, माचिस, प्राचीन सैली के चित्रन कौ संग्रह करबौ, वेस्ट मैटिरियल सौं विभिन्न आकृति अरु वस्तु बनाबौ जैसे सौक है। राष्ट्रीय विचारधारा के रत्नगर्भजी के अनेक संस्मरण माधुरीजी के पास है। एकाध या संकलन में दिए है जो लोमहर्सक है।

माधुरी शास्त्री नै जो अछूते प्रसंग दिए हैं बिनकौ उल्लेख करनौ जरूरी है- श्री रत्नगर्भ जी नैं अपने पिता श्री लक्ष्मीकिशोर तैलंग सौ संस्कृत ,व्याकरण, काव्य और ब्रज साहित्य की सिच्छा तो प्राप्त करी ही हती, ता पाछैं वे राजस्थान में काँकरोली में अपने नाना पं. बालशास्त्री अरु मामा पं. कंठमणि शास्त्री सौं संस्कृत साहित्य अरु ब्रजभाषा के काव्य कौ अध्ययन करवे आए। रत्नगर्भ जी नै दर्शन अरु ब्रज कविता की सिच्छा प्राप्त करी। यहीं पै ब्रजभाषा की कविता करबे लगे, जबकै बिनकी मातृभाषा अवधी हती।

ऐसे श्री रत्नगर्भ जी सौ भेटवार्ता जब मैनै करी तौ विन्नै बतायौ कै हमारे यहाँ तौ आपकी कविता के कैन्द्र बिन्दु आजहू श्री कृष्ण हैं। हां हास्य व्यंग्य की ओर औैर रूझान भयौ। तमाकू-गुटखा खइवेवारेन पै एक कटाक्ष देखौ-

महक आनंद कोऊ लेत रहे वेर-वेर,
कोऊ भक्त हाथ माँहि सुंदर सौ गुटखौ है।
कोऊ भयौ सुरती कौ, कोऊ भयौ जर्दाभक्त,
कोऊ भयौ त्रिशंकुवत अम्बर मे लटका है।
कोऊ भक्त हाथरसी, कोऊ है वनारसी कौ,

कोऊ तौ सुजन मैनपुरी माँहि अटका है।
कोऊ तौ तमाल पत्र लिए चूर्णयुक्त 'देर'
तरल सतुष्टि हेतु कोऊ मुख मटका है।

आपकी सिंगार परक रचनान में आपके कुसल अभिव्यक्ति अत्यधिक रमणीक बन पड़ी है।

कण कण मृत्तिका को लेइ कोऊ कुंभकार
जल सौं मिलाइ करि पिंड सौ बनायौ है॥
चक्र पै धरिकैं घुमाइ वाये बेर-बेर
काटि दियौ तंतु पौन सेवन करायौ है॥
सप्त दिन अनल प्रचंड में पकाइ 'देर'
रंग सौं रँग्यौ है घट रूप में सजायौ है॥
श्रम कौ सफल तब जानौ कुंभकार बन्धु
सुन्दरी वधू नैं ताहि कटि सौं लगायौ है ॥1॥

उमड़ि-घुमड़ि घन गरज-गरज घेर,
फेर-फेर आवत अकास उड़-उड़ कैं।
निसि अँधियारी कारी बिजुरी चमक जोर,
मोर की कुहुक सुनि मोर मन कुहुकैं।
पवन झकौर सह मदन मरोर रह्यौ,
करे झकझोर जोर पौर-पौर फड़कैं।
बिन बरसात मोहि कछु ना सुहात 'देर'
यह बरसात साज लाई गढ़-गढ़ कैं ॥ 3॥

समस्यापूर्तीन में हू आपकी अच्छी खासी रुचि है। ब्रजमाधुरी गोष्ठी में अपनी रचनान सौं सबन कूँ आनंदित करै हैं। पुरखा पंगत सौं ब्रजभाषा में साहित्य सृजन हौतौ चलौ आयौ है। बिन्नैं अपने एक पूर्वजन दत्तात्रेय गोस्वामी कौ दोहा सुनायौ जो या तरियाँ है-

दही-दही, घर-घर दही, दही-दही सु पुकार।
हाय दही, हा-हा दही, आए कृष्णमुरार॥

श्री तैलंग नैं ब्रजभाष में अपने पिता श्री सौं कवित्त, सवैया, दोहा, बारहमासो (विरहनी जगतमासी) लावनी, कजरी, ठुमरी आदि सुन-सुन कैं काव्य अरु संगीत कौ अच्छौ ज्ञान प्राप्त कर लियौ। भक्ति भाव विरासत में और मिले। याही सौं भक्ति

प्रधान रचनान के अकुर अंकुरित हौंते रहे। अवधी के हौंते भए ब्रजभाषा की ओर रुझान ब्रजभाषा के कवि पं. श्याम बिहारी, हरिजू प्रणयेश सनेही, हितैषी, शंकर त्रिशूल जैसे साहित्यकारन के सम्पर्क में आए। आपकी प्रारम्भिक रचना की एक वानगी देखौ–

पिय के रस पीयूष कौ, पिय राधा सुधि हीन।
ऐसौ अचरज देखिकै, कृष्ण भए अति दीन
श्री राधे मुख कमल कौ, लखें सु चन्द्र चकोर
बा छवि राधे पदन लखि, विहँसे नद किशोर

❒ आनंदीलाल आनंद

या संकलन के चौथे कवि श्री आनंदीलाल आनंद मस्तमौला स्वभाव के जन्मजात कवि हैं। जन–जन के प्रिय श्री आनंद कौ जीवन सदा संकटन सौ गुजरौ है याही सौ तप–तप कै इनकौ तन–मन कुंदन है गयौ है। रोजी–रोटी की खातिर न जानैं कहाँ–कहाँ भटकनौ परौ पर कवहु जीवन में हार नही मानी। अँधियारे कूँ पीछैं जीवन मे रौसनी लाए हैं। साहित्यिक, साँस्कृतिक, सामाजिक क्रिया कलापन में जी जान सौं जुटे रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन मे तौ जेल की हू हवा खाई पर का मजाल है जो हिम्मत हारे हौं। तबई तौ आज हू नर्वदेश्वर महादेव पै पूरौ काँकरोली इनके चरनन में सीस नवावै।

आपनैं मेवाड़ की ब्रजभूमि काँकरोली अरु नाथद्वारा मे भक्तिमय वातावरण मे रहकै भक्तिभाव पायौ। कवि सुदाम सौ छन्द रचना विधान सीखौ। पर, 12 बरस की उमर सौं ही अन्त्याक्षरी अरु तुकवदी करवे लग गए। जि सौक वढतौ गयौ। आपके मामाजी श्री गोपीलाल झापटिया नै घनश्याम प्यारे के छन्द सुनाय–सुनाय कै बिनकी जिज्ञासा वढाई। श्री अनोखा, श्री मधु कौ सहयोग पायकैं आपकौ क्षेत्र और विस्तृत भयौ।

ऐसे सूधे साधे सरल चित्तवृत्ति वारे श्री आनंद कौ जनम नाथद्वारा मे भयौ। पिताश्री मोड़ीलाल गौरवा अरु माता श्री चन्दाबाई हतीं। आपकी गृहणी कौ नाम है सुंदरबाई। आपनै प्राथमिक सिच्छा ही पाई पर सत्संग अरु देसाटन सौ अच्छौ खासौ अनुभव वटौरौ है। आपनैं श्री नाथजी के मंदिर मे सेवा करी। प्राईवेट बस कन्ट्रोलर रहे। दुकानदारी हू करी। पर अब आध्यात्यिक जीवन बिताते भए साहित्य सृजन में लीन हैं। हिन्दी, ब्रज अरु राजस्थान मे फुटकर छन्द लिखे है। कछु ब्रजभाषा के छन्द साहित्य मंडल नाथद्वारा अरु राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका मे छपे आपके भक्ति प्रधान छन्दन में दो छन्द देखबे जोग है।

कोऊ तौ सुजन मैनपुरी माँहि अटका है।
कोऊ तौ तमाल पत्र लिए चूर्णयुक्त'देर'
तरल सतुष्टि हेतु कोऊ मुख मटका है।

आपकी सिंगार परक रचनान में आपके कुसल अभिव्यक्ति अत्यधिक रमणीक वन पड़ी है।

कण कण मृत्तिका को लेइ कोऊ कुंभकार
जल सौं मिलाइ करि पिंड सौ बनायौ है॥
चक्र पै धरिकैं घुमाइ वाये बेर-बेर
काटि दियौ तंतु पौन सेवन करायौ है॥
सप्त दिन अनल प्रचंड में पकाइ 'देर'
रंग सौं रँग्यौ है घट रूप में सजायौ है॥
श्रम कौ सफल तब जानौ कुंभकार बन्धु
सुन्दरी वधू नैं ताहि कटि सौं लगायौ है ॥1॥

उमड़ि-घुमड़ि घन गरज-गरज घोर,
फेर-फेर आवत अकास उड़-उड़ कैं।
निसि अँधियारी कारी बिजुरी चमक जोर,
मोर की कुहुक सुनि मोर मन कुहुकैं।
पवन झकौर सह मदन मरोर रह्यौ,
करे झकझोर जोर पौर-पौर फड़कैं।
विन बरसात मोहि कछु ना सुहात 'देर'
यह वरसात साज लाई गढ़-गढ़ कैं ॥ 3॥

समस्यापूर्तीन में हू आपकी अच्छी खासी रुचि है। ब्रजमाधुरी गोष्ठी में अपनी रचनान सौं सबन कूँ आनंदित करै हैं। पुरखा पंगत सौं ब्रजभाषा में साहित्य सृजन हौंतौ चलौ आयौ है। विन्नैं अपने एक पूर्वजन दत्तात्रेय गोस्वामी कौ दोहा सुनायौ जो या तरियाँ है-

दही-दही, घर-घर दही,दही-दही सु पुकार।
हाय दही, हा-हा दही, आए कृष्णमुरार॥

श्री तैलंग नै ब्रजभाष में अपने पिता श्री सौं कवित्त, सवैया, दोहा, बारहमासो (विरहनी जगतमासी) लावनी, कजरी, ठुमरी आदि सुन-सुन कैं काव्य अरु संगीत कौ अच्छौ ज्ञान प्राप्त कर लियौ। भक्ति भाव विरासत में और मिले। याही सौं भक्ति

प्रधान रचनान के अंकुर अंकुरित हौते रहे। अवधी के हौते भए व्रजभाषा की ओर रुझान व्रजभाषा के कवि पं. श्याम विहारी, हरिजू प्रणयेश सनेही, हितैषी, शंकर त्रिशूल जैसे साहित्यकारन के सम्पर्क मे आए। आपकी प्रारम्भिक रचना की एक वानगी देखौ–

पिय के रस पीयूप कौ, पिय राधा सुधि हीन।
ऐसौ अचरज देखिकै, कृष्ण भए अति दीन
श्री राधे मुख कमल कौ, लखे सु चन्द्र चकोर
वा छवि राधे पदन लखि, विहँसे नंद किशोर

❒ आनंदीलाल आनंद

या संकलन के चौथे कवि श्री आनंदीलाल आनंद मस्तमौला स्वभाव के जन्मजात कवि हैं। जन–जन के प्रिय श्री आनंद कौ जीवन सदा संकटन सौ गुजरौ है याही सौ तप–तप कै इनकौ तन–मन कुंदन है गयौ है। रोजी–रोटी की खातिर न जानैं कहाँ–कहाँ भटकनौ परी पर कवहु जीवन में हार नही मानी। अँधियारे कूँ पीर्कैं जीवन में रौसनी लाए हैं। साहित्यिक, साँस्कृतिक, सामाजिक क्रिया कलापन मे जी जान सौं जुटे रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन मे तौ जेल की हू हवा खाई पर का मजाल है जो हिम्मत हारे हौं। तवई तौ आज हू नर्वदेश्वर महादेव पै पूरौ काँकरोली इनके चरनन मे सीस नबावै।

आपनैं मेवाड़ की व्रजभूमि काँकरोली अरु नाथद्वारा मे भक्तिमय वातावरण में रहकैं भक्तिभाव पायौ। कवि सुदाम सौं छन्द रचना विधान सीखौ। पर, 12 वरस की उमर सौं ही अन्त्याक्षरी अरु तुकवदी करवे लग गए। जि सौक वढ़तौ गयौ। आपके मामाजी श्री गोपीलाल झापटिया नै घनश्याम प्यारे के छन्द सुनाय–सुनाय कै विनकी जिज्ञासा वढ़ाई। श्री अनोखा, श्री मधु कौ सहयोग पायकैं आपकौ क्षेत्र और विस्तृत भयौ।

ऐसे सूधे साधे सरल चित्तवृत्ति वारे श्री आनंद कौ जनम नाथद्वारा मे भयौ। पिताश्री मोड़ीलाल गौरवा अरु माता श्री चन्दावाई हतीं। आपकी गृहणी कौ नाम है सुंदरवाई। आपनै प्राथमिक सिच्छा ही पाई पर सत्संग अरु देसाटन सौ अच्छौ खासौ अनुभव वटौरौ है। आपनै श्री नाथजी के मदिर में सेवा करी। प्राईवेट वस कन्ट्रोलर रहे। दुकानदारी हू करी। पर अव आध्यात्यिक जीवन विताते भए साहित्य सृजन में लीन हैं। हिन्दी, व्रज अरु राजस्थान मे फुटकर छन्द लिखे है। कछु व्रजभापा के छन्द साहित्य मंडल नाथद्वारा अरु राजस्थान व्रजभापा अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका में छपे आपके भक्ति प्रधान छन्दन में दो छन्द देखवे जोग है।

कलिकाल प्रभाव वढ्यौ जग में,
अव भारती मैया यहाँ अटकी।
व्रज में गिरिराज उठायौ प्रभू ,
थन पूतना चूसि धरा पटकी।
इंद्र कौ मान हरौ हरि नैं अरु,
वाँह जो कंस की दै झटकी।
अँगरेजन नाव डुवावन कूँ
अइयो प्रभु ये मछरी अटकी॥

कालिन्दी कूल कदम्ब की छाँह में,
सीतल मंद-सुगन्ध वयारी।
गोप वधू तहँ घेर लई विच,
मोहन लाड़ली राधिका प्यारी।
हास विलास सौं मोद भरी,
मद होस भई सव रूप निहारी।
या छवि सौं मन मन्दिर में,
विहरैं नित राधिका संग विहारी॥

याके अलावा आम आदमी की पीड़ा कूँ आपनौ समझौ है। महँगाई में आम आदमी पिस रहयौ है। दूसरी और कर्णधार मौज मस्ती में है। वर्ग-भेद खड़े है गए हैं।

नेतान की वात अव सुनवे ते सव कतरावैं वे अच्छे नेतान की कदर करैं पर मुख में राम वगल में छुरी रखवे वारेन कूँ दूर सौ ही डंडौत करैं। दो छन्द वानगी के तौर पै दिए जा रहे हैं।

विजली न मिलै, नहिं पानी जुरै,
कठिनाई है गैस जुटावन की।
महँगाई सौं त्रस्त भई जनता,
भरमार भई है सिंगारन की।
उद्घाटन, भासन, चाटन, में ,
नित भीड़ वढ़ी मेहमानन की।
गुमराह करैं नहिं नैंकु डरैं,
अव कौन सुनैं वतियाँ विनकी॥

पापी पुराने मिले जुर बैठिकै,
गाल बजावैं करैं, धुन की।
कुल वेद पुरान विसार दिए,
नहिं सीख सुहावै विनैं गुन की।
गढ़िकै नई बातन कूँ नित ही,
नित राह बतावत नरकन की।
बचियौ इन ढौंगिन सौं आनँद,
अब कौन सुनैं बतियाँ विनकी॥

जो जनता की नाँय सुनै विनकी कौन सुनै। ऐसे चेतावनी भरे छन्दन सौं कविता कूँ तरवार की तरियाँ काम में लैवे वारे निर्भिक सुरन में जन नेतान कूँ डका की चोट समझाय रहे हैं। ऐसी खरी–खरी कहवै वारौ वुही है सकै जाकूँ अपनी मातृ भूमि सौं प्यार होय । जो देस के ताँई मरौ,पचौ,खपौ है लड़ौ है, जेल की हवा खाई है। सुतंत्रता संग्राम में लोटा, सोटा अरु लँगोटा सौ तैयार रहे है। हमारी प्रार्थना है श्री आनद जी सतायु हौ। स्वस्थ रहै। समाज की सेवा करै। ब्रजभापा साहित्य कौ नित नयौ सृजन करैं।

ब्रजभापा साहित्यकारन के चार सुमनन के चौदहवे गुलदस्ता कूँ भेंट करते भए जि कहनौ चाहूँगौ कै ब्रजभापा पद्य साहित्य के सृजन के संग–संग हम ब्रजभापा के गद्य सृजन पै विसेस ध्यान दैं। ब्रजभापा पद्य मे परम्परागत छन्दन कूँ न भुलाय दैं। जि हमारी धरोहर है यामें हमारी संस्कृति के ताने–वाने वुने भए हैं। दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, कुंडलियाँ,रोला, उल्लाला, छप्पय आदि छन्दन में अपार साहित्य भरौ परौ है। जि हू जरूरी है कै ब्रजभापा के पद्य के अतीत साहित्य कौ अध्ययन करै। पढंत की प्रतियोगिता आयोजित करैं। विगत के रस सौ नव अंकुरन कूँ अभिसिंचित करैं। संग में नवीन मुक्त छंद सैली कूँ स्वीकार करै। खडी वोली में जो सुतंत्र रूप सौ लिख रहे है, जरूर लिखै हमै कोऊ एतराज नाएँ पर खडी वोली में लिख कैं ब्रजभापा में वदल कै प्रस्तुत करैं जि समीचीन नाँहै। यासौं आधौ तीतर, आधी बटेर साफ झलकै। अरहर की टट्टी पै गुजराती तारौ अलगई दिखाई दे। सौकीन वुढ़िया बनकैं चटाई कौ लहँगा पहरवे में तुक नाँहै। दूसरी और गद्य की आधुनिक विधान मे सृजन सौ जुड़ै। कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि विधान के संग संस्मरण, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, डायरी, चिंतन अरु निदिध्यासन वहुत काम आवैगौ 'करत करत अभ्यास सौ जड़मति होत सुजान' कूँ न भूलै। दिल दिमाग अपने खुले रखैं। युग के अनुरूप लिखवे के ताँई अपने एक सद्य गीत कूँ दोहरानौ चाहूँगौ–

खोलैं–खोलैं बंद किवार, घरन की खिड़की खोलै रे।
अपनी –अपनी ढपली, अपनी–अपनी राग सुनाय।
बने मेंढ़की कुआँ के दिनरात रहे टर्राय।
तौलें–तौलें अपने हाथ, तराजु खुद कूँ तोलैं रे। खोलै.........

लोग कहाँ ते कहाँ पहुँच गए, मन में जोस खरोस।
हम रह गए फिसड्डी, नौ दिन चले अढ़ाई कोस।
डोलैं–डोलैं पंख पसार, गगन में अब तौ डोलै रे । खोलैं......
तू–तू–मैं–मैं करकैं, हमनैं मोल लई तकरार।
लड़बे–भिड़बे में ही अपनी हुलिया लियौ बिगार।
बोलैं–बोलैं मीठे बोल,प्यार की बोली बोलैं रे ॥ खोलैं.........

चारों ओर उजारौ फैलौ, खोलैं रोसनदान।
जगर–मगर है जावै मनुआ, गावैं मंगलगान।
घोलैं–घोलैं रंग हजार, रंग सतरंगी घोलै रे ......खोलैं ....

अंत में विनत भाव सौं निवेदन है कै जि अंक श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी, श्री बिहारीशरण पारीक, श्री नाथूलाल महावर और फतहलाल गुर्जर के सहयोग सौं संभव है सकौ है। विनके प्रति आभार। जिन चारों साहित्यकारन नैं अपनी सामग्री संजोय कैं हमैं सौंपी है विनके ताँई आभार ओछौ परैगौ। विनके श्री चरनन में विनकी की सामग्री सौंपते भए जि याद आय रह्यौ है–

– मेरा मुझमें कछु नहीं जो कछु है सो तोर

गोपालप्रसाद मुद्‌गल

डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी
161, विद्युत नगर-बी
अजमेर रोड, जयपुर

मूल ब्रजभाषा भाषी, बल्लभ कुली प्रवीन,
गुनन के गाहक है, सुधी रिझवार है।
रचौ, " सुनौ युधिष्ठिर", वहु अनमोल ग्रन्थ,
याही बलबूते भए, प्यारे कंठहार हैं।
रीति नीति धरम धुरीन में असरदार,
स्वाभिमानी जनन में साँचे सरदार है।
सरल सनेही सूधे साँचे से सुभाववारे,
त्रिभुवन काव्यकार, तीखे व्यंगकार हैं

परिचै

नाम	:	डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी
जन्म स्थान	:	कोटा
जन्म तिथि	:	गणेश चतुर्थी सं 1985 तदनुसार 18 सि. 1928
पिता कौ नाम	:	पं. मदन मोहन जी चतुर्वेदी
माता कौ नाम	:	श्रीमती गुनवती चतुर्वेदी
व्यवसाय	:	निवर्तमान-प्रिंसिपल, गवर्नमेंट आर्ट्स कालेज अलवर
प्रकाशन	:	ब्रजभाषा-ब्रजशतदल मांहि कविताएं, लेख एवं समीक्षाएं राजस्थान पत्रिका मांहि कविताएं
अप्रकाशित ग्रंथ	:	सुनौ युधिष्ठिर-कविता संग्रह
हिन्दी प्रकाशन	:	ललित निबंध एवं व्यंग्य 1.क्षमा कीजिए 2.ब्रह्मांड का 3. सब देखते हैं नाथ
कविता संग्रह	:	1.सुरभि के चरण 2.अर्पित क्षण, कल्पना,ज्ञानोदय, माध्यम, सरस्वती, वासंती, मधुमती, सप्तसिंधु आदि में कविता, व्यंग्य अरु कहानी आदि कौ प्रकासन।

मेरी रचना प्रक्रिया

डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी

पच्छिम माँहि विकसित साहित्य के मूल्यांकन की पद्धति सौं प्रभावित हैकै, आजकल साहित्यकार सौ वाकी रचना प्रक्रिया पूछी जाइबे लगी है। वो काहे कूँ लिखै, कैसें लिखै, *का वाकौ जीवन दर्सन है, कासौं प्रतिबद्धता है, कौनसी तिथि कूँ रचना* करी आदि। जे सिगरे प्रश्न ऐसे हतैं, जिनकौ क्रमवद्ध उत्तर दैनौ मेरे जैसे साधारण से साहित्यकार कूँ कठिन प्रतीत होय। वे साहित्यकार जिन्नैं साहित्य रचना मेंई जीवन खपाय दियौ, सचेष्ट हैकै रचना कर्म कियौ, तिनकूँ इन प्रश्नन कौ उत्तर दैनौ सरल लगैगौ, पर मैं तौ साहित्य सृजन के अतिरिक्त अन्य विषयन के अध्ययन अरु अध्यापन मेंऊ लग्यौ रहौ, जा काजैं इन प्रश्नन पै विचार करवे कौ अवसरऊ नाँय मिलौ। पिछले छह दसकन सौं लिख रह्यौ हूँ। काव्य सृजन मेरे ताँई भावुकता कौ अतिरेक प्रवाह ही रह्यौ। एक लहर सी आई,कछु अंतर में बनौ, अरु कविता निसृत है गई। सचेष्ट प्रयत्न करकै साँचे में ढली कविता मोते कबहूँ नाँय लिखी गई। न काऊ सौ प्रतिवद्धता रही। परि अंतर में जे भावना जरूर वनी रही कै सामाजिक अरु साहित्यिक मर्यादा नाँय टूटै। जहाँ लौं है सकै कविता सब कर हित वारी रहै। कवि सम्मेलन में गाइबे कौ, या छपास की खाज मिटाइबे कौ आग्रह नाँय रह्यौ। पर व्यंग्य अरु इतर गद्य लेखन में अंतर कौ अध्यापक बलवान रह्यौ, लेखन में समानोन्मुखता रही। मात्र कलात्मक लिखवे अरु शिल्पगत चमत्कार दिखाइबे सौं बचतौ रह्यौ। जहाँ तक है सकौ दुरूह लेखन ते बचौ। जे अवश्य है, थोरौ लिखौ, परि प्रकासन खूब भयौ। हिंदी की रचना कल्पना,ज्ञानोदय, माध्यम, सरस्वती, मधुमती आदि में प्रकाशित भईं। ब्रज रचनान कौ भरतपुर, बांदीकुई के कवि सम्मेलन अरु ब्रजभाषा की साहित्यिक

पत्रिकान की कमी के कारन प्रकाशन नाँय मिलौ। राजस्थान पत्रिका नै कछु कविता अवश्य प्रकाशित करीं। सृजन जब भयौ ताकी तिथियन कौ कोई ब्यौरा नाँय रखौ।

काव्य रचना के संस्कार प्रत्येक कवि में जन्म सौंई होंय पर परिस्थितीन कौऊ वापै प्रभाव अवस्य परै। हमारे घर में पुष्टिमार्गीय विचारधारा कौ प्राधान्य हौ। प्रातः काल सौं ही दादी सूरदास, परमानन्द दास जी आदि के पद गावती। मैया ऊ तुलसीदास जी के 'जागसी रघुनाथ कँवर' पद गायकैं बालकन कूँ जगायबे कौ प्रयत्न करती। दिन में मैया प्रेम सागर की कथाए सुनावती जासौं भक्ति अरु काव्य संस्कार तौ बचपन तेई पनप गए। बारां हाईस्कूल में पढ़तौ, तहाँ बसन्त पंचमी के उत्सव पै कविता प्रतियोगिता होती। तामें पांचमी कक्षा में मैनें हाईस्कूल में दूसरौ पुरस्कार जीतौ। विद्ववर सियाराम सक्सैना जी बिन दिनाँन उच्च कक्षान में पढ़ते। वे एक 'मार्तन्ड' नाम की हस्तलिखित पत्रिका निकारते। ताऊ में कविता लिखीं। फिर कोटा में सातवीं कक्षा में पं. ब्रजबल्लभ जी चतुर्वेदी हमारे अध्यापक हे। जिन्नैं पतझर परायौ ते समस्या पूर्ति दैकें लिखबे कूँ कह्यौ त्ता दिन ब्रजभाषा की प्रथम रचना करी। तबसौं बराबर लिखतौ गयौ। कालेज में लेक्चरार है जाइबे के बाद बाँदीकुई अरु भरतपुर में बड़े-बड़े दिग्गज कवीन ते विनकी रचना सुनबे अरु उनते सीखबे कौ औसर मिलौ, पर सम्पर्क विद्ववर स्वर्गीय रामानन्द तिवारी जी सौं ही रह्यौ। विनकी विद्वता अरु सरलता सौं मैं सदा प्रभावित रह्यौ पिछले कछू वर्षन सौं, ब्रजभाषा अकादमी के सम्पर्क में आयौ गद्य लिखबे कौ औसर मिलौ। जयपुर में गुरु कमलाकरजी सौं पिछले चालीस बरसन ते सम्पर्क हौ, जा कारण बिनकौ 'उद्धव शतक' विनके श्रीमुख सौं सुनिबे अरु वापै समीक्षा लिखबे कौ औसर मिलौ। कवि हरनाथ जी की कवितान की समीक्षा करी अरु कविता लिखत लिखत समीक्षा कार्य हु करबे लगौ।

जे जरूर है कै अन्य विषैन के अध्ययन में संलग्न हैबे के कारन, प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन नाँय है सकौ। दूसरौ मेरौ स्वभाव ज्यादा पढ़नौ अरु कम लिखबे कौ है। मेरे विद्यार्थी जीवन में देश में स्वतंत्रता संग्राम चल रह्यौ हौ। पढ़वे की, आगैं बढ़वे की लगन सबई में ही। दसवीं कक्षा पास करते करते मैनें देवकीनंदन खत्री, प्रेमचंद, शरतचंद्र, रविन्द्र नाथ ठाकुर के उपन्यास कहानी पढ़ लिये हते। हिन्दी में हू महादेवी, पंत प्रसाद, निराला, विख्यात महादेवी जी की कविता पुस्तक 'मिरजा' तौ मोय पुरस्कार में मिली। विन दिनाँ मोय पंत जी की पल्लविनी अरु प्रसाद जी के नाटक बहुत प्रिय हे। तिनकौऊ मोपै प्रभाव परौ। बाद में डिकिन्स , रस्किन, मौम,

ड्यूमा आदि के ग्रंथ पढ़े। अनेक निबन्धकार जैसे गार्डीनर आदि पढ़े, सबकूँ पढ़वे सौं दृष्टि खुली। कामू के आउटसाइडर उपन्यास की शिल्प नै चमत्कृत कियौ। अलवर मे मैंने दीर्घकाल तक अध्ययन कियौ। तऊ कछु प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकारन की उपेक्षा अरु स्पर्धा के कारन, नई कविता अरु समकालीन कविता की समझ मिली जो बाद में मेरी व्रज कविता अरु सृजन मेंऊ परिलक्षित है रई है।

161 विद्युत नगर बी,
अजमेर रोड,
जयपुर 302021

■

समीक्षा

- श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी

" सुनौ युधिष्ठिर" त्रिभुवन जू की नई पहिचान

'सुनौ युधिष्ठिर' त्रिभुवन जू की एक मात्र व्रजभाषा की काव्य संकलन है जामैं नये पुराने छंदन के दर्सन होवैं। परम्परा अरु आधुनिक बोध के हु नमूना जामैं दिखें। संकलन कौ 'सुनौ युधिष्ठिर' शीर्षक वताल है कै जामैं चेतावनी दई गई होयगी। जी युधिष्ठर आज कौ सामान्य व्यक्ति है। त्रिभुवन जू नैं संकलन की विशद भूमिका अपनी वात शीर्षक ते कही है। वे लिखत हैं-

'यामैं युधिष्ठिर आज कौ सामान्य नागरिक है, जो परिश्रम अरु ईमानदारी सौं जीविका कमावै, नीति नियम सौं रहै जो तव तानूँ मूँड पै नाँय आय परै झूठ नाँय वोलै, नरोवा कुंजरोवा तौ कहै, पै जव तानूँ आवश्यक नाँय होय, तव तानूँ अनीति ते वचै। वाके उद्वोधन सौं देस की दुरदसा कूँ या लंवी रचना में वरनन कियौ है।

सोलह कवित्तन अरु एक सवैया की जो लम्बी रचना आज की लोकतंत्रीय दुर्दसा कौ सीधौ चिट्ठा हतै। फरक इतेक ही है कै तथाकथित प्रगतिवादी, साम्यवादी वर्ग संघर्ष के हामी आम आदमी के शोपण उत्पीड़न कूँ वखान कैं घृणा के वीज वोवे कौ जतन करें, त्रिभुवन जू महाभारत के धर्मराज युधिष्ठिर कूँ प्रतीक वनावै हैं। जी विनकी संस्कृति के प्रति गहरी आस्था कौ नमूना है अरु वर्तमान की ज्वलंत समस्यान, कुत्सित वृत्तीन पै करारौ प्रहार है, कै संवेदनशील व्यक्ति भीतर लौं झनझना उठै है। जी रचना त्रिभुवन जू के खड़ी वोली हिन्दी के गद्य अरु पद्य व्यंग्न सौं कहूँ अधिक तीखी अरु प्रभावी है अरु व्रजभाषा कूँ व्यंग्य विधा सौं सम्पन्न करै है। एक नमूना पढ़ें

देस तौ सुतंत्र भयौ का जन कौ राजभयौ
नेता अभिनेता धर्म नेतन कौ राज है।
देस की कसमें खात जमकैं जे घूस खात,
देस हित पै अघात पोल पट्ट राज है॥
अभिनेता देव बने,अभिनेत्री देवी,
ऊँचे उपदेस तौऊ बिगर्यौ समाज है।
मनमाने कृत्य करें संस्कृति कूँ भ्रष्ट करें,
लोकई की चिंता नॉय, कैसौ लोक राज है॥

'सुनौ युधिष्ठिर' पिंगल रस छंद नवगीत अरु आह्लादित कौ ऐसौ गुलदस्ता है जामें शव्द रूप, रस अरु गंध की महक पाठकन कूँ आल्हादित, प्रेरित उत्तेजित कर सकै है, जा संकलन मॉहि कुल 119 दोहा–सोरठा, 46 कवित्त, 9 सवैया, 16 वरवै अरु 8 छंद मुक्त रचनाएं, 2गीत अरु 4कुंडलिया हतैं।

छंदानुसार भावन की अभिव्यंजना कवि की गहरी सोच, अनुभूति अरु प्रस्तुति कौ ऐसौ तानौ–वानौ है कै संख्या में कम होत भये भी श्रेष्ठ काव्य की श्रेणी में आ सकै है विनय कौ जी मनहरण हू देखें

सृष्टि अरंभ में बोधपद्म विकसति भयौ
तोहि श्वेत पद्म पै, शारदा विराज रही।

एक कर गीत,वीन,एक कर वेद ज्ञान,
अक्षरी शक्ति मानस हंस पै राज रही॥

श्वेत वदन,श्वेत वसन औ श्वेत शांत नयन,
श्वेत चंद्रिका सी तिय पै साज रही

ज्ञेय अज्ञेय अरु सकल त्रिभवन जन,
वाणी तौ तंत्री की तान सौं निवाज रही।

यामें वे काव्य सृजन की परम्परा कूँ अनूठे रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं अरु एक भक्तकवि जैसे लगें। जा संकलन माँहि 'याचना' शीर्षक सौं त्रिभुवन जू ईश्वर सौं सद्‌गुन दैवे की याचना कर रहे हैं वे नीची संगति, परधन, पराई धी, दुष्ट वचनन, मानहीन अरु खोट सूँ कमाई सौं बचिवे की गुहार करत हैं वहीं कवि वन भड़ैती न करनी परै भूल कैंऊ ओछौ अहसान कबहुँ नाँहि परै लैवौ कहकें सब कछु कह गये हैं अरु सहज संत वृत्ति कौ परिचय दै रहे हैं।

संकलन माँहि जिन शीर्षकन सौं रचना वर्गीकृत करी गई है वू है दर्शन, दुहाई है, सुनौ युधिष्ठिर, कवि अरु समीक्षक, वसंत होरी, हेमंत, नौकरी, पत्नी कथा, बस की सवारी, मच्छर महिमा, चिरकुमारी, घूँघट वारी,(दोहा) दोहा कुँज माँहि प्रेम वीथि, जीवन दरपन, वीथि दरसन वीथि अरु वीर के लक्षण अरु प्रवृत्तीन कौ सजीव चित्रण भयौ! कहूँ कबीर कहूँ 'सुनौ युधिष्ठिर' संकलन में 'अपनी बात' कहकें त्रिभुवन जू नैं श्रेष्ठ गद्य कौ नमूनौ प्रस्तुत कर्‌यौ है। बाई तरियाँ सृजन के विभिन्न पहलून अरु सामाजिक आर्थिक, राजनीति,विद्रूपताओं अरु लेखन माँहि प्रचलित अनेक वादन पै हू कलम चलाई है। ब्रज काव्य पै परे युग के प्रभाव कूँ भी इंगित करिकें सोच अरु समीक्षा के नये आयाम खोले हैं। बिन्नें पिंगल शास्त्र के नियमन कौ पालन कर्‌यौ है संगई नई नई उपमा अरु लोकान्मुख बिम्बन कौ प्रयोग हू कर्‌यौ है।

बिनकौ जो वक्तव्य संकलन माँहि पदे पदे पुष्ट हौवै।

त्रिभुवन जू गुरु परम्परा के साधक हतें बिन्नें जा संकलन में 'विनय' के तीन दोहान अरु एक कवित्त के माध्यम सूँ रचना प्रक्रिया अरु उद्देश्य जा तरियां व्यक्त करी है–

हौ माँगू तुम देत हो, कबहुँ न कृपा घटाय।
गुरु ऐसी करुना करौ, बानी रसिकन माय॥

वाणी, गनपति के भजें, वाणी निर्मल होय।
काव्य कमल मकरन्द चखि, जड़ मति हु कवि होय॥

सुख सतदल मन अलि फंस्यौ, भगति देहु नंदलाल।
शब्द साधना कर रचै, कविता प्रिय सुख साल॥

कहूँ रहीम, कहूँ तुलसी अरु कहूँ विहारी से नीति अरु रीति परक निजी विशेषता लै अनहोने रचनाकार सिद्ध होत है।

छंद मुक्त रचनान में हू लय, गति, ध्वनि कौ मिठास इन पंक्तिन में देखें। कवि कौ वुढ़ापौ अल्हड़ वसंत पै का कहत है–

जे तूने कहा कियौ,
ओ अल्हड़ वसंत
कैसी रंगभरी पिचकारी छिड़क दई
पुष्पन पै पलासन पै
जि कर दियौ सारौ निसर्ग हु वहुरंगी
मैं तौ देख तौई रहि गयौ निस्तब्ध
पै जे कहा भयौ।
तू तौ अल्हड़ कौ अल्हड़ ई रह्यौ
पै मै वूढ़ौ व्है गयौ।

सुख दुःख शीर्षक सौं जे पंक्तियाँ अपने आप में अलग ही है। वे सुख के दिन नखरैल जमाई से वतात है। अरु दुःख के दिनन कूँ विन वुलाए मेहमान वतात है पंक्तियाँ देखें –

दुख के दिन, जानै कौन सौं नाम पूछ
आय–धमकत हैं, पौरी पै विन वुलाए
मेहमान किल्लौ ई पल्लौ झारौ,
जाइवे कौ लेत नाँय नाम
उटत वैठत मुख से निकसै
हाय राम हाय राम

विन्नैं स्वान–भक्ति अरु सयानौ (सियार) के माध्यम सौं सहर की गोस्त खोरी चालवाजी पै प्रहार कर्‌यौ वहीं गांव के भोलेपन कूँ दरसायौ है।

'हम सब' शीर्षक सौं आज के आदमी विशेपकर श्रेष्ठ जनन की कुत्सित मनोवृत्ति पै गहरी चोट करी है। वू भी उतावलेपन कूँ प्रेरित करै है। वे कहत हैं

बड़ी घोर घुटन है
भीत डर लगै है. बात तक करिबे में,
हँसबे हँसाइबे में

हम सब, बाबू मिस्टर, साहब श्रीजुत नामधारी श्रेठजन, ऊपर ते नीचे ताँनू कलफ लगे से हैं जे, बोलत हैं मीठी मिसरी सी घोर घोर।

सजी भई नुमाइस है, सुरुचि सद्भावना की मजे कलाकार हैं भावन के प्रदरसन में वैसे तौ गाढ़ी मित्रता करैं, दावौ करैं परन्तु जब अपने स्वारथ पै आवै आँच आँख में गड़ै पराए की प्रगति जब छुरी घोंप देत है चुपके से पीठ में अरु ऐसौ विलाप करैं जैसै अपनौ कोऊ सगौ हु गयौ मर। रोय गाय चुपके से वाकी अन्तेयष्टि की तैयारी करबे लगे मुस्काय कैं।

आज के युग को जो नग्न सच्चाई कहकैं त्रिभुवन नैं आज की कथित सम्यता की रग पै हाथ धर दीनौ है। 'सुनौ युधिष्ठिर' एक लघु संकलन होत भए हू 'गागर' को तरियाँ संवेदनान, अनुभूतीन, विसंगतीन, विकृतीन कौ अनुभूत सागर समेटे भये है। जा रचना नैं त्रिभुवन जू कौ छिपौ भयौ व्रजभासा कौ रूप प्रकट कर दियौ है,विन्नैं साधुवाद

■

बहुआयामी व्यक्तित्व कौ धनी डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी

- श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी

शिक्षक के नाते अर्थशास्त्र कौ अध्येता प्राध्यापक रह्यौ फिर महाविद्यालय कौ प्राचार्य रहकै सेवानिवृत्त भयौ डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी साहित्य जगत में हू खूब जानौ जावै है। कवि कथाकार, व्यंग्य कौ गम्भीर लेखक हिन्दी साहित्य की अनेक विधान माँहि प्रसिद्धि पाय चुकौ है। सम्मानित है चुकौ है अरु अर्थशास्त्री के नाते तौ महाविद्यालयीय पाठ्यक्रमन कूँ समृद्ध करत रह्यौ है। वाके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित है चुके हैं अरु पढ़ाये जाय रहे हैं। सन्दर्भ ग्रन्थन के नाते वर्तमान आर्थिक शिक्षण माँहि विनकी मान्यता हतै।

डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य जगत माँहि ललित निवन्धन अरु व्यंग्य रचनाकार के नाते राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर सौं पुरस्कृत अरु सम्मानित है चुके हैं। अकादमी नैं विनकौ मोनोग्राफ हू छापौ है जाते विदित होय है कै त्रिभुवन जू नै कोऊ भौत ज्यादा नाँय लिख्यौ पै जित्तौ लिख्यौ वू साहित्य जगत माँहि मान्य भयौ। वे व्यंग्य लेखक के नाते भौत प्रसिद्ध भये है पै गीतकार के नाते हू उनकी पहचान भई है। नव गीत के शिल्प में प्रकृति कौ जैसौ अनूठौ चित्रण गहरी संवेदनान की अभिव्यक्ति विनकी विशेषता हतै। जेई गीतन सौ बिन्नै ब्रजभाषा कौ श्रृंगार कियौ है। अरु जा नाते राज.ब्रजभाषा अकादमी नै विनकौ सम्मान कियौ है। अरु अब विनकौ जी मोनोग्राफ हूँ प्रकासित कियौ जा रह्यौ है।

ब्रजभाषा माँहि कुल जमा बिनके एक छोटे से संकलन 'युधिष्ठिर सुनो' की पाँडुलिपि के दर्शन भये है। जा संकलन की अनेक रचनाएं पत्र पत्रिकान माँहि खडी

वोली में प्रकाशित है चुकी है। 'युधिठिर सुनो' त्रिभुवन जी की ब्रजभाषा कौ पुष्ट प्रमाण हतै कुल जमा रचनान में परम्परा अरु आधुनिक रचना शैली के दर्सन होबैं। मनहरन कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा तथा बरवै छंद माँहि प्रकृति की छबि, पुरुष की प्रवृत्तीन के दर्सन होवें, वहीं नवगीतन की छटाहू मन कूँ मोहै तौ आधुनिक प्रगतिवादी विचारन की काव्यमय प्रस्तुति विशेषकर व्यंग्य परक नीतिगत भावन के दर्सन हु होत हैं।

त्रिभुवन जु नैं संकलन की भूमिका में अपनी रचना प्रक्रिया अरु दृष्टिकोण कूँ जा तरियाँ सौ लिखौ है वाकूँ बिनके गहरे सोच काव्य शास्त्र युगबोध अरु बिनके ब्रजभासा गद्य कौ नमूना कह्यौ जा सकै है। बिनके जा संकलन पै अलग सौं लेख लिख्यौ गयौ है। वाय पढ़िंगे तौ पाइंगे कै त्रिभुवन जू नै ब्रजभासा कूँ अधुनातन बोंध सौं समृद्ध कर्यौ है अरु जी उनकी बड़ी उपलब्धि कही जा सकै है।

व्यक्तित्व सौं मेरौ परिचय

श्री त्रिभुवन जू कूँ मैं चालीस वर्षन सौं जाँनू। बिनसौं यदा कदा भई मुलाकात सदैव रुचिकर रही हैं। सुरू में वे मोय बड़ी गम्भीर प्रकृति के लगे। रामपुरा की सड़कन पै एक ओर मौन किन्तु इतै उतै निगाह फेरतौ गौर वर्ण, कछु लम्बौ सौ कद, धीमे से कदमन सौं कछु खोजत सौं आत जात बिनसौं भेंट होत रई है। एक बेर बजाज खाने में दानमल जी की हवेली के सामने अकस्मात बिन्नैं मोय आवाज दई। सायद मेरी विनते पहली भेंट हती। लगभग आधे घंटा हम बतरात रहे। अनेक सामाजिक विषयन पै छिट पुट चर्चा होत रही। वर्तमान की विसंगतीन के संग अतीत की समाज रचना की दोषपूर्ण व्यवहार, राजनीतिक उठापटक आर्थिक संरचना पै बिनके गहरी अरु सपाट बयानी सौं लग्यौ कै वे मार्क्स हू सौं प्रभावित हैं उतने ही भारतीय संस्कृति सौं। मेरी जिज्ञासु अरु तार्किक वहस सौं सायद वे सहमत नाँय दिखे अरु फिर मिलवे की कहकैं हम अपने अपने रस्ता पै चल परे सायद उन दिनां अलवर हते अरु कोटा आज जात रहते। तव सौं जव भी वे कोटा आते तौ घर जरूर आते पै मेरी मुलाकात न है पाती तौ मिलवे की कह जाते। मोय बड़ौ आश्चर्य भयौ जब बिन्नैं अपनी पैली पोथी क्षमा कीजिये टिप्पणी लिखवे कूँ मोय दई, जी बात दिनांक 3/6/61 की हतै। मैंनें वापै कछु टिप्पणी लिखकैं भेजी। बिन्नैं आभार मानौ, पत्र दियौ। तब सौं बिन्नैं हर प्रकासित कृति मोय दई अरु वापै मेरी सम्मति की अपेक्षा करी। जी बिनकी उदारता अरु गुण ग्राहकता कौ सवूत है।

एक वेर मैं विनसौं मिलवे उनके कोटा स्थित मकान पै संझा कूँ पौहूच गयौ। मोय तव आश्चर्य भयौ कै जव मैनै विनकूँ एक कम्वल ओढ़े पूजा में लीन देख्यौ। गहन साधना अरु उपासना के प्रति आस्था अरु आचरण सौं मैं भौत प्रभावित भयौ तव सौ विनके प्रति मेरी श्रद्धा वढ़ गई। वे नियमित साधना करत है। संध्या उपासना, जाप विनके जीवन के अंग हतै। विन्नैं जयपुर में अपने वंगला में मंदिर जैसौ पूजाकक्ष हू वनायौ है। जी विनकौ यथार्थवादी धर्म के प्रति आस्था कौ सवूत हतै।

विनकौ जन्म कोटा माँहि 12 सितम्वर 1922 कूँ भयौ। विनके पिताश्री जाने माने वैष्णव एवं कृष्ण भक्त हे। नौ भाई वहिनन में वे चौथे नम्वर के पुत्र हतैं। चौवे जी कौ जी परिवार विद्वानन कौ परिवार कहूयौ जावै है। विनके सवई भैया उच्च सिक्षा प्राप्त कर उच्च पदन पै रहे अरु हतै। कोटा में जा परिवार में जितते पी.एच.डी. हैं शायद ई कोऊ अन्य परिवार में होंय। विनके पंचायती राज व्यवस्था पै शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र की पत्रिकान में प्रकाशित भये हैं। वे गम्भीर चिन्तन के अध्येता हतै। विनकौ कृतित्व अर्थशास्त्र, हास्य व्यंग्य, कविता ललित निवन्धन सौं भर्यौ परौ है। वे यशस्वी प्राचार्य हू रहे।

कृतियाँः

सन् 1961 सौं लैकैं अव लौं विनके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित है चुके हैं। जे सव खड़ी वोली हिन्दी में हैं

(1) क्षमा कीजिये (सन् 1961) (ललित निबंध) (2) ममता की समाधि खंड काव्य (1968) (3) सुरभि के चरण (काव्य संग्रह) (1968) (4) ब्रह्माण्ड का उपमान (ललित निवन्ध 1977) जी पोथी रा. सा. अकादमी द्वारा प्रकाशित करी गई है। अरु जी निवन्ध पाठ्य पुस्तक माँहि वर्षन तानूँ पढ़ायौ जातौ रहयौ है। (5) उपार्जित क्षण (काव्य संग्रह) 1985 तथा (6) 'सव देखते हैं नाच' ललित निवन्ध (1997) राज. साहित्य अकादमी उदयपुर नै सन 1992 माँहि राज. साहित्यकार प्रस्तुती (83) के अंतर्गत विनकौ मोनोग्राफ छापौ है। वे गत चालीस वर्षन सौं देश की मूर्धन्य पत्र पत्रिकान में छपते रहे हैं अरु आजहू विनके लेख व्यंग्य-कविता आदि छपते रहवें हैं।

विन्नैं जहां साहित्यिक पत्रिकान यथा कल्पना, माध्यम, सरस्वती, ज्ञानोदय, धर्मयुग, मधुमती, चिदम्वरा आदि की शोभा वढ़ाई है, वहीं साप्ताहिक हिन्दुस्तान

नवभारत टाइम्स में हू उच्च कोटि के आलेख छपवाये हैं। राजस्थान पत्रिका के तौ वे नियमित लेखक हतैं।

राज. ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना के बाद सौं बिनकौ छिपौ भयौ ब्रजभाषा कौ प्रेम उभर आयौ है अरु बिनकी प्रारम्भ सौं ही लिखी गई थोरी भौत रचनान कौ प्रकाशन होन लग्यौ है। यूँ बिनकी मातृ भाषा ब्रजई है अरु घर माँहि बोली जावै है। पै ब्रजभाषा कौ चलन अरु प्रकाशन मंद व्है जावे के कारन वामैं कम लिख्यौ है। बिनकी अनेक रचनाएं ब्रजशतदल में छपी हैं। अरु एक संकलन 'सुनौ युधिष्ठिर' की पांडुलिपि तैयार हतै। बिनकी ब्रज सेवा कूँ स्थायी बनावे के काजैं बिनकौ ब्रजभाषा अकादमी नैं सम्मान कर्‌यौ है।

श्री त्रिभुवन जी अर्थशास्त्र के अध्येता अध्यापक होवे सौं अरु प्रारम्भ में प्रगतिवादी रुझान होबे के कारन गहरे चिन्तक अरु गम्भीर स्वभाव के समझे जावै है। पै बिनकी हास्य व्यंग्य रचनाएं सामाजिक चेतना अरु मानवीय सोच के नमूना हैं। वर्तमान माँहि समाज में व्याप्त विकृतीन, विसंगतियन अरु अपसंस्कृति सौं उपजी भौतिकतावादी उपभोगवादी प्रवृत्तीन पै बिन्नैं मनौवैज्ञानिक प्रहार कर्‌यौ है। वे युक्ति युक्त तरीका सौं मानव के अंतस कूँ कुरेदें अरु साफ करिवे में निपुण हतैं। बिनके साफ शब्दन में मिठास अरु तीखौपन साथ साथ देखौ जा सकै है। बिनके ललित निबन्धन कौ संकलन "सब देखते हैं नाच" एक हास्य व्यंग्य पै कीर्तिमान कह्‌यौ जा सकै है।

■

बहुआयामी प्रतिभा के धनी डॉ. चतुर्वेदी

- श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज

गौर वरन, छरैरी काया, ऊँचौ ललाट, नेत्रन में दीप्ती, बचनन में कोमलता, व्यौहार में कुसलता, निरनै मे दृढ़ता, विचारन में सुतंत्रता, होटन पै मुसकराहट, प्रोफेसर अर्थशास्त्र के पर साहित्यकार सुभाव के-डॉ. चतुर्वेदी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। खड़ी बोली अरु ब्रजभाषा दोऊन पै बिनकौ समान अधिकार है। गद्य अरु पद्य पै समान रूप सौं लेखनी चलै है।

डॉ. चतुर्वेदी एक आस्तिक अरु संस्कारवान साहित्यकार है जाकौ प्रमान बिनके लेखन माँहि ठौर-ठौर पै मिलै है। परम्परा अरु प्रगति कौ बिनके लेखन माँहि भौतई सुन्दर समन्वय भयौ है। गनपति के संगई गुरु वदना कौ एक उदाहरन प्रस्तुत हतै-

वानी गनपति के भजैं, बानी निरमल होय।
काव्य कमल मकरंद चखि, जड़मति हू कवि होय॥

हौं माँगौ तुम देत हौ, कबहुँ न कृपा घटाय।
गुरु ऐसी करुना करौ, बानी रसिकन भाय॥

'सुनौ युधिष्ठिर' माँहि बिन्नैं आज के सामाजिक वातावरन अरु राजनीतिक माहौल कौ नगन चित्रन जा तरियाँ कर्यौ है-

सुनौ युधिष्ठिर आजु, राज है दु:सासन कौ,
यामै सुख-सुशन कौ, निकस्यौ जनाजौ है।

आपुनी प्रसंसा हेतु, पत्रिका प्रकास करैं,
तिकड़म ते स्तुति, निज की कराए जॉय।
समीक्षक पुटलावै, धमकावै लिखिवे कौं,
सूर–तुलसी के वरावर जे माने जॉय॥

आज के कवि एक औरु विसेसता लिए भये हैं। मंच हड़पवे के काजै अपने परिकर वारे की हीन रचना पै दाद देवौ अरु वाह–वाह करिवौ विनकौ प्रथम काम होवै है। पीवे–पिवावे अरु खायवे खवावे कौ चल्ला तौ आज खूब चलई रह्यौ है पर जातेऊ अलावा कवि सम्मेलन कराइवे की ठेकेदारी लैवौ अरु मौकौ हात लगि जाय तौ और कविन कूँ सिंगट्टा दिखायवौ अरु सवरी रकम कूँ डकार जाबौ विनकौ बाएं हाथ कौ खेल है गयौ है। वाई पै करारी चोट करी है डाक्टर साव नैं इन सब्दन माँहि–

वेऊ दिन गए जवै, कविगन मनीसी हे,
साहित्यिक दादा आज, कवि कौ वनात हैं।
अपने पिछलाग की साधारन कृति काजैं
आजु के जुग की, श्रेष्ठ रचना बतात हैं।
पीवे–पिवाइवे कौ जो उत्तम प्रवन्ध होय
वह या रचना कौ, पुरस्कृत करात हैं।
हिस्सा वटाइवे की तौ, वात कछु दूर रही,
मौकौ लागे वाय तौ, सिगरौ चाटि जात हैं।

रितुराज वसंत ऐसी नव प्रेरना लैकैं उपस्थित होवै कै वाके आगमन पै लता–पता, पेड़–पौधा, पसु–पच्छी सवई उछाह अरु उल्लास सौं नाचवे लगैं तो मानस कौ तौ कहिवौ ही का है। मानसन मेऊ कवी की लेखनी नव–नव भावन नै लैकैं थिरकवे लगै। डॉ. चतुर्वेदी नै यई चित्रन न्यौं कर्यौ है–

फूट परे किसलय, नवीन वोले वृन्दन में
उमग पर्यौ जगत माँहि, जोवन नयौ–नयौ।
आतुर मिलिन्दन में, कुन्दन पै मची धूम,
चाम्हु पै अनंग के, पुष्प वान चढ़ि रह्यौ।
वैठिकैं रसाल डारन,मुखर पिकी वोली,
देखिरी देख,तेरे द्वारे कौन टेर रह्यौ॥
नयन–वैन खोल देखौ, तो द्वार माँहि टेरि
चंचल वसंत खिली कली माँहि हँसि रह्यौ॥

प्रो. चतुर्वेदी व्यापक दृष्टिकोण अरु प्रखर लेखनी के धनी हैं। बिनकी पैनी दृष्टि सौं कोई बिसै बच नाँय सक्यौ। होरी के बरनन में आधुनिक आपाधापी, पुलिस की गोली अरु आँसू गैस कौ भौतई अच्छौ चित्र बिन्नैं उतार्‌यौ है। अवलोकनीय है यहाँ पै बिनकौ नूरक छन्द–

होरी के लक्कड़न के बरिवे कौ धूम नाँय,
अश्रु गैस गोलन ते निकसी धूम धौरी है।
नाँय पिचकारी की मनभावन फुहार में,
पुलिस जल धारन लै करै बरजोरी है।
होरी हुरियारन कौ हुल्लड़ अरु सोर नाँय,
पुतरा फूँक मन्त्री कौ, हाय हाय हो रई है।
तू कहै होरी आवत बरस में एक बार,
अब तौ नगर में, होय दस बार होरी है।

चतुर्वेदी की व्यापक दृष्टि वर्तमान वातावरन पै परिकैं बाकी चीर–फार करिबे में बड़ी गहमी बैठी है वहीं रितु बरनन पैऊ बिनकी लेखनी समान रूप सौं चली है। कोऊ रितु बिनकी लेखनी ते बची नाँय। हेमंत रितु में जब चारों ओर सीत कौ प्रकोप व्यापिकैं सबै भासित करि रह्‌यौ है, म्हाँई एक बिरहिनी नायिका के हिरदै में आग कौ प्रकोप का तरियाँ ते काँप रह्‌यौ है। जाकौ मार्मिक चित्रन कर्‌यौ है कवि नैं इन सब्दन माँहि–

कहै, अफसर जो कहै बाकौ नौकर अरु मातहत कूँ अपनी अंतरात्मा कूँ दबा कैं पालन करनौ परै जाई भावना कूँ बानी दई है जा तरियाँ त्रिभुवनजी नैं–

पंडित होय, मूर्ख होय, सूम पा उदार होय,
हाकिम की हजूरी माँहि, हाँ हाँ करनी परै॥
वृथा चापलूस जब, निन्दा अरु स्तुति करैं,
मन कौ मन के विरुद्ध, मौन गड़नी परै।
त्रिभुवन जे नौकरी,नाम नीचता कौ है
यामें स्वाभिमान हू की आन तजनी परै॥
नीचौ सुनिवौ परै अरु नीचौ लखिवौ परै
नीच नौकरी में, नाक नीची करनी परै॥

प्रेम में प्रेमी की जो गति होय बाकी एक बानगी डॉ. चतुर्वेदी की 'प्रेमवीथि' सौ उद्धृत हतै–

अँसुआ पलकन में रहैं, आइ अधर के माँहि।
जी उमड़ै ऐसैं कि ज्यों, वस्म निचोरे जाँहि॥

जीवन दरपन वीथि माँहि डॉ. चतुर्वेदी नै संसार के तौर तरीकन कौ बड़ौ ही सरलता सौ उद्घाटन करयौ है–

हम सोचत बरसात से, धुलें गिरारे द्वार।
पै जीका उलटौ भयौ, काई जमी अपार॥

डॉ. चतुर्वेदी नैं दोहा, कुण्डिलया, छन्द अरु सवैया आदि सबई विधान पै अपनी लेखनी चलायकै ब्रजभाषा की अनन्य सेवा करी है। ब्रजभाषा के ऐसे साँचे साधक श्रेष्ठ साहित्यकार अरु उत्तम सेवक कूँ हार्दिक बधाई।

पुरोहित मोहल्ला, भरतपुर (राज.)

सुनौ यधिष्ठिर

डॉ. त्रिभुवन चतुर्वेदी

अपनी वात

'सुनौ युधिष्ठिर' मेरी समै समै पै लिखी रचनान कौ संग्रह है। ये मुक्तक रचना है। यामें युधिष्ठिर आज कौ सामान्य नागरिक है, जो परिश्रम अरु ईमानदारी सौं जीविका कमावै, नीति नियम सौं रहै, जो जब तलक सिर पै नाँय आय परै झूठ नाँय वोलै। 'नरो वा कुंजरो वा' तौ कहै पै जब तलक आवश्यक नाँय होय, तब तलक अनीत सौं बचै। वामें उद्‌बोधन के काजैं देस की दुरदसा कौ या लंबी रचना में बरनन कियौ है। याही रचना के सार्थक करबे कूँ संग्रह कौ शीर्षक हू बनाय दियौ है। वैसै हू कविगनन नैं श्रीराम, श्रीकृष्ण गांधी जी आदि कूँ सम्बोधित करिकैं देस की दुरदसा कौ वरनन कियौ है, पै सत्यवादी युधिष्ठिर कूँ सम्बोधित भई रचनाएं कम देखिबे में आई हैं। महाराज युधिष्ठिर धर्म की धुरी हे। स्वर्गारोहन के समै, पत्नी अरु भाईन की तुलना में कूकर कूँ अपने संग सुरग में लै जाइबे कौ उनको आग्रह करकैं बिन्नैं अपने नीतिपरक अरु निस्पक्ष दृष्टिकोण कौ परिचय दियौ हौ। यासौं युधिष्ठिर ई आजु देस में समाज माँहि आय रहीं अनेक विदुपतान अरु विसंगतीन के निस्पक्ष साक्षी हैं सके।

मुक्तक काव्य माँहि भावना कौ प्राधान्य रहै। अनुभूति निष्ठा याकी विसेसता होय। मेरे या संग्रह माँहि दृश्यन कौ कोऊ संघटित रूप नाँय है। अनेक रमनीक दृश्य खंड हैं। जामें छंद विधान तौ है, पर शास्त्रीय काव्य लक्षनन में स्थान पै वैयक्तिक अनुभूतीन कूँ ही वरीयता दई गई हैं।

मानव के मन माँहि कै प्रकार की वृत्ति पाई जावें, जिन्हें हम वहिर्मुखी अरु अन्तर्मुखी वृत्ति कहै। व्रज भूमि में भक्ति धारा कौ प्रबल प्रवाह बहै। ब्रजभाषा काव्य माँहि अंतर्मुखी वृत्ति कौ अधिक प्रभाव हतै। ब्रजभाषा काव्य माँहि प्रेम अरु भक्ति के संग-संग राष्ट्रवाद, मानवतावाद आदि सबहि हतें, परि बहिर्मुखी प्रवृत्ति आधारित प्रगतिवाद जैसी कठोरता नाँय है। व्रज काव्य माँहि बंधन अरु मुक्ति प्रवृत्ति माँहि निवृत्ति पाइबे की छटपटाहट हतै। यामें राष्ट्रवाद के अंतर्गत अहिंसा अरु वर्ग साम्य कौ दरसन तौ होय है, परि वर्ग संघर्ष अरु खूनी क्रांति कौ कठोर प्रहार नाँय हतै। आज तलक ब्रजभाषा काव्य की मूलधारा भारतीय संस्कृति सौं जुरी भई है। जाते यामे प्रेम,विरह निवेदन सौन्दर्योपासना अरु आत्मसमर्पण की भावनान कौ प्राधान्य हतै। दीनन के प्रति करुणा प्रेरित कोमल चिंता है शोधकन के प्रति विद्रोह कौ आह्वान कम मिलै। व्रज काव्य की इन विसेसतान कौ मेरी कविता पैहू प्रभाव परौ। परि याके संग-सग मैनै शैली प्रयोग कियौ है अरु परम्परित उपमा अलंकारन कौ प्रयोग कियौ है। नए नए विषयन पै छंद रचे है। अरु काव्य में चलि रही आधुनिक प्रवृत्तीन अथवा धारान सौं हू प्रभाव ग्रहन कियौ है। समकालीन कविता माँहि विभिन्न काव्य धारान कौ जैसौ मिश्रण पायौ जाय, वोऊ आज के कवि कूँ अछूतौ नाँय छोड़े। जा कारन मेरी कविता माँहि मानवीय मूल्यबोध, राजनैतिक चेतना अरु जर्जरित परम्परान के विरुद्ध विद्रोह कौ स्वर पायौ जावै, जैसौ आज की कविता माँहि मिलै, परि मेरी कविता पै ब्रज काव्य परम्परा कौ हू व्यापक प्रभाव है ।जे आस्थापूर्ण कविता हैं। जामें वैयक्तिक रागानुभूतीन के चित्रण माँहि ब्रज की आत्मा भक्ति के प्रति सादर नमन है। जा लिए नाँय कै लीक कौ निरवाह कियौ बल्कि जा लिए कै जि ऐसौ अनुभूत सत्य हतै जाकूँ हृदय ही जान सकै।

जे सही है कै सामाजिक विषयन सौं सबंधित रचनान कौ मेरे जा संग्रह में विसेस स्थान है परि ब्रजभासा काव्य माँहि भक्ति,ज्ञान अरु रूप चित्रण के संग-संग हास्य व्यंग्य कौ जो अपूर्व रंग पायौ जावै वो अप्रमि हतै। ब्रजभाषा साहित्य माँहि सूरदास अद्वितीय हतैं। बिनके द्वारा वात्सल्य रस कौ काव्य में प्रयोग विश्व साहित्य में अद्वितीय है। परि सूरदास जी नै हूँ भ्रमर के माध्यम सौं व्यंग्य कौ सहारौ लैकै महान काव्य की रचना करी। मैनैं हू शांत, दास्य अरु शृंगार के संग संग हास्य व्यंग्य कौ उपयोग कियौ है। परि शृंगारिक रचनान माँहि राधा माधव की आड़ लै नखसिख वर्णन सौं बचौ हूँ। मेरी जे मान्यता है कै जो अपने आराध्य है बे कविता माँहि हू आराध्य ही रहिवे चहियें।

या संग्रह की अधिकांश रचना छंदोवद्ध हैं। मैंने पिंगल शास्त्र के नियमन कौ जहाँ तक है सकौ, पालन कियौ है। संगई नई नई उपमा अरु लोकोन्मुख विम्वन कौ प्रयोग कियौ है, जासौं कविता आधुनिक वोध ते विलग नाँय रहै। मैंनैं मनहर कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, वरवै के अतिरिक्त मुक्त छंद माँहि लिखी रचनान कूँ भी संग्रह माँहि स्थान दियौ है। जे तौ सही है कै छंदोवद्ध रचना अधिक सरस हौवें, परि आधुनिक भाव वोध इतनौ विस्तृत अरु जटिल हतै, ताकूँ प्रकट करवे कूँ मुक्त छंद मोय प्रयोग करनौ परै। मैंनैं दोहा जैसे छोटे छंद माँहि नए नए विम्व उकेरवे कौ जतन कियौ है जासौं कविता अधिक भाव प्रणय वन सकै। मैंनैं गीतउ लिखे हैं, तौ व्यंग्य रचना हू करी हैं।

जे मैं जानूँ हूँ कै मेरी अपनी सीमान के कारण मेरौ काव्य प्रयास इत्तौ समर्थ नाँय कै कोऊ नई काव्य धारा प्रवाहित करि सकै, परि व्रज कविता हू समकालीन काव्य धारा सौं विलग रहै, याको अत्यल्प प्रयास तौ जे है ही। हिन्दी के विकास के काजैं व्रजभापा नैं अपनौ सर्वस्व दियौ। अव हिंदी समर्थ है गई है तौ जरूरी है गयौ है कै व्रज साहित्य नई ऊर्जा अरु नए वोध सौं संयुक्त होय, अरु अपनी प्राचीन गरिमा प्राप्त करै। एक समै तौ, जव कोऊ हरिगीत गातौ अथवा जनप्रिय कविता करतौ तौ व्रजभापा मेंई करतौ। व्रज ते वहार संत तुलसी, गरुनर, गुरू गोविन्द सिंह अरु अमीर खुसरो आदि सवई भक्तन नैं व्रजभासा अपनाई। आज व्रज साहित्य कूँ अपनी प्राचीन गरिमा प्राप्त करनी हैं।

मूल ते व्रजवासी हैवे के कारन मैंनैं अपनी प्रारम्भिक काव्य साधना व्रजभासा मेंई करी। ता समय व्रजभासा की कविता के प्रकासन की कोई विसेस व्यवस्था नाँय हती। आज समय आयौ है कै इन रचनान कूँ रसिक पाठकन के सम्मुख रखौ जाय। जे मेरौ तुच्छ प्रयास है,पर आसा करूं कै रसिक पाठकन कूँ जे अच्छी लगेंगी। पद पद पै गीता अरु पद पद पै हास्य व्यंग्य जेही है व्रजवानी अरु व्रज काव्य रंग।

ब्रजरचना माधुरी

विनय

वाणी, गनपति के भजे, वाणी निरमल होय।
काव्य कमल मकरंद चखि, जड़मति हू कवि होय॥

सुख सतदल मन अलि फँस्यौ, भगति देहु नंदलाल।
शब्द साधना कर रचै, कविता प्रिय सुख शाल॥

हौ माँगू तुम देत हौ, कबहुँ न कृपा घटाय।
गुरु ऐसी करुना करौ, बानी रसिकन भाय॥

सृष्टि अरंभ में, बोध पद्म विकसित भयौ,
ताहि श्वेत पद्म में, शारदा विराज रही।
एक कर गीत वीन, एक कर वेद ज्ञान,
अक्षरी शक्ति मानस हंस पै राग रही॥
श्वेत बदन, श्वेत वसन, औ श्वेत शांत नयन,
श्वेत चंद्रिका सी तिय तम पै साज रही।
ज्ञेय, अज्ञेय, अरु समल त्रिभुवन जन,
वाणी तौ तंत्री की तान सौ निवाज रही॥

याचना

दियौ है जनम प्रभु, इत्ती सी कृपा करियो,
कबहुँ न परै नीची संगति में रहिबो।
परधन, पराई धी, देखि मन बिगरै ना,

कबहुँ न परै दुष्ट वचनन कौ सहिबो॥
मान हीन जीवन न दीजो, एक दिन कौ हू,
खोट सौं कमायौ धन,नाँहि परै रखिबो।
कवि बन भड़ैती न करनी परै भूल कैंऊ
ओछौ अहसान कबहुँ नाँहि परै लैबो।

शारद बकसै ऐसी बानी, प्रभु तेरो नाम पुकारौ करूँ।
कमला इत्ती संपति देवै, पर जन कौ दुक्ख निबारौ करूँ॥
बल देहु कराली भवानी मोहे, त्रिभुवन में बल संचारौ करूँ ।
जब आँख मुदैं तौ पलकन में,घनश्याम कौ रूप निहारौ करूँ॥

दादुर मोर किसान सदा, घन के आवन में चित्त लगाही।
चातक प्रीत निराली करै, बिन स्वाति की बूंद न प्यास अघाही॥
जे प्रीत की रीत निराली सदा, बेस्वासैं रिकैं जे मनहि बसाहीं।
मारौ निकारौ, बसाऔ निकेत में, जाऊँ कहाँ तुव दास कहाहीं॥

धन, धाम, धरा संपत्ति, बनिता, जो मांगौ सोई देवत है।
जे आपुनि आपुनि इच्छा है, को का मांगै, का लेवत है
त्रिभुवन मँगता धन मांग रहौ, वो पस्सौ भरि भरि देवत है।
वासै बाकों मांगिबे थारौ, कोऊ बिरलौ जन हो बस है॥

रवि तेज प्रभा ससि माँहि लसै, निस्सीम गगन पै छाये हैं।
कुसमन में गंध धरिकी में धारिकैं बहुरूप समाये हैं॥
कन कन में बसे हैं त्रिभुवन के पै नाँहि समझ में आए हैं।
वो आप चहें तौ समुझि परि है अपने बल हेरि हिराये है॥

जे मानत ना तुमको कबहूँ, तिनकौ प्रभु आप सहारौ करैं।
जे टेरत टेरत पीरे परे, तिनते प्रभु आप किनारौ करैं॥
जै कैसी परीच्छा लेत रहौ, दुखि आरत तोहि पुकारौ करैं।
तुमरे सरन तौ परौ त्रिभुवन, कब लौं नभ ओर निहारौ करैं॥

घर माँहि रहूँ तौ जे मनुआ चट दौरि दौरि बन धावत है।
वन में जाऊँ तौ जे चंचल, घर के सुक्खन कौं ध्यावत है॥
जो त्यागूँ तौ लैवे कौं बोई, बालक सौ बहु अकुलावत है।
घर अरु कानन, लैबे तजिबे के मध्य सत्य सरसावत है॥

यहि जीवन की संध्या उतरी अरु केसन पै रजताम लखी है।
सत्यगीत थमे अरु कोकिल के हु तानन की झंकार रुकी है॥
दुखिया मन में अरु जीवन मे, विकलास भरी चिनता सुलगी है।
अब होय कहा यह सोचतई, इन नैनन की अब नींद भगी है॥

दुहाई है

देख देख जरे जात, अहम सौं बरे जात,
कोऊ ना सुहात, भई ऐसी मनुजाई है।
मानव मानव कौं खात, झूठे आँसू बहात,
दूर दूर देखें नाँय दिखे सरलाई है॥
कोऊ तन सौं दुखी, कोऊ मन धन सौं दुखी,
सर्व सुखी कोऊ नाँय, पर्‌यौ दिखाई है।
सहकै जग के प्रहार, आयौ हो तेरे द्वार,
दीनन के नाथ मेरे तेरे नाम की दुहाई है॥

मीठे मीठे बोलें बोल, डर के न द्वार खोल,
मकड़ी के जाले सी जो करत बुनाई हैं।
कोऊ जो फँसि जात, ताहि पूरौ चूसि खात,
लोहू कौं पियत नाँय तृष्णा अघाई है॥
ब्रह्म की करै बात, माया संगिनि बनात,
बक सी नजर भेंट पूजा पै लगाई है।
कैसी जे समय चाल, लोग कहें कलिकाल,
कालन के काल तेरे नाम की दुहाई है॥

स्वारथ से करें बात, गिरगिटी रंग लात,
पति की न पत्नी इहाँ, भाई कौ न भाई है।

जानै जगत की रीत, तौऊ करै याते प्रीत,
घानी कौ वलद जैसें, देह कौं गलाई है॥
जीवन की वात करै, मौत के अस्त्र गड़ै,
जीवन के द्वार दस्तक मौत नैं लगाई है।
कैसी है जे घड़ी विनास के दरवाजे खड़ी
मानवता देवै तेरे नाम की दुहाई है॥

दर्शन

पिक कारी, कनक सुवास हीन, दुष्ट इहाँ सुख संपति पावै।
पंडित निर्धन औ धनी मूर्ख, जग एक पहेली समुझि न आवै॥
चिकने खंभा मति तीति चढ़ैं, खिसकैं पुनि ताहि जगै पहि आवै।
जग जाल कहौ, क्रीड़ा त्रिभुवन यहि जानि परै जव वो समुझावै॥

सुनौ युधिष्ठिर

सुनौ युधिष्ठिर आज राज है दुसासन कौ,
यामें सुख सुराज कौ निकसौ जनाजौ है।
वाजे वज गए प्रेम भलमनसाहत के,
घूंस सिपारिस कौ वाज रह्यौ वाजौ है॥
भाई अरु भतीजावाद, जातिवाद, प्रांतवाद,
झूंठ अरु पांखड नैं, कैसौ साज साजौ है।
कौवा अव राजा भए, हंस सव उड़ि गए,
सकुनी, सुयोधन ते, जुड़ौ जे समाजौ है॥

आयौ जनतंत्र कहाँ, फाइल कौ जुग आयौ,
चहुँ ओर वावू की गहरी छन आई है।
हाकिम है सिपारसी, वुद्धु अरु कामचोर,
वावू जी पी में अँगुरी पाँचऊ समाई है॥
लिए दिए विना तनिक, वावू न वात करै,
हाकिम है सेरभर तौ वावू सवाई है।
राम कौ जे राज नाँय, कैसौ लोकराज है,
फाइल कौ राज जामें वावू की दुहाई है॥

बाबू जो संत बनै, नियमन की करै बात,
बढ़ि बढ़ि कानून की नजीरें सुनात है।
न्याय अरु ईमान कौ गहरौ पाखंड करै,
कुर्सी पै बगुला बन, आसन जमात है॥
नोटन की मछरियाँ, चट्ट से गड़प करै,
फाइल पै अनुकूल, नोट लगि जात हैं।
जनता मीन, बक सौ, नित्त कौ भोज है,
दाव लगि जाय तौ जे मंत्रिन सौं खात है॥

मिलावट,बनावट, दिखावट कौ है जुग,
असली कौं पूछै कौन नकली चलतु है।
मित्रता, खानपान, मेलजोल, रसम रीत,
सबही बनावटी न उर छलकतु है॥
मिलावटी खानौ अरु बनावटी बानौ है,
मिलावटी व्यौहार न, कटत बनतु है।
नगरन में सुद्ध वायु तक के परे टोटे,
सच्चौ सनेही जन मुस्किल सौं मिलतु है॥

देस के हुक्कामन के, हाल चाल कहैं कहा,
इनमें ऐश देख इन्द्र तरस जातु है।
विदेसी साम्राज्य के हैं खडैरा साच्छात जे,
दुखिया गरीबन कौं, ठोकरें लगात हैं॥
करै मनमानी, नाँय गावें नियमन की बात,
नित्त नियमन के नए अर्थ बतात हैं।
घूसऊ खाँय अरु ऊपर ते दिखाएं आँख,
कौल करें लंबे अरु चट्ट नटि जात हैं॥

आजु तौ प्रसासन माँहि, बड़े बड़े अधिकारी,
होटल माँहि आइकै ग्राहक पटात हैं।
गलत सलत सही, बोलैं पै अंगरेजी में,
लक्ष्मी पतिन ते हात बढ़कें मिलात हैं॥

जनता, अधीनन ते,टेढ़ो मुख कर बोलैं,
मंत्री देखु आगे पीछे दुमकों हिलात हैं।
सब कछु डकार कैं छोटे ते आदर्सवाद,
कांड ते न स्वार्थ बिन, सूधे बतरात हैं॥

बुरौ हाल आजु नेता नाम धारिन को,
जनता दुखभार ते, दबे मरे जात हैं।
देस दुख दुखी होय, कारन में घूमत हैं,
मदिरा पीय पीय कैं, पीर कौं मिटात हैं॥
निर्धन के पोसक हैं, खुल कैं सोसन करैं,
सत्ता की दलाली कर, खात ना अघात हैं।
देस की, धरम की ओट, लै घर तिजोरी भरैं।
कहिबे कूँ देस में दुख ते मरे जात हैं॥

विधि समान माँहि सोर अधिक काम कम,
गाल बजाइबो बनी, आजु देस सेवा है।
नीति हीन भ्रस्ट जन, चुने जाँय नेता जबै,
स्वार्थ नीति बनै तब, जन जान लेवा है॥
सिंह बने गरजें बे, काम कर गीदड़ के,
धंधौ बढ़ाइबे हेतु, करैं देस सेवा है।
धंधौ हू बढ़ै खूब, नेतागिरी चलतु खूब,
एक हात माँहि लड्डू, एक हात मेवा है॥

ऐसौ कहौ जात है कै हर बारहे बरस,
द्वार परे घूरे के हू, भाग फिर जात हैं।
प्रताप प्रजातंत्र कौ, हर पांचए बरस,
घूरे पुरुषोत्तम सौं, हात जुड़वात हैं॥
छोटे कबूतर हू बाज बने अकड़त हैं,
दो दो कौड़ी के लोग अँखियाँ दिखात हैं।
नोटन की चोटन से, वोटन कौ खरीद कैं,
बड़े बड़े पाजी देखे, काजी बन जात हैं॥

आवत चुनाव कहा, खुलत तिजोरी पाट,
दोऊ हातन से लोग,नामों बनात है॥
बाबू लोग चाटत हैं, चटनी कमीसन की,
साहब लोग घूम घूम, टी.ए. पकात है॥
सम्पत मिलै ठाड़े कौ, छोटे जन बड़े होत,
वोटर हू वोट ओट ,रोकड़ कमात है।
कुर्सी के आसी, प्रत्यासी, धन साधन बिन,
गाँव गाँव धूल फाँक, हार कौं छिपात है॥

सुनकै बाप दादे के, नाम कौ जो झेंप जात,
नए रिस्तेदारन की, सुध बिसरात हैं।
निर्धन सौं बचें, मेल माया बारिन से रखैं,
दुरदिन में मित्रन सौं न आँखें मिलात है॥
धन के मदमातौ फिरै, साँड़ सौ अरडातौ,
तनिक सौ करम करैं, बहुत बतात हैं।
टेढ़ी चाल चलै, नाँहि सूधे मुख बात करै,
जब कभी संत्री से, मंत्री बन जात हैं॥

मत पूछौ युधिष्ठिर, हाल किसानन केऊ,
देस मरै भूखौ पै जे, नाज कौ दबात हैं।
आज के बौपारी करैं, काला बाजारी खूब,
तस्करी करात, नाँहि तनिक डरात है॥
कहा मजदूरन के नेतन की करौ बात,
सेठन सों मिलकै हड़तालें करात है।
पढ़े लिखे, बे पढ़े, नेता अरु जनता सब,
करें देस दलन किंतु नाँहि सरमात हैं॥

देस जे हमारौ हतै, हम याके राजा हैं,
देस कौ नाम लै, सेवा अपनेन की करैं।
कल भयौ हम भए, मंत्री उपमंत्री कछु,
पर जड़ कौ काट कैं, अपनों हरो करैं॥

जीवन बेकार गयौ, कार यदि नाँच मिली,
कार अरु कोठी हेतु सेत की स्याही करैं।
दीन हीन रोटी अरु रोजी की जो मांग करैं,
बिनै कहैं देस हित तपस्या खरी करैं॥

चहुँ ओर दबदबौ, घूस औ सिफारिस कौ,
शासन कौं जाति औ, कुनबे से भरि रहे।
राष्ट्र के अभिमान कौं, त्याग चाटुकार बने,
परदेसी सेठन के पिछलग्गू बन रहे॥
वोट की नीति सौं,सुनीति की राह तज जे,
कुर्सी की खातिरन अनीति सब करि रहे।
राष्ट्र के अनिष्ट कौ, दोष दूसरे पै गढ़
घड़ियाली आँसू भर, देसभक्त बनि रहे॥

गाजे बाजे से जात ब्याह कैं बहू कौं लात,
कम मिलै दहेज तौ, माचिस दिखाई है।
भ्रष्ट धन कमाएं लाख. दान करें दस पचास,
भक्त बनैं, सोचें सेंध स्वर्ग में लगाई है॥
अहिंसा के गीत गाय,नारी भ्रूण कौं गिरात,
धर्म धुरंधर बनै,नाँहि सरमाई है।
हवाले से हवालात, बड़े बड़े नेता जात,
नैंक नाँहि सोचैं होत जगत हँसाई है॥

जब ते जे देस अजाद भयौ तबतें मन में कछु ऐसी सधी है।
जन के, गण के, तन के, धन के, बलिदानन की छबि ऐसे फबी है॥
सुरलोकन ते बढ़कें रचनौ जनता हित स्वर्ग की बात जंची है।
मतदान करौ पलटौ नृप कूँ जनता माँहि कछु आस बंधी है॥

देस तौ सुतंत्र भयौ, का जन कौ राज भयौ,
नेता अभिनेता, धर्मनेतन कौ राज है।
देस की कसमे खात जमकै वे घूस खात,
देस हित पै अघात, पोल पट्ट राग है॥
अभिनेता देव बने, अभिनेत्री बनी देवी,
ऊँचे उपदेस तौऊ बिगर्यौ समाज है।
मनमाने कृत्य कर, संस्कृति कूँ भ्रष्ट करै,
लोकई की चिंता नाँय, कैसौ लोकराज है।

कवि अरु समीक्षक

काव्य के क्षेत्र मे घुटवन बल जे रेगें,
चाहें वे भीम से पराक्रमी दिखाए जाँय।
लेखनी हु पकरिवे की सुधहू जिनै नाँहि,
चाहे वे ब्यास जी की, कोटिन के माने जाँय॥
आपुनी प्रसंसा हेतु पत्रिका प्रकास करे,
तिकड़म सौं स्तुति निज की कराए जाँय।
समीक्षक पुटलावै, धमकावै लिखिबे कौ,
सूर तुलसी के बराबर जे माने जाँय॥

पढ़ें न पढ़ावें, न कृति कौ अध्ययन करै,
कोरे सब्द जालन सौं समीक्षा सवारे हैं।
वनत देस भक्त, देस हित लौं गले जात,
दल प्रतिपालन कौ [illegible] रहे नारे है।
संग लै प्रकासक हूँ [illegible] मे घूमैं फिरै,
सिगरे [illegible] हूँ [illegible] दे किनारे हैं।
श्रेष्ठ कृतिन हू [illegible]
आज [illegible]

तुलसी बिहारी को धूल कूँ उड़ाय करकैं,
निराला से न निजकौं मानत कम रहे।
कवि कुल सिरोमणि नाँय जब बन सके,
क्रोध हूँ पीते रहे अरु खाते गम रहे॥
होयकैं निरास जो लगायौ समीक्षा पै हाथ,
थानेदार चोखे पै समीक्षक बन रहे।
अजौं कुर्सी पै संपादक बन जन रहे॥

वे दिन गए जब दुवेदी महावीर हते,
आपऊ लिखते अन्य जनन सौं लिखावते।
संस्कार परिस्कार, संसोधन करि करि,
कोऊ कौ सुलेखक कोऊ सुकवि बनावते॥
आज कालि रचना नाम देखकैं छापी जाँय,
स्तुति, खुसामद गुन, रचना छपवावते।
राजनीति स्पासक्ति , नद अरु सेठ भक्ति,
एते गुन संपादक गुननिधि कहावते॥

वेऊ दिन गए जबै कविगन मनोसे हते,
साहित्यिक दादा आजु कवि कौ बनात है।
अपने पिछलग्गू को, साधारन कृति कौं जे,
आजु के जुग की, श्रेष्ठ रचना बतात है॥
पीछे पिवाइबे कौ जो उत्तम प्रबंध होय,
वह ता रचना कूँ पुरस्कृत करात है।
हिस्सा बँटाइबे की तौ, बात कछु दूर रहो,
मौकौ लग जाय तौ सिगरौ चाटि जात हैं॥

काव्य के क्षेत्र माँहि, कैसौ घटाटोप है जे,
कैसैं सुलभ कवि श्रेष्ठ रचना करैगो।
साथिन को, नेतन को, साहित्यिक दादान को,
धमकिन सौं. फब्तिन सौं, च्यों न डरैगो॥

कैसी हू श्रेष्ठ रचना लिखकैं मर जाऔ,
संस्तुति बिना बाकी कदर को करैगौ।
जियत उपेक्षा अरु कटुता सहैगौ कवि,
जस जो मिल्यौ तौ ताहि, मरबे पै मिलैगौ॥

फूट पड़े किसलय नवीन बेलि वृच्छन में,
उमग पर्‌यौ जगत माँहि जोवन नयौ नयौ।
आतुर मिलिन्द की बूंदन पै मची धूम,
चापहु पै अनंग के पुष्प बान चढ़ि रह्यौ॥
बैठिये रसाल डारन मुखर पिकी बोली,
देख री देख तेरे द्वारे कौन टेरि रह्यौ।
नयन बैन खोल देखौ तौ मेरे द्वार माँहि टेरि,
चंचल बसंत खिली कली माँहि हँसि रह्यौ॥

वासंती पवन नैं कहा, छुऔ है बेलिन कौ,
कली जो बंधी ही अब चटकबे लगी है,
सिलाखंड के तल माँहि, जो दबी सूखती हीगा,
निर्झरिया कोई अबैं, सरसिबे लगी है॥
झुकी रहिबे वारी सदा बिनकी अखियाँ,
रह रह कैं चितवन सौं, तकिबे लगी हैं॥
परस पाय स्मर कौ दीपित मुख श्री भई,
कमर हू अबै कछु ललकिबे लगी है॥

होरी

आई है होरी सुख आनंद कौ उत्सव है,
राग द्वेष दुर्गन की, होलिका जलाइये॥
आलस प्रमाद कौ त्याग करकैं पुनि,
नवल उत्साहन की चेतना जगाइये॥
आयौ ऋतुपति बसंत सुखमा कूँ साथ लै,
मन ते निरासा के भावन कूँ भगाइये।
प्रीत कौ गुलाल लेय, भ्रातृ भाव रग घोरि,
रंग रँगाइये अरु प्रेम सरसाइये॥

होरी के लक्कड़न के बरबे कौ धूम नाँय ,
अश्रु गैस गोलन सौं निकली धूम धौरी है।
नाँय पिचकारी की मनभावन फुहारै जे,
पुलिस जल धारन सौं करै बरजोरी है॥
होरी हुरियार कौ हुल्लड़ अरु सोर नाँय,
पुतला फूंक मंत्री कौ हाय हाय होरई है।
तू कहै होरी आवत,है बरस में एक बार,
अब तौ नगर में होय दस बार होरी है॥

हेमंत

आई है हेमंत कंत बसै परदेसन में,
नेह ना दिखावै चित्त चाह ना बुझावै री।
भेजे माँहि पाती, कहौ कैसै कवै रात अबै,
पलहू कौं नाँहि सखी पलक जुड़ावै री॥
ईखन के खेतन माँहि, गाम के नर बैयर,
रस पिएं, केलि करें, गोद मन पखै री।
आए घन अगहन के, जग मरैं जाड़ें सौं,
मरे हिये माँहि सखि आगि सुलगावै री॥

आई है हिमंत, बहुत जाड़े से बचौ भाई,
ठंड से जकड़ नाँय खटिया पकड़नौ है।
ल्हौरौ सौ वेतन पाय, होटल की रोटी खाय,
पूरी पकौरी की बात, बिरथा कहनौ है॥
सेठन की नेतन की, बाबुन की नगरी में,
परदेसी लोगन कूँ दुक्ख सदा सहनौ है।
जाड़े सौं मरौ, भूख हु विरह सौं मरौं पुनि,
पूस कौ महीनौ का, मरबे कौ महीनौ है॥

नौकरी

पंडित होय, मूर्ख होय, सूम या उदार होय,
हाकिम की हजूरी माँहि, हाँ हाँ करनी परै।
वृथा चापलूस जब, निंदा अरु स्तुति करै,
मन कौ मन के विरुद्ध, मौन गहनी परै॥
त्रिभुवन जे नौकरी, नाम नीचता कौ है,
यामें स्वाभिमानहू की, आन तजनी परै।
नीचौ सुनिबौ परै अरु नीचौ लखिबौ परै,
नीच नौकरी में नाक नीची करनी परै॥

नौकरी माँहि सफलता पावे कौ मूलमंत्र,
भक्त सिरोमनि जैसौ नाम कछु रखाइये।
साहब नामधारी के झुक कैं पूजौ चरन,
अफसर नामधारी के आगैं झुक जाइये॥
साहब की मैडम की, कुँवरि कुँवरन की
हाजरी लगाइये अरु हुकम बजाइये॥
साहब जब हँसकै गुड वैरी गुड कहै,
खीसें निपोरि 'किरपा आपकी' बताइये॥

पत्नी कथा

होत है व्याह ई कारन सब दुक्खन कौ,
शायन की साखा हर घर में खुलि जात है।
पैसा पैसा कौ सक्त, आडिट तब होन लगै,
हर इक हरकत पै, दृष्टि रखी जात है॥
भेजौ चट जात अरु जेब कतर जात है
बातन के कोड़न सौं, खबर लई जात है।
मिलै प्रितेक साल,उपहार नए बच्चा कौ,
सादी कहा होत इहाँ, सामत आय जात है॥

आवै इतते पगार, उत बहि जात पुनि,
रीते इन हातन में, कछु ना रहतु है।
नित्त नव वस्तुन सौं, अट्यौ भर्यौ रहै घर,
कछू नाँय लाए जे कहतु ही रहतु है॥
जे तौ मदमाती नारि, कछू नाँय समझै,
सामन की अंधी सी ग्रीसम में रहतु है।
चाट चाट दौना, करि दीनौ है पटौना यानैं,
तौऊ चट्टो कौ मन, चलतु ही रहतु है॥

देखे बड़े भीम,गामा, रुस्तम सोहराब हू,
ताकत ते जौंग में सबहुँ से अकड़ते।
बड़े कलट्टर,कमिस्नर, कुतवाल देखे,
सत्ता के गद सौं भर,कोऊ कों न गिनते॥
बड़े बड़े प्रोफेसर,संपादक,कवि देखे,
ज्ञान कौ ठेका लै,जे बात तक न करते।
मामा महारानी की महिमा से सबहिं देखे,
तिरिया के चरनन में नासिका रगड़ते॥

कूक कूक पिक रस बरसाबै कानन में,
कबहुँ तौ तुम हुँ रस कूँ बरसायौ करौ।
झूमि रही मस्ती भरी रसभरी डारि डारि,
कबहुँ सरस तौ नेह सरसायौ करौ॥
हँसि रह्यौ ससि अरु बिहँसै कुमुदनी हु
भौहें कर सुधी नैंक तुम मुस्कायौ करौ।
प्रौढ़ाई आइबे ते मन नाँय प्रौढ़ होत,
कबहूँ जुबती सी नेंक थिरक जायौ करौ॥

खात हैं

मुंसी जी बाबू जी पंडित जी लाला अरु गुप्ता जी,
सर्मा जी अरु वर्मा जी, प्लेट चाट जात हैं।

पिचके कनस्तर सौं, मुख लिए मिस्टर जी,
मौकौ पायकैं माल, खीसन में उड़ात हैं॥
गुप्ताजी गोयलजी, बसंल जी चोपड़ा जी हू,
तर माल देखत ही, लार कौ टपकात हैं।
नाम है वदनाम अरु अपनी करै कौन,
लोग अनखात हैं कि चौवे जी खात है॥

स्वागत है

आज कालि बैरत्न बढ़िवे कौ करि जतन,
मैया कौ गैया समुझि, छूछ करि जात है।
कैरियर बनि जाय, धंधौ कछु जमि जाय,
युक्ति सौं घर संपत, आपुनी बनात है॥
मैया वाप सौं कहैं, बैठै राम राम करौ,
मैया मरै, वाप ओल्ड होम में भिजात है।
मरे पै सिराध करै, बाँमन कौ नौत धरै,
बाम्हन कौं तऊ अनखाम के खुवात है॥

छड़े

छड़े कुँवारन की जितनी होय मजेदार,
महीना में आधे दिन ब्रेड खा रहत हैं।
पक्के गाहक होंय सिनेमा अरु थेटर के,
होटल में वेटर से मित्रता रखत हैं॥
देख पर नारी लाँबी, लार टपकायौ करै,
जेब में अभिनेत्रिन के, फ़ोटो लै फिरत हैं।
कमरा में घुसौ तौ सिरगिट के ठुड्ड मिलैं
पर कटे पंछिन सौं जीवन जियत हैं॥

वस की सवारी

घुसत धक्कौ खात, खड़े खड़े पग पिरात,
जेब कटिवे कौ लगौ, इतै भय भारी है।

भीड़ माँहि पिचे जात, बदबू सौं सड़े जात,
सीट दिखे लपक जात, काहे की भारी है॥
जगै जगै रुक गाय सवारी सौं भरे जाय,
बढ़ौ भयौ भाड़ौ देहु, कैसी लाचारी है।
जाकी कल कल हिलै, बूढ़ी ऊँटनी सी चलै,
जम की सवारी जैसी बस की सवारी है॥

मच्छर महिमा

दूर सौं भन्नात आत, देह से चिपट जात,
सिगरी रात काट काट देह सुजाई है।
आधुनिक जन समान,कान में सुनाय तान,
पाँव पड़ स्तुति कर बिनती सुनाई है॥
मौकौ देख काटि खात, लहू दिखे भागि जात,
स्वारथ बढ़ि जाबै तौ कैसौ मिताई है।
दिन में प्रभू कौ राज, जैसे ही पड़त रात,
मच्छर की सैन देवै, यम की दुहाई है॥

चिर कुमारी

बाप कौ न कहौ मान, कमाई करिबौ ठान,
अहम की पुतरिया, पिसती कमाती रही॥
घर न बसायौ नांहि, संतान सुख पायौ,
भाई भतीजे खिलाय मन घट लाती रही॥
सेज कौ न पायौ सुख, दमित वासना दुःख,
इतै उतै मौंह मार, काम वो चलाती रही॥
वय दालै कौन यार, भाभी नैं दिखायौ द्वार,
खंडर में स्नेह हीन, दीप सी जलाती रही॥

घूंघट वारी

घुंघटन सात छिप्यौ,ससि मुख एक,
देखन हित मिट गए न, पाए देख। 1।

इन घुँघटन को कहियत, माया जाल,
भेद सक्यौ है कोई, बड़ौ सवाल। 2।
देखै सुनै सो मिथ्या, मानौ कौन,
प्रेम विरह में पड़िबौ, जन की जौन। 3।
चलै तो ठोकर लगै, रक्त वहि जाय,
प्रबल वेदना होय, न भूली जाय । 4।
एक समै जो रुचिकर, लागै भोग,
वेई समै दूसरे देवैं रोग।5।
ग्रीसम सीतल वायु, भौत सुहाय,
वोई सिसिर ऋतु माँहि दुख दै जाय । 6।
याते जे जान्यौ मन, दुर्जम होय,
वो रचना करि मेटै, करि करि छोभ। 7।
सपने में भिक्षुक बन, माँगै भीक,
सपनों टूटै धनपति, धन के बीच। 8।
याते जो जा पाकै, मन के पार,
वोई देखन पावैं, रूप अपार । 9।
तबई समझ में आवै माया जाल,
और एक अखंडित व्यापक, जो दिक काल।10।
बिन देखे ही महें बे कछु नाँय,
देखत एकई रहत, दुई मिट जाय ।11।
घूंघट वारी की छबि, चहुँ दिस छाय,
पुस्प, सिसु मुस्कानन में, देखी जाय ।12।
विरहन के गीतन में, गावै गीत,
ऊपा की लाली में, लै मन जीत ।13।
या नागरि कौ रूप हि, रह्यौ समाय,
जैसे पय में लौनी, लखी न जाय । 14।
घसै रूप के लोभी, पथ दुख पाय,
पथ में ही रह जायें, को लख पाय ।15।
घूंघट सात उठावै, रूप लखाय

दरसन लोभी नयन ये, द्वारे टेर लगाय,
सात घूंघटा मुख छिप्यौ, तनिक झलक मिल जाय ।

दोहा कुञ्ज

विनय वीथि

कन कन की जानौं तुमहि, जग के सिरजन हार,
कैंसे मानूं खबर है, मेरी ना सरकार ॥1॥
करुना निधि तव कृपा कौं, कोऊ ओर न छोर,
पै सबई जे ई कहैं, पैलैं मेरी ओर ॥2॥
जबते प्रभु तुमने गही, या निरास की बाँह,
भयौ अंधेरे हीय में, जीवे कौ उत्साह ॥3॥
हौं निगुरौ मानों नहीं, तेरी कृपा अनेक,
हौं मांगत थाकूं नहीं, तुम न थकत हौ देत ॥4॥
तुम अपार संपति सकल,दैवें कूँ तैयार,
मोहि अचंभौ खिलौना मांग रह्यौ संसार ॥5॥
तुम ना देत अघात, हौं अघात ना माँगते,
बू ना भीक कहात, प्रभू पिता सों जो मिलैं ॥6॥
वैद्यराज हम जानिकें, दीनी नबज थमाय,
द्वार तिहारे आ पर्यौ,अब रोगी कह जाय ॥7॥
मुख से तोकों प्रभु कहैं,गुणनिधि दीनानाथ,
बखत परे फैलाबते, नर के आगें हात ॥8॥
कैसौ जे बिस्वास, कैसी सिरधा भक्ति जे,
रस से पूजें आस,जब तेरे बन बिक चुके ॥9॥
मेरे तेरे में फंस्यौ, कलपत जग बेहास,
गुरु पर चंद्र प्रकास ते, मिटे मोह जंजाल ॥10॥
सब जग जरतौं देख, हौं सोचूं कछु बच सकूं,
मिटी नाम की टेक, याई तें मन मैं लगी ॥11॥

प्रेम करत रोवत मिले, न करत मिल्यौ न कोय,
कोउ औडें, कोउ ऊथले, डूब मिले सब कोय॥ 12॥
प्रेम न करियो भूल कैं, जानें दई सलाह,
बुई प्रेममय है गई, मुख में गई समाय॥ 13॥
अँसुआ पलकन में रहैं,आह अधर के माँहि,
जी उमठै ऐसे किज्यों, वस्त्र निचौरो जाहि॥ 14॥
विना प्रेम अरपन नहीं, तातें प्रेमहु होय,
गंध विना पृथ्वी नहीं, तातें गंधहु होय॥15॥
रोम रोम प्रेमहि बसै, जल में लौ न समाय,
को प्रेमी को प्रेमिका, को कहि सकै बताय॥ 16 ॥
प्रेम हिये में होय तौ, कैसें कछु लुटि जाय,
कपट,कुचाली,चातुरी, का कहिकें बहकाय॥ 17॥
हियरो जब गुन गात है, प्रेम कहावै सोय,
मुख पै गुन गन गाइबौ, जंबुक कौ गुन होय ॥ 18॥
लिख भेंजू, मुख ते कहूँ, हिय की पीर विसेस,
याहि सोचते, सोचते ,सेत है, गए केस ॥ 19॥
सहस ससिन तें वढ़ सुनी, मुख श्री सुंदर तोय,
बिन देखे मार्‌यौ फिरौ, देखोंगो का होय ॥ 20॥
विना पते ही खोजते, इहौ उहौ हौ गाँव,
जाकौ हौ प्रेमी सुनौ, ताही को पतियाँव॥ 21॥
धूल फांकते गैल की, ढोवत तन कौ भार,
सांझ भई मैं आ पर्‌यौ, खोलो अपनौ द्वार॥ 22॥
भीक दरस की मांगतौ, च्यों उपदेसौ मोहि,
पेट न सिच्छा से भरै, दरसन ते सुख होय ॥ 23॥
बड़ौ मजौ तुम लै रहै, मेरो हिया जलाय,
अपनौ हिय पजरै जबै, पीर समझ में आय ॥ 24॥
तुम बिछुरे गल बाँह कर, पीर दै गए मोय,

दरसन लोभी नयन ये, द्वारे टेर लगाय,
सात घूंघटा मुख छिप्यौ, तनिक झलक मिल जाय ।

दोहा कुञ्ज

विनय वीथि

कन कन की जानौं तुमहि, जग के सिरजन हार,
कैंसे मानूं खबर है, मेरी ना सरकार॥1॥
करुना निधि तव कृपा कौं, कोऊ ओर न छोर,
पै सबई जे ई कहैं, पैलैं मेरी ओर॥2॥
जबते प्रभु तुमने गही, या निरास की बाँह,
भयौ अंधेरे हीय में, जीवे कौ उत्साह॥3॥
हौं निगुरौ मानों नहीं, तेरी कृपा अनेक,
हौं मांगत थाकूं नहीं, तुम न थकत हौ देत॥4॥
तुम अपार संपति सकल,दैवें कूँ तैयार,
मोहि अचंभौ खिलौना मांग रह्यौ संसार॥5॥
तुम ना देत अघात, हौं अघात ना माँगते,
बू ना भीक कहात, प्रभू पिता सों जो मिलैं॥6॥
वैद्यराज हम जानिकें, दीनी नबज थमाय,
द्वार तिहारे आ पर्‌यौ,अब रोगी कह जाय॥7॥
मुख से तोकों प्रभु कहैं,गुणनिधि दीनानाथ,
बखत परे फैलाबते, नर के आगें हात॥8॥
कैसौ जे बिस्वास, कैसी सिरधा भक्ति जे,
रस से पूजें आस,जब तेरे बन बिक चुके॥9॥
मेरे तेरे में फंस्यौ, कलपत जग बेहास,
गुरु पर चंद्र प्रकास ते, मिटे मोह जंजाल॥10॥
सब जग जरतौं देख, हौं सोचूं कछु बच सकूं,
मिटी नाम की टेक, याई तें मन मैं लगी॥11॥

प्रेम करत रोवत मिले, न करत मिल्यौ न कोय,
कोउ औडें, कोउ ऊथले, डूब मिले सब कोय॥ 12॥
प्रेम न करियो भूल कैं, जानें दई सलाह,
बुई प्रेममय है गई, मुख में गई समाय॥ 13॥
अँसुआ पलकन में रहैं,आह अधर के माँहि,
जी उमठै ऐसे किज्यों, वस्त्र निचौरो जाहि॥ 14॥
बिना प्रेम अरपन नहीं, तातें प्रेमहु होय,
गंध बिना पृथ्वी नहीं, तातें गंधहु होय॥15॥
रोम रोम प्रेमहि बसै, जल में लौ न समाय,
को प्रेमी को प्रेमिका, को कहि सकै बताय॥ 16॥
प्रेम हिये में होय तौ, कैसें कछु लुटि जाय,
कपट,कुचाली,चातुरी, का कहिकें बहकाय॥ 17॥
हियरो जब गुन गात है, प्रेम कहावै सोय,
मुख पै गुन गन गाइबौ, जंबुक कौ गुन होय॥ 18॥
लिख भेंजू, मुख ते कहूँ, हिय की पीर विसेस,
याहि सोचते, सोचते ,सेत है, गए केस॥ 19॥
सहस ससिन तें बढ़ सुनी, मुख श्री सुंदर तोय,
बिन देखे मार्‌यौ फिरौं, देखोंगो का होय॥ 20॥
बिना पते ही खोजते, इहौ उहौ हौ गाँव,
जाकौ हौ प्रेमी सुनौ, ताही को पतियाँव॥ 21॥
धूल फांकते गैल की, ढोवत तन कौ भार,
सांझ भई मैं आ पर्‌यौ, खोलो अपनौ द्वार॥ 22॥
भीक दरस की मांगतौ, च्यों उपदेसौ मोहि,
पेट न सिच्छा से भरै, दरसन ते सुख होय॥ 23॥
बड़ौ मजौ तुम लै रहै, मेरो हिया जलाय,
अपनौ हिय पजरै जबै, पीर समझ में आय॥ 24॥
तुम बिछुरे गल बाँह कर, पीर दै गए मोय,

तबते मैं महकौ फिरों, बिछुरन ऐसो होय ॥ 25 ॥
साँझ भई कब आबुगे, बाट तकों नित तोर,
नित खग लौटे नीड़ कौं, नित मम हिये मरोर ॥ 26 ॥
प्रेम नेम जानौ नहीं, प्रीतहु राखौ गोय,
कठिन परिच्छा लेय कैं, कहा मिलैगौ तोय ॥ 27 ॥
तुम तौ दावौ करत हे, लै जाओगे पार,
आछे केवट बने हो, नाव फँसी मँझधार ॥ 28 ॥
मोहि अकेलौ छोड़ कैं, देखो तुम मत जाव,
अबई नेह की गैल मे, मैंने डारौ पाँव ॥ 29 ॥
जीवन के जा मोड़ पै, मोहि साथ की चाह,
ताही पै तुम सजि भजे, जे है कैसौ साथ ॥ 30 ॥
जीवन भर लागी रही, ऐसी भागम भाग,
याद तिहारी आइ ही, बाँटि न साके बाँट ॥ 31 ॥
तोते मिलबे की रही, मन में सदा मरोर,
चला चली ऐसी लगी, भूल गयो तुव खोर ॥ 32 ॥
प्रीत सच्च को करत है, करैं प्रेम व्यौपार,
खींरा खपिया सी जुड़न, कहें कुसल व्यौहार ॥ 33 ॥
ऐसे ठाड़े हो कहा, नैंकु तौ नैन मिलाव,
कौल बड़ौ लाँबो कियौ, तनिक याद आ जाय ॥ 34 ॥
नाम अधर जिय जगत में,जे तौ प्रीत न होय,
कुलटा पति सेवा करै, ध्यान परायौ होय ॥ 35 ॥
नैन नचाय, रिझाय हिय, मार्जारी सी घात,
तब तक मन ऐसो मर्‌यो, कोऊ नाँय सुहात ॥ 36 ॥
जा दिन ते तुमनैं दई, नेह तोड़ हिय चोट,
तब ते जानै च्यों लगै, हर नीयत में खोट ॥ 37 ॥
इतनौ मान न तुम करौ, नाहिं क्रूरता भात,
रूप बुई छबि कौ लखत, नैना नाँय अघात ॥ 38 ॥
मत इतराऔ, रूप जे, जोबन जे सिंगार,
ऐसो ज्वार मिल्‌यौ नहीं, जाकौ नाँय उतार ॥ 39 ॥
जे तो अच्छौ ही भयौ, साफ है गई बात,

रोलिंगे कछु चैन सौं, सोएंगे भर रात॥ 40॥
प्रेम दर्द मीठौ अहै, जा हिय प्रेम यसाय,
कहि न सकै, पै कहे विन, जी उमड़्यौ ही जाय ॥ 41 ॥
वानी में रस अर्थ कौ, सहज न निसरन होय,
तौ, समझौ, वाजीगरी, शब्दन कौ वध होय॥ 42॥

जीवन दरपन वीथि

जे जग है ऐसो विकट, जो दिखलाए राह,
बोई पहैलैं राह में, पत्थर को रखि आय॥ 43॥
हम सोचत वरसात सौं, धुल जाएंगे द्वार,
पै जे का उलटौ भयो, काई जमी अपार॥ 44॥
जो चुपके से कहत है, आँधी गई विलाय,
बेई नैया भँवर में, चुपके दै खिसकाय॥ 45॥
दीप सिखा वरि वरि करै, सिगरि रैन उजियार,
भोर उजारो वाहि कौ, देवै रूप विगार॥ 46॥
जव दिन विगरें कोउ के, कोऊ छोड़त नाँय,
जाको वस चलि जात है, वोई लात लगाय ॥ 47॥
समै समै की वात है, समै विगड़ जव जाय,
वूढ़ो होवे केहरी, जंबुक आँख दिखाय॥ 48॥
इत्तै धोखे खायतौ, काकौं हियौ दिखाय,
कोऊ को अपनो कहत, अव तौ हौं सकुचाय॥ 49॥
भरे भए कौ सब भरें, निर्धन [illegible] न [illegible],
आज कालि घन हू करें, हरिया पै वरसात॥ 50॥
दाता कौ दिल देखिकैं, [illegible] करकैं [illegible],
नंगो का कहि देयगो, भूखे कौं [illegible] ॥ 51॥
मरने वारे मर गये, [illegible] परे कराह,
रेल पलट गई, [illegible] ॥ 52॥
कहा विनय, का शिक्षा, [illegible] सुनै [illegible],
इहाँ बाँसुरी को सुनै, सबै सुनावें [illegible]॥ 53॥
दगाबाज सुनिकैं सबद, [illegible]

बात तुमारी नाँय है, जे है जंग व्यौहार॥ 54॥

सत्यमेव सबई कहैं, सत्य न पूछौ जाय,
या युग में सच कहे ते, कोउ ना पतियाव॥ 55॥

हौं जानों तौ में हतै, मोते नेह न नैंक,
संग संग चलनौ परै, धर मूरख कौ भेख॥ 56॥

आजकालि को करत है, निश्छल सच्चौ नेह,
साथ निभानौ ही परै, काल चक्र गति देख॥ 57॥

हम जानें सहचर कछुक, बनै चतुरता खान,
साथ हमारे चलत हैं, हमें मूर्ख अनुमान॥ 58॥

आज मित्र औ सत्रु की, बिगरि गई पहचान,
बिनको हँस करिबौ जुलम, लगै कृपा सी जान॥ 59॥

दीख क्रूर मुख पै रही, याके जो मुसकान,
जे कपोत बध में निपुन, लागै क्रूर सचान॥ 60॥

मुँह सीकें मूरत बनौ, बैठो करै न बात,
जे जन नाहीं कर कतल, धोतौ होगो हात॥ 61॥

आपत बदरा घिरैं जब, कोऊ न होत सहाय,
नैया डूबत देखिकैं, केवट हू तजि जाय॥ 62॥

दुक्ख जलाए जीव कौं, पै दे दृष्टि अपार,
विपत परे पै परखिये, कैसे कित्ते यार॥ 63॥

लकुटि बुढ़ापे की समझि,सुतहिं सुराहै लोग,
त्रिया देख, लकुटी भजैं, लगै बुढ़ापौ रोग॥ 64॥

जोबन अरु कर्त्तव्य की, जब जब बिछी बिसात,
कर्त्तव्य तौ हारौ मिलौ, जीत जवानी जात॥ 65॥

जे दुख तौ ल्हौरो लगै, लुटि गयौ बीच बजार,
असल दुक्ख तौ, लूटिबे बारे हे सब यार॥ 66॥

भीख मांगबे आय हौं, तुम पूछो मैं कौन,

भीखन काने कहाँ ते, करवाऊँ में फोन॥ 67॥
बदल गयौ जग कौ चलन, बदलौ सब ब्यौहार,
बिना सिफारिस भीक हू, मिलनी है दुस्वार॥ 68॥
जे गिद्धन कौ भोज है, सबहिं लूट कैं खात,
थम कछु जिय संतोष रख, कोऊ न भूखौ जात॥ 69॥
जब चाहे, पूछे विना, चक्कर चार लगाय,
कूकर लौं ठाड़ौ रहै, टुकड़ा कौं ललचाय॥ 70॥
वो उपयोगी जानकैं, नित्ताई नेह बढ़ाय,
मतलब निकलैं, मिठाई डिब्बा सों तजि जाय॥ 71॥
ऐसे कूकर जनन कों, टूक न डारौ भूल,
हँसि खाए, निंदा करें, पीठ चुभावें शूल॥ 72॥
चुप रह, आपुनि योग्यता, काकों रह्यौ दिखाय,
सुनिबौ, समझ, सराहिबौ, या जुग कौ न सुभाय॥ 73॥
आपुनि आपुनि विपति तो, जानै है सब कोय,
दरद छिपाकैं हँस सकै, मरद कहावै सोय॥ 74॥
अरि कैसौ हू प्रबल हो, मन नाहीं भय खात,
अपनन के षड्यंत्र ते, जिय निस दिन थर्रात॥ 75॥
छुरी मारकैं पीठ में, जो न सहज मुसकाय,
नये जमाने कौ मनुज, ताहि न मानों लाय॥ 76॥
वन में रोओ, का मिलै, कौन सुनै आवाज,
समुझै कौन विवेक को, भयौ भीड़ कौ राज॥ 77॥
सीख अरु उपदेस की, जो झर बाँधे जाय,
वानै कछु ऐसो लगै, दरपन देख्यौ नाँय॥ 78॥
कबहुँ कबहुँ, ह्वै जात है, ऐसे जन कौ साथ,
हिय रोवै, फड़के नयन, करि न सकै मुख आह॥ 79॥
कैसौ जग व्यौहार, कोउ नाय बक्सै इहौ,
वोई देय पछार, नैंक चूक लेवै पकरि॥ 80॥

सुनहु कपोती जगत में, सबई नाहीं बाज,
गौरैया सुक सारिका, इनकौ जोरि समाज॥ 81॥
कोऊ आँधी करि सकै, मेरो कहा बिगार,
मैं अपनौ दीपक स्वयं, कर बैठौ निस्सार॥ 82॥
जब लौं लक्ष्य न मिल सकैं, पंथी मत सुस्ताव,
कबहुँ किनारे के निकट, डूबत देखी नाव॥ 83॥
मंदिर तीरथ दूर हैं, जानैं कब जा पाँय,
तब लौं दुखि अँखियान के आँसू पोंछे ज़ाँय॥ 84॥
कहा काम कौ बुद्धिबल, अरु तरकन की छाँह,
विपत पराई, बिथा सुन, पलक भीज ना पाँय॥ 85॥
पर निंदा करनी सरल, को अपनो मन पेख,
जो चबाव को मन करै, दरपन में मुँह देख॥ 86॥
हौं मानौं गलती भई, तुम दीनन के नाथ,
अपनौ ही जन जानिकैं, नाँय गिनौ अपराध॥ 87॥
टेर लगाते ही रहौ, निज कों जान अनाथ,
वो दाता, दुख भंजना,कबहुँ करै सनाथ॥ 88॥
गाए जा मन गती सौं, विपति बिदारन होय
मौत कराली आयगी, च्यों ताकों नित रोय ॥ 89॥
मौत जनम संग लगी है, कहँ लौं जइये भाग,
जगत रहसि आवै समुझि, तबै मीत सम लागि॥ 90॥
ज्ञान,ध्यान औ तरक सौं, जगत न मिथ्या होय,
हरि गुरु की करुना बिना, रहसि न समझै कोय॥ 91॥
तट पै ठाड़े कहत हौ, कित्तौ गहरौ ताल,
डूबौगे तौ मिलैगौ, गहराई कौ हाल॥ 92॥
मानो फूटी आँख ते, हमें न कोऊ भाय,
हाथ मिलावे में कहां, हमरो है घटि जाय॥ 93॥

जाने जीवन पर कियौ, काँटिन सौं निरवाह,
वो संध्या में च्यो करै, फूलन की परवाह॥ 94॥
जाने परहित में सही, है पत्थर की मार,
वो साहिब कौ कीजिये, फूलन सौ सिंगार॥ 95॥
घुरौ लगी, जब सुपन सब, बिखर गए छिन माँहि,
आँख खुले कौ सुक्ख तौ, मुख ते कह्यो न जाय॥96॥
नेह करत, कहते भए, नेही मिले अनेक,
सब में आपनिई झलक, हम तौ फाए देख॥ 97॥
तन की मन जी विपति नैं सदा कीन गलवाँह,
खग सिसु सी मोकों मिली, पिय पंखन की छाँह॥ 98॥
दुख तौ जीवन से लग्यौ, नित काहे कों रोय,
सुख काजै दै सुकरिया, नित्त कर रत होय ॥ 99॥
जो चुप्पौ बन रहतु हैं, नेक नाँय मुसकाय,
वाते बच चलिबो भलो, जाने का कर जाय॥ 100॥
जीवन भर अमुआ दिए, अब छाया दै पाय,
त्रिभुवन बूढ़े वृच्छ कूँ, काह रहे कटवाय॥ 101॥
आप पधारे भवन में, दुति कौ भयौ विस्तार,
या घट में कब भई ई , ऐसी प्रभा अपार॥ 102॥
साथ हमारौ छोरि देहु, वृथा बनेगी बात,
जग पूछै, का कहोगे, कौन चल रह्यौ साथ॥ 103॥
मेल बढ़ावत ही रहौ, गोप रखौ सब ज्ञान,
ज्ञानी पूछैं ज्ञान कौं, लोग विसै मुसकान ॥ 104॥
देख सुनौ, पै सब कछू, नाँय कहन के जोग,
कही बात का रूप लै, मूड़ पिटावै तोर॥ 105॥
लड़नौ तौ तलवार सौं, मत फेंको तुम म्यान,
कोऊ समै म्यानहु करै, डरपावे कौ काम॥ 106॥
थोड़े से जस मान ते, मान न जिय मे मोद,
रवि ससि से कवि है गये, तू का है खद्योत॥ 107॥

मोहि संत जन मानिकैं, मत छूऔ जे पाँव,
अपनौ जैसौ देखिकें, कहुं सिरधा घटि जाय॥ 108॥
हम प्रतिम्बिति होंय, ये जग निरमल आरसी,
प्रेम घृणा,सथ कोय, हम देखें हमई दिखें॥ 109॥
काम अगिन की टेक, मिटै न क्रोध, न मोह मद,
उपजै नहीं विवेक, जब लौं सद्गुरु कृपा ते॥ 110॥

वीर

(1)

सिद्ध सफलता देखिकैं सब बनि जाएं वीर,
घिर्यौ इकल्लौ देखिकैं को न बनै रणधीर,
को न बनै रणधीर कसक कै हाथ चलाए,
मारे गारी देय मौत कौ स्वाद चखाए
त्रिभुवन अरि बस परे कहत है ताकौ भैया
रोए कसमें खाय कहै मैं तेरी गैया॥

(2)

देश,धर्म, सम्मान हित, जो भिड़ जावै वीर
आपुनि चिंता बिन किए युद्ध करै रणधीर,
बालक अबला वृद्धन पै नहिं हाथ उठावै,
युद्ध करैं रणधीर, निबल कों नाँय सतावै.
लड़ियन कौ दल देखिकैं लड़ै सिंह सो वीर
दल बल हुंकारे भरै, थे काहे के वीर?

(3)

बँधी दलाली देखिकैं हरष करैं व्यौपार,
बिना हानि, बस नफा कौ राखें सदा विचार,
लाभ परायौ देखिकैं बरैं न जोखिम लेंय,
दल्ला व्यौपारी बने, लल्ला में रुचि लेंय,
बोई वीर बोई बाजिक है जो कछु जोखिम लीन
पिया दरस तब पाइये सिर कौ सौदा कीन॥

(4)

ये जीवन संग्राम है, कसकें तेग चलाव,
दुख–सुख मान अमान तें तनिक नाँय घबराव,
काम न काकौ मन हरै, क्रोध न अगनि लगाय
लोभ न टुकड़ा डारकैं, काकौ मन ललचाय,
हार जीत पै सम रहै, हँस हँस झेले पीर,
नाहिं विवेक तजि, हरि भजै, सो कहलाए वीर॥

छंद मुक्त कविताएं

अल्हड़ वसंत

जे तूने कहा कियौ,
ओ, अल्हड़ बसंत,
कैसी रंग भरी पिचकारी, छिड़क दई
पुष्पन पै, पलासन पै,
जि कर दियौ सारौ निसर्ग हू बहुरंगी,
मैं तौ देखतौ ई रहि गयौ, निस्तब्ध,
पै जे कहा भयौ!
तू तौ अल्हड़ कौ अल्हड़ ई रह्यौ,
पर मैं बूढ़ौ है गयौ।

वसंत आय गयौ

नीले नैन खोल कचनार महकी,
कोयल पिंहकी
प्रौढ़ भई कोयल की पायल बजी छन छन,
हाय! अब कोऊ देखे तक न,
भूरे भए गेहूँ के बाल,
हाय! ऋतुराज वस अन्त आय गयौ,
बसन्त आय गयौ।

सुख–दुख

सुख के दिन,
नखरैल जमाई से,
नठै नठै आवैं,
आवैंहू तौ थोड़े छिनन कौं
हल्ला कर, रौब दिखायँ,
चट से खिसक जाएँ
कौन जानै कितकों
दुख के दिन
जानै कौन सौं नाम पूछ
आय धमकत हैं, पौरी में बिन बुलाए मेहमान
कित्तौ ई पल्लौ झारौ,
जाइबे कौ लेत नाँय नाम,
उठत–बैठत मुख सौं निकसै,
हाय राम।
हाय राम॥

स्वामिभक्त

छोटौ सौ स्वान पुत्र,
हरिक राह गीर के,
हरिक पथ गामी के,
पावन कौं सूंघत है,
पीछे लग जातु है,
वर्जन अरु ताडन सों,
खीसें दिखात है, खूब दुम हिलात है,
चिकय सौ जात है,
सोचतु है,
जब जे घर पहुँचैगौ,
मेरे दुम हिलाइबे ते,

कूं कूं कर गिडगिड़ाइबे ते,
कछु टुकड़ा डारैगौ,
आपुनौ बनायगौ,
अरु मैं याकौ कुत्ता बन,
खूब गुर्राऊंगौ,
आइबे जाइबे वारे को स्पष्ट बताऊँगौ,
टुकड़न की स्वामिभक्ति,
ऊँची है, सच्चे स्वाभिमान ते,
न्याय ईमान ते, मान अपमान ते।

सयानौ

गाँव कौ सियार
सहर माँहि आयौ,
सोच रह्यो,
भौत मैं सयानौ हूँ,
भौत तिकड़म वारौ हूँ,
छलांग लगाऊंगौ,
कटघर माँहि घुस जाऊंगौ,
खूब गोस्त खाऊँगो,
सहरी, कुत्ता, कुत्तीन कूँ,
खूब छकाऊँगौ
पै जे का भयौ !
सहर के गोस्तखोर,
चालवाग ,
सधे सधाए कूकरन
सपट फाड़ खायौ
गाँव कौ सियार सहर में आयौ।

हम सब

बड़ी घोर घुटन है,
भौत डर लगै है, बात तक करिबे में,
हँसबे, हँसाइबे में,
हम सब, बाबू मिस्टर,साहब, श्रीजुत,
नामधारी श्रेष्ठजन,
ऊपर ते नीचे तक कलफ लगे से हैं जे,
बोलत हैं मीठो मिस्री घोर घोर,
सजी भई नुमाइस है, सुरुचि सद्‌भावना की,
मजे कलाकार है भावन के प्रदरसन में,
बैसे तौ गाढ़ी मित्रता कौ दावौ करै,
परन्तु जब आपने स्वारथ पै आवै आँच,
आँख में गड़ै पराए की प्रगति जब,
छुरी घोंप देत हैं चुपके सौं पीठ में
अरु ऐसौ विल्लाप करें,
जैसे अपनौ कोऊ सगौ हू गयौ होय मर,
रोय रोय चुपके सौं
वाकी अंत्येष्टि की तैयारी करबे लगें,
मुस्करायकर।

जानौ कित ओर

चहुँ ओर उठि रह्‌यौ संसय ग्रस्त सोर,
जानौ कित ओर हमें, जानौ कित ओर,
चहुँ ओर बाज रही तुरही नई नई,
नई नई ढपली अरु रागनी नई नई,
सबहि दमभर लाएंगे भोर
सताय रई सबहिं कौं, नामवरी की फिकर
नित्त नए बोध कौ अर्थ से कारै जिकर
सबहूँ कों बाँध रही संसय की डोर

चले बिन थकि रहे, सबई के पाम,
अनजाने से लागि रहे अपने ही गाम,
बिना श्रम स्वर्ग के सपने सब ओर
दिसाहीन खेंच रहे, हवा माँहि चाप,
निज के हीन भावन कों युक्ति के ढाँप,
कीचड़ कूँ कहि रहे गंगा की कोर
जानौ कित ओर हमें जानौं कित ओर

बरखा गीत

रितु आई बरखा की आए न साँवरे,
गोरी के गीतन कौ सूनौ है गाम रे

सहमी सी मैके से पुरवैया आय गई
सजनी,सहेली सी तीतरिया छाय गई,
भूल गए बाबुलवा, बिफर गए बीर रे
मैया का जाने, बिटिया की पीर रे,

मतवारे नावें घन बिजुरी के गान रे
कौन संग नाचूं ओ मेरे घनस्याम रे

सपरी तुमारी तौ आँगन में फूल रहो,
गोद भरे बेलरिया महुआ की झूम रही,
अमुआ ते टपके की दी है ज्यौनार रे
भँवरारी जामुन की झूमी बहार रे,

लौट लौट आए सब परदेसी गाम रे
कगुआ उड़ाते मैं हार गई साँवरे

गली गली गूंज रई कजरी मल्हार है
चूनर कौ, मेंहदी कौ घर घर त्यौहार है,
चूनर जो लाए तुम पहनी न जाय रे
ढोलक बिसूरे कि आल्हा कौन गाय रे

पाती की आवे की, पूछैं सब गामरे
आयकैं बता दै, तू बावरे।
रित आई बरखा की॥

थिरकेंगे श्यामल घन

पिहको मत कोयलिया अँबुआ की छाँव में
संदेसौ भिजवाऔ पुरवा के गाँव में

अबहुँ तौ निभौरी नैं चुपके से बतरायौ
भँवरारी जामुन तौ औचक गदराय गई
सपड़ी जो बैठी ही, मन मारें झुकी–चुझी
पायकै घन परस इठला पुष्पाय गई

आवारा पवन हू रवैया बदल करि कै,
सहमौ सौ चलि रह्यो दवे दवे गांव में

सुन्यौ आज प्राची के इंगुराए आंगन माँहि
लाल ओढ़निया पहिर बेड़निया नाचैगी
दादुर के छोकरा ता तरियाँ बजाइंगे
बीन लैकैं वायु हू मल्हारै गाएगी,

कोयल ने अंबुआ को चुपके से बतलायौ
थिरकेंगे श्यामल घन बिजुरी के गाँम में

फूलन पै, पत्तन पै, कुम्लाए, विटपन पै,
रिमझिम को मतवारौ जादू छा जायगौ
पीपर के पत्ता पर मोती सो ढुलकेगो,
हार सिंगार खिलौ, जग कौ महकायगौ

दहकैगौ पीरोपन कादम्बिनि पुलकन में,
महकैगौ एक गीत कदम की छाँव में

पिहको मत कोयलिया॥

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
53, विद्या विहार कॉलोनी
उत्तरी सुन्दरवास, उदयपुर (राज.) 313001
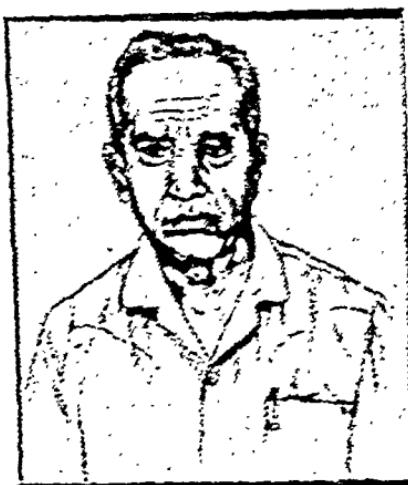
जमुना किनारे गाँव, सिघावली है सुरम्य,
जनमों जहाँ पै राम गोपाल दिनेस है।
प्रकृति के गीत गाए, लोकगीत लिखे खूब,
सबसौं निभायौ नेह, काहू सौं न द्वेस है।
साहित्य सुसाधन में, ग्रन्थन पै ग्रन्थ रचे,
मातु भारती कौ हित, हिय में हमेस है।
आराधक है दिनेस, व्रज की वसुंधरा कौ,
व्रज माधुरी कौ प्रिय, साधक विसेस है।

परिचै

नाम	:	डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' मिश्र
जन्म स्थान	:	सिधावली त. वाह जि. आगरा (उ.प्र.)
जन्म तिथि	:	5 जुलाई, 1929
पिता कौ नाम	:	पं. कन्हैयालाल मिश्र
माता कौ नाम	:	श्रीमती सीपा दुलारी मिश्र
परिवार	:	द्वै पुत्र, तीन पुत्री
व्यवसाय	:	शिक्षण कार्य
प्रकाशित ग्रंथ	:	सारथी, मधुरजनी, जलती रहे मशाल,अहं मेरा गेय, साक्षी है सूर्य, विश्वज्योति,एवं आदि 18 काव्य है।
अप्रकासित ग्रंथ	:	दिनेस दोहावली
वर्तमान पतौ	:	53, विद्या विहार कॉलोनी, उत्तरी सुन्दरवास उदयपुर (राज.) 313001

डॉ. रामगोपाल शर्मा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

—श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

संसार विष वृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे,
काव्यामृत रसास्वादः संगतिः सुजनै सह।

जे दोऊ अमृतोपम फल जो एकई ठौर प्राप्त है जाँय तौ समझौ सोने माँहि सुहागौ। दिनेस जी की व्रजभासा कविता कौ आस्वाद कछु ऐसौई है। आपके कृतित्व माँहि आपकौ सज्जन, सहृदय,संवेदनसील, विद्याव्यसनी व्यक्तित्व सर्वत्र प्रतिविम्बित होतौ दिखाई परै। ऐसी कलम सौं जो रचना प्रवाहित होय बू स्वभावतया स्वान्तः सुखाय के संगई वहुजन सुखाय अरु वहुजन हिताय होय है। आपकौ काव्य सहृदय कौ मनोरंजन करै अरु मार्गदर्सक कौऊ काम करै। पाठक कूँ सत्य के प्रति जागरूक करै, सिवत्व अरु सौन्दर्य के गुनन कौ आनन्द हू प्रदान करै। दिनेस दोहावली के अन्तिम छोर पै वानी जगरानी व्रजभासा कूँ सव भासान में 'मधुरतम' अरु 'सिरमौर' वतायौ गयौ है –

सव भासनि में मधुरतम, व्रजभासा सिरमौर।
वंसी के सुर में सनी, रंग राधिका गौर॥

भेंट वार्ता माँहि कवि नैं कह्यौ है कै व्रजभासा विनके घर में बोली जावे वारी 'माँ की वोली है।' व्रज अंचल माँहि जनमे, पले वढ़े दिनेस जी कौ गाँम जमुना किनारे ही, जहाँ के करारे,टीले,घने जंगल,जमुना की सुन्दर कछारें विनके वचपन अरु किसोर जीवन की क्रीड़ास्थली रही। व्रज–कविता हू यहीं अंकुरित्त भई। सवसौं पैलैं (1942 में) वटेसुर के मेला में पचास हजार श्रोतान के वीच अपनी व्रजभासा

कविता कौ पाठ कियौ जासौ विशाल भारत के सम्पादक पं. श्रीराम शर्मा भौत प्रसन्न भये। बिनकी प्रसंसा कवि के जीवन कौ पाथेय सिद्ध भई। उत्साहित हैकैं दिनेस जी नैं ब्रजभासा में फुटकर कविता, दोहा, गीत आदि लिखे, पै बाबू गुलाबराय की राय सौं खड़ी बोली की बिविध विधान मेंहू रचना करबे में प्रवृत्त भये।

अनेक उपाधीन सौ मंडित डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश साहित्य रचना क्षेत्र माँहि बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कविता, कहानी, नाटक, सोधग्रंथ, आलोचना, पाठ सम्पादन आदि के रूप माँहि जो उत्कृष्ट साहित्यिक सेवा आपनैं करी बाके तॉई अनेक पुरस्कार प्राप्त भये। मान सम्मान के अंबार लगि गए। प्रतिष्ठित पुरस्कारन की सूची देखिकैं कोऊ भी प्रभावित भये बिना नाँय रहि सकै।

ब्रज अंचल के विभिन्न स्थान आपकी कार्य स्थली रहे है अरु उदयपुर मेऊँ आपकी ब्रजभासा सेवा निरंतर जारी रही है। अपने उदयपुर प्रेम कौ भेद बताते भये कवि नैं कह्यौ है–'नाथद्वारा में श्रीनाथ जू के दर्सन करिकैं ब्रजवास कौ आनंद मिलन लगै।' ब्रजचंद अरु ब्रज संस्कृति के पुजारी दिनेस जी नैं सुरति मिश्र के ग्रंथ समेत ब्रजभाषा के कुल 18 ग्रन्थन कौं पाठ सम्पादन समालोचन आदि कियौ है। ब्रजभासा कूँ समझिबे बारे छात्र तैयार करे हैं। हिन्दी की अस्मिता कूँ अक्षुण्ण रखबे के काजैं ब्रजभाषा अरु राजस्थानी की रच्छा अरु उन्नति कौ महत्व समझायौ है। जा तरियाँ अपनी माँ की भाषा ब्रजभाषा कौ रिन, उतारिबे कौ सफल प्रयास कीनौ है।

दिनेस दोहावली

व्यक्तिगत अरु सामाजिक अनुभवन की संचित रासि ही इन दोहान कौ उत्स है। अपनी रचना प्रक्रिया के अन्तर्गत कवि नैं बतायौ है "काव्य सहज ऊपजै पै यासौं पैलैं सामाजिक अनुभव प्राप्त करे जाँय," पाछैं कविता प्रवाह रूप में बहि निकरै। कोरी कल्पना के आधार पै जो कविता रची जाय बू अपने उद्देस्य सौं भटक जाय। संगीत चित्र आदि कलान के समाबेस सौं कविता कौ सौन्दर्य अरु आकर्सन बढ़ै, तौ जीवन दर्सन बाय सोद्देस्य बनावै–ऐसी कविता ही सार्थक होय। इन दोहान माँहि काव्य कला अरु उपदेस कौ ऐसौ मणि कांचन संजोग है, अनुभूति अरु अभिव्यक्ति कौ ऐसौ उत्तम समन्वय हैकैं आस्वाद अत्यंत आनन्ददायक है जाय। सहृदय पाठक भाव अरु संदेस कूँ आत्मसात् करतौ चलौ जाय–भावामृत कौ पान करि बू तृप्ति कौ अनुभव करै। बाके मन कौ खालीपन अरु खोखलौपन भरि जाय अरु कवि के उद्देस्य की पूर्ति

है जाय। ऐसे कवीन की अरु गुनग्राही पाठकन की संख्या बढ़ै तौ समाज माँहि सुख-सान्ति स्थापित है जाय।

जा सतक माँहि बड़ी संख्या में ऐसे दोहा हैं जो "देखन में छोटे लगैं" पै अर्थ गांभीर्य परत दर परत उजागर होतौ चलौ जाय। विसेसकर चित्रन अरु बिंबन के माध्यन सौं कवि अपनौ अभिप्रेत प्रेषित करै, फिर बात चाहै ज्ञान बैराग की होय, धरम नीति की होय, सामाजिक उत्थान की चिन्ता होय, ढोंग वितंडावाद की भर्त्सना होय या पर्यावरण प्रदूसन की समस्या होय, कवि कौ संदेस अरु अभिव्यक्ति मन में गहरे पैठि जाँय।

जे दोहा मुख्यतः मुक्तक रूप में हैं। कहूँ कहूँ विसयानुसार समूह हू हैं। कई विसै बारम्बार आये हैं। जे वे समस्या हैं जो कवि के मन पै छाई हैं, बू चोट है जो छिन छिन कसकै-फिरि फिरि दोहान में बहि निकरै जैसै-प्रवासी पूत, स्वार्थी संतान, बूढ़े जननी जनक की व्यथा, विनकौ अकेलौपन। जो इन समस्यान के काजैं जिम्मेदार हैं उन्हें जगायौ गयौ है। चेतायौ गयौ है।

कवि नैं सतक के अन्त में दोहा में लिख्यौ है।
जो लिखनौ सो लिखि चुक्यौ, आगे लिखनौ व्यर्थ।
अब तक जो मैंने लिखौ, समुझि वाहि कौ अर्थ॥

जे दोहा मानौं भारी भरकम सतसई लिखन वारेन कूँ जो हलके फुलके 13-11 के दोहरे रचत चले जाँय अरु अर्थ अभिव्यक्ति अरु संदेस की परवाह नाँय करैं, एक इसारे ते समुझाय रह्यौ है। मंगलाचरण,ईस वन्दना के रूप में आरंभ में कछु दोहा लिखे हैं। पैलौ दोहा देखौ:-

सिव-दुर्गा-गनपति सहित, रमैं हृदय श्री राम।
सीस जानकी-चरन-रज, मन में राधा-स्याम॥

दोहा छंद की कसावट कौ अनुभव कराते भये, सात देवी-देवतान के प्रति भक्ति भाव प्रकट करते भये, तुलसी की परम्परा माँय सैव-वैस्नव समन्वय भाव कौ समर्थन हू कर दियौ गयौ है। आगैं पवन पूत, वीनावादिनी, दस भुजा दुर्गा कौ स्तवन करिकैं सर्वदेव प्रार्थना सौं सतक आरंभ कीन्हौ है। सतक के सेस दोहा अनुभूति सीर्सक के अन्तर्गत राखे गये हैं। पैलौ दोहा जा तरियाँ है-

कविता जीवन संगिनी, कहै हृदय की बात।
भरि भीतर के घाव सब, सान्त करै संघात॥

जा दोहा में मानौ कविता की परिभासा दै दई है। जीवन संगिनी कहकैं वाकौ मानवीकरण करि दीनौ है। कविता हृदय की गहराई सौं प्रगटै, संघर्षग्रस्त मानस कूँ सान्ति प्रदान करै।

अनुभूति के दोहान की खासियत है कै बे कवि की अनुभूति–प्रसूत तौ हैं ई–पाठक कूँ जे अनुभव अपने लगैं। मन में स्वीकृति भाव और प्रसंसा भाव लिए पाठक सान्ति अरु आनन्द प्राप्त करै।

ईश्वर की करुणा, घट–घट व्यापकता, में कवि की गहरी आस्था है। सत्यव्रत, हरिनाम अरु निष्काम कर्म ही मनुष्य कौ इस्ट होनौ चहिए, अरु आडंबर सौं दूर रहनौ, दीन दुखीन की सेवा करनी, जेई साँचौ धरम है–

धरम नहिं झंडा वहस, नाहिं जुलूस प्रचार।
करनो है कछु काम तौ, कर दुखियन सौं प्यार॥
चाहे जितनौ चतुर बनि, बिछा दंभ कौ जाल।
दया दृष्टि विन ईस की, होवै नहीं निहाल॥

'तीरथ–तीरथ घूमनौ' 'व्यर्थ के बिवाद ठाड़े करनौ' पै कन–कन में रमन बारे ईस्वर कौ ध्यान न करनौ साँस साँस में बजतौ अनहद नाद ताँईं बहिरौ बनौ रहनौ. धन, धरती, जस, काम की चिन्ता मायँ फँसौ रहनौ आज के मानव कौ सुभाव बनि गयौ है। जेई समाज के पतन अरु असान्ति कौ कारन है।

सेवा के नाम पै संग्रह में लिप्त, अरु मूलभूत आवस्यकतान की पूर्ति सौं [illegible] न करबे बारेन की कवि नै निन्दा कीनी है परिग्रह छाँड़ि अपरिग्रह कौ [illegible] है–

सेवा करने कौं चल्यौ, भरतौ घर में वित्त॥
जीभ–परिग्रह मंत्र रत, छिन कौ सांत न चित्त॥
कियौं विविध अपकरम करि, संचित वित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहिं, डूबि गयौ मँझधार॥

सेवा के नाम पै अनेक संस्था चलायबे बारे सरकार [illegible]
की सेवा ताँईं वित्त प्राप्त करिकैं अपनौ घर भरिबे बारेन कूँ [illegible]

अनीति मन कूँ असांत ही राखैगी। अवई तौ धन प्राप्ति ताँईं तनाव भुगत रह्यौ है। पाछैं अपनी करनी पै पछतायगौ–आत्मा की असांति सौं जूझैगौ। अपराध,तस्करी, घूसखोरी, घोटाले, आदि अपकरम करिकैं आदमी अपार वित्त तौ संचित करि लेय पै जवई भोगन चलै तो मँझधारई में डूब जाय–जेल जाय या ईस्वरीय न्याय की पकड़ में आ जाय। मँझधार में डूबन कौ रूपक, या बिम्ब बाकी दुर्दसा कौ पूरौ चित्र उपस्थित करै।

संसार की निस्सारता, उन्नति–अवनति कौ चक्र, बिना सत्कर्म किये जस की लालसा, सांसारिक माया मोह आदि के सम्बन्ध में कवि बारम्बार चेताय रहयौ है कै कुपथ छोड़ि कैं सतपथ पै अग्रसर होनौ ई साँचौ धर्म है। जस लालसा पालन बारे सौं कवि पूछै है 'तूने कौन सौ ऐसौ भलौ काम कियौ है जो पाथर पाथर पै अपने नाम लिखि रह्यौ है ?' 'मेरौ मेरौ' रटन बारे कूँ बताय रह्यौ है कै अन्त में तौ धूरि में मिलैगौ। अपने पथ पै 'कांटन भरे बवूर' क्यों बोवै ?

सर्वधर्म आदरभाव कौ धार्मिक अरु सामाजिक महत्व काहू सौं छिप्यौ नाँय–

भेजौं जानैं जगत में, ताके नाम अनेक।
काहु एक पै क्यों अड़्यौ, खोयौ वुद्धि विवेक॥
सैयद की पूजा यहाँ, माथ झुकै हर थान।
संग रमैं निसि दिन यहाँ, गीता और कुरान॥

एक ओर अपने कूँ बुद्धिमान, सिच्छित समझबे बारे सहरी ईस्वर के नामन पै अड़िकैं दंगा कराय रहे हैं तौ दूजी ओर सरल सुभाय गाँव बारे सैयद अरु देव स्थानन कूँ बराबर कौ श्रद्धा सम्मान देय हैं। कवि नैं गांव कौ चित्र दैकैं बाँछित स्थिति की ओर वड़ी चतुराई सौं इंगित कियौ है।

समाज में मानव–मानव के बीच भेदभाव करबे बारे, छुआछूत फैलायबे वारेन कूँ कवि नैं समुझायौ है कै जिन्हें तू अछूत कहिकैं तिरस्कृत करि रह्यौ है वे प्रभू सन्तान हैं, 'सुरग के दूत' हैं। मानौ गांधी जी कौ संदेस दोहराय दीनौ है।

जे दोहा यथार्थ कौ चित्रण करते भये अपनौ आदर्श लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत आज के समाज की बहुतेरी बुराई पच्छिमी सभ्यता के अन्धानुकरण अरु नैतिक सांस्कृतिक मूल्यन की गिरावट के कारन पैदा भई हैं। गुरु के आस

बारौ मदिरा पान करै तौ ऐसौ लगै कै अंधौ नैन जोति कौ ज्ञान बाँट रह्यौ है। का अचम्भौ जो सिस्य हू कुमारग पै चलिवे लगि जायँ।

दिनेस जी नैं सांसारिक चाल ब्यौहार कूँ बड़ी पैनी नजर सौं देख्यौ है फिर वाकौ चित्र प्रस्तुत कर मानौ हमै आइना दिखायौ है। स्वार्थी संतान, प्रवासी पुत्र, धन लोलुप,उदासीन, वृद्धावस्था मायँ जननी जनक कूँ अकेले छोड़ दैवे वारे कपूतन के व्यवहार सौं कवि कौ संवेदनसील हृदय भौत आहत भयौ है –

काटे लाखों पेट तव, महल बनायौ एक।
कियौ गरव सौं पूत कौ, फिरि वामें अभिसेक॥

बूई पूत अब बुढ़ापे में लात मारि रह्यौ है। 'सब कछू मटियामेट करिकै' संग छोड़ि गयौ है। ममतामयी मैया की व्यथा कौ चित्र देखौ–

तू परदेसी होत जब, जननि रहत बेचैन।
सपने हू आवत नहीं, खुले रहत हैं नैन॥

ऐसे वृद्ध माता–पिता के कष्ट कूँ कवि नैं भौत नजदीक सौ देख्यौ है, ऐसा लगै–

बाप सोचतौ डाकिया, लावै मेरौ पत्र।
बाट देखतौ द्वार जब, हँसी उड़ावत मित्र॥

"जरा ग्रसित माँ–बाप" के लयें 'जीबौ नरक समान' है गयौ है पच्छिमी मूल्यन अरु संस्कृति के रँग में रंग्यौ भयौ पूत धन–लिप्सा के बसीभूत हैकै विदेस चलौ गयौ है। बिलकुल संवेदन–सून्य है गयौ है। पितृ ऋण का होय जे बू नाँय जानैं। जे आज की ज्वलंत समस्या है जानैं, वृद्धाश्रम जैसी संस्थान कूँ जनम दीनौ है।

पर्यावरण प्रदूसन की समस्या नैं समस्त जीवधारी अरु वनस्पति जगत के अस्तित्व कूँ ही संकट में डारि दीनौ है। गाँमन मे अबहूँ प्राण–वायु कौ थोरौ भौत संचरण होय है–

फूल फूल पै घूमि कैं, लावत पवन सुगंध।
सुद्ध साँस कौ है रह्यौ, जीवन सौं अनुबंध॥

प्राकृतिक सम्पदा के अंधाधुंध दोहन की महाभारत के प्रसंग के [illegible]
आलोचना कीनी है–

सबकी जननी बसुमती, जो पंचाली रूप।

वाकूँ नंगो करि रह्यौ, दुस्सासन खनि कूप॥

केवल वर्तमान माँहि जीबे बारी भविष्य के प्रति अंधी शासन व्यवस्था अंधाधुंध ट्यूबवैल खुदवाये जाय रही है अरु भूमिगत जल नीचौ जाय रह्यौ है– अन्ततोगत्वा वनस्पति नष्ट हैकै भूमि नंगी है रही है।

"मखमल पै सोवै सहर, धूपनि जरै किसान" जि विसंगति कवि के हृदय कूँ साल रई है अरु मनुस्य की संवदेनहीनता सौं बू चिन्तित हैकैं आज 'परजन संताप' काहू कौं नाय व्यापै, सहानुभूति कौ गुन बिलाय गयौ है।

सांस्कृतिक ह्रास हू चिन्तनसील लोगन की परेसानी कौ कारन बन्यौ भयौ है

कोलाहल में राति दिन, डूबि रहे घर द्वार।
निर्वसना नारी बनी, मन रंजन आधार॥

जा दोहा में कवि नैं आधुनिक समाज के पतन पै करारी चोट कीनी है। पॉप म्यूजिक कौ कानफोड़ सोर, मॉडल बनी युवतीन, शालीनता रहित विज्ञापन– सब कूँ आधुनिकता के नाम पै समाज स्वीकारतौ चलौ जाय, अन्त में सांस्कृतिक हमला में एक अचूक अस्त्र चलायौ जा रह्यौ है–भाषा अरु नागरी लिपि के विरुद्ध षड्यंत्र के रूप में–कवि नैं सावधान कियौ है

अंगरेजी अच्छर बिकैं, यहाँ स्वर्ण के भाव।
घर आँगन डूबन लगी, अपनी भाषा नाव॥

स्थिति कितेक विडम्बना पूर्ण है। अपनी भाषा लिपि के बिनास माँहि हमई भागीदार है रये हैं।

कवि नैं बड़े आत्मबिस्वास के संग समापन करते भये मानौ समाज सौं कह्यौ है कै हमनै तौ आपकूँ आइना दिखाय दियौ। यथार्थ सौं अवगत कराय दियौ। जो सत्य मार्ग है, उत्तम आचरण है बाकी राह भी दिखाय दई। अब अर्थ समझनौ, अमल करनौ आपकौ काम है।

दिनेस दोहावली के अतिरिक्त जा संग्रह में कवि के कवित्त, कुंडलिया, गीत हू सामिल हैं।

''चैन मिलै रूप देखें नन्द के दुलारे कौ' कवित्त सूर के 'मुरली सुनत अचल चलै'' की याद दिवावै। भगवान कृष्ण कवि के इष्टदेव है। वे माखन चोर हैं, गोपालक हैं, रास रचैया हैं, महाभारत के कर्मयोग के उपदेसक है अरु 'यदा यदा ही धर्मस्य' के अनुसार अधर्म की पराकाष्ठा है जाय तौ औतार लैबे कूँ वचनबद्ध हैं। श्री कृष्ण जी के इन रूपन की झाँकी इन कवितान औ गीतन में मिलि जाय। गीतन के माध्यम सौं कवि विसेस रूप सौ अपनी अन्तरतम की भावनान कूँ व्यक्त करै, रच्छक अरु प्रेमी सौं निवेदन करै, वाय पुकारै। कछुक उदाहरन देखौ–

अर्जुन पूछत रथ में

> पाप पुन्य की कौन तराजू, कहा धरम कौ टीको ?
> सबके हाथ सने लोहू में कौन अनय के अथ में ?

गाँव कौ दूध दही सहर सोखि लै जाय तौ 'माखन चोर कन्हैया अब कैसै ब्रज में आवैगौ ? दूजौ आकर्सन रास रचायबे कौ हतौ, सो बाकी कैसी अधोगति भई है तथाकथित ''भारत महोत्सवन'' पै लक्षित व्यंग

> दूरि गईं गोपियां विदेसनि,
> संस्कृति नाच दिखावन कौं।
> कुंज गलिन में तू नाचैगौ,
> किनकौं रास सिखावन कौ ?

ब्रज होरी याद करिकैं नैक देर अतीत में रहिकैं फिरि वर्तमान समस्या मन में सालन लगै तौ अवतारी कौ कवि पुकारि उठै–

> अवतरहु कन्हैया
> 'गाये कचरा चरैं' 'भूखे बच्छ रंभावत'
> कट्टी घर खुलि रहे सहर में– – –
> अब तौ अवतरहु कन्हैया काहे देर लगावत

कलिजुग कंस अनेक भये
कवि प्रभु सौं निवेदन करै है–
'प्रभु गुन बानी मधुर करौ''
'मधुराधिपते अखिलं मधुरं' की मनोहारिणी लीलान कौ बरनन करिकैं अपनी बानी कूँ मधुर करिबे की कामना करी गई है।

"कान्हा लै चलौ मोहि वृन्दावन"
कारन ? जा आधुनिक सहर में:-
दमघोटू गैसें, धुआँ, कान फोड़ सोर
हत्या बलात्कार सौं भरे अखबार
इंसान आय गयौ हासिये पै।
सीघ्र लै चलौ मोहि जमुना के तीर (गाँव)
वही मेरौ रसधाम है॥

जे अपने गृह-ग्राम की पुकार है, इष्ट देव के प्रति आत्मा की पुकार है। वर्तमान सामाजिक पतन, अनैतिकता, अर्थलोलुपता, अपराध प्रवृत्ति, वर्ग संघर्ष आदि अनेक प्रस्न बारम्बार उठैं-

नेतागन 'सीत बँगलानि माँहि, बैठि राजधानी बीच
जनता में भेदभाव अगिनि लगात हौं।"

दो कुंडलीन में मत माँगने वारे नेता कौ अरु बाद में जीति कैं कुर्सी पा जाबे वारे नेता कौ व्यंग्य पूर्ण चित्र यथार्थ कौ दर्सन करावै है।

गांधी जैसे आदर्स मार्गदर्सक के अभाव में अब मार्ग कौन दिखावैगौ। नेतान की हालत तौ ऐसी है गई है-

"जाकौ उदर भयौ आकासी, सोनो चाँदी खावत है।
मदिरा के सागर कूँ पीकैं, जो प्यासौ चिल्लावत है॥
चल न सकै दो पग धरती पै वह का राह दिखावैगौ।"

नेतान की ऐसी करतूतन सौं नेता सब्द नैं अपनौ अर्थ ही खोय दियौ है। भविष्य की चिंता बारम्बार नये नये विम्बन के माध्यम सौं उभरती दीख परै-ऐसे समाज की का दसा होयगी जाके नेता ऐसे नराधम हैं- 'मंजिल कैसै मिलैगी" अत्याचार अनाचार पापाचार कौ अँधेरौ घिरि रह्यौ है "चिड़िया के नीड़ के तिनका कूँ भी कोई खाये जाय रह्यौ है" गरीब को शोषण है रह्यौ है- ऐसे में स्वराज कैसे आवैगौ आसा किरन हू नायँ सूझि परै।

जा तरियाँ आपके गीत स्वानुभूति मूलक होते भये हू देस, समाज अरु मानव जाति के भविस्य की चिंता समेटे भये हैं।

सूरज नैं देखी है
तुमने देखी है माँ ?

ग्रामवासिनी यह भारतीय माँ जीवन पर्यन्त परिवार जनन के ताईं खटती रहै सबसूं पैलैं उठै, सबसौं पाछै सोवै। सूरज बाकी दिनचर्या कौ साक्षी है और तौ सव सोते रहै, अपने में मगन रहैं। माँ के जीवन के तीनि पहर तीन चित्रन में ऐसे उभरे है, ऐसे मन कूँ छू लैबे बारे हैं कै वर्णनात्मक शैली माँय वू प्रभाव कैसैऊ नाँय आवतौ। वुढ़ापौ आय गयौ है–

"दूरि दूरि देखति है बीते दिन रात माँ"

और

'खेतन में झुकी झुकी धान चुनति
साँझ की गोधूली मे
सिर पै लादे बोझ"
सूरज नैं देखी है माँ

कविवर दिनेस जी नै प्रभूत साहित्यिक रचना करी हैं। अध्ययन–अध्यापन करते भये जीवन अरु साहित्य की गंभीरता की थाह लीनी है–सो आपके काव्य माँहि सर्वत्र झलकै। सपाट–बयानी भौत कम भई है। कवि के मस्तिष्क माँय विम्बन कौ एक समृद्ध भंडार है। जे विम्ब अधिकांसत प्रकृति सौ लिये गये है। कवि अपने कथ्य की ओर इसारौ भर करै, सेस काम बिम्ब करि देय। पाठक कूँ उपदेसात्मकता की ऊब नाँय सहनी परै। बू चित्र ही बाय सब समुझाय देय। वृक्ष कौ बिम्ब अनेक बार प्रयुक्त भयौ है। फूल, फल, पात, मूल, काँटा, सुगंध, बबूल आदि चित्रन अथवा प्रतीकन सौ उद्देस्य प्रेसित करौ गयौ है। उदाहरनार्थ–

फूलनि कूँ चुनतौ फिरै, तू काँटनि कौं भूलि।
माला अपने ही गले, पहिनि मिलि गयौ धूलि॥

फूल चुनिकैं अपने ई गरे माला पहर लई–सब सुख सुविधा स्वयं के लये जुटा लई–जीवन पथ के शूलन कूँ भूलि गयौ। विनास के गर्त में चलौ गयौ।

तू जाकुँ सुख मानतौ, वे आकासी फूल।
निसि वासर है पाप रत, काटि रह्यौ निज मूल॥

मूरख, सांसारिक सुख की लालसा में लोक–परलोक दोऊ नसाय रह्यौ है।

कवि अनेक रूपक प्रस्तुत करिकैं मनुस्य की आत्मा कूँ झकझोर रह्यौ है। जगाय रह्यौ है, सावधान करि रह्यौ है। दिनेसजी श्लेष, यमक आदि के चमत्कारन के फेर में नाँय परे। संगीत (छंद) चित्र (विम्व/रूपक) दोउ न कौ प्रचुर प्रयोग कियौ है अरु रचना स्वतः ही प्रभावकारी है गई है। उपमा कौऊ प्रयोग ना के वरावर है जैसै, सहस, समान ज्यौं आदि द्वारा समानता नाँय दर्साई गई। नदी, नाव, कूल, मँझधार, वादल के विम्वन कूँ वारंबार भावाभिव्यक्ति की जिम्मेदारी सौंपी गई है–

माली वगिया सींचतौ, तोड़ै तू फल फू ल।
डूवेगौ वा भंवर में, जहाँ न कोई कूल॥

अव तेरे आगे कहां, वची धरम की राह।
घाटी तम, मद मत्त नद, मिलै न जाकी थाह॥

इतनौ क्यों रोवै खड़ौ,रख निज नीर संभाल।
कल वरसैंगे कुफल सव, वन वादल विकराल॥

तप व्रत तेरे विरथ हैं, जौं लौं मन में ताप।
प्रेम अहिंसा खेल में, वनौ विदूसक आप॥

ऐसौ मनुस्य अपनी मूर्खता सौं उपहास कौ पात्र वनि जाय। विवाहिता सहधर्मिणी के प्रति अत्याचार पै कैसौ मार्मिक दोहा वनि परौ है–

जोवन के मद में फिरौ, तू फूलनि के पास।
मंगल कुंकुम कूँ दियौ, तूनैं भीषण त्रास॥

दिनेस जी के गीतन माँय गेय तत्व अरु चित्रात्मकता के संगई छायावादी आस्वाद हू मिलैं। 'मदिराये कूप' व्रजभासा में नयौ अनुभव है। सीत रितु में आँगन में धूप उतरि आई है तौ–

'अलसाई लेटी है जमुहाती शीत'

प्रकृति कौ मानवीकरण कियौ है। पनिहारिन के लहरात भये आंचल कुआँन पै जादू किये दै रहे हैं।

'आंचल लहरात देखि मदिराये कूप'

मदिराये कूप अच्छी छायावादी अभिव्यक्ति है। गीत की सार्थकता तवई होय जब वू व्यथित आत्मा कूँ सुकून दै सकै।

मेरे भाव तिहारे आँसू,
धो पावें तौ गीत समझियो।

प्रकृति माँय परिवर्तन रितु चक्र के अनुसार होत रहत हैं पै जीवन माँय बसन्त कौ आगमन तब मानैं जो–

'किन्तु तिमिर से बँधे कंठ की
सिसकैं जब आवाज न कोई।
तब तुम जीवन के मौसम में
परिवर्तन की जीत समझियो।'

जब लौ अंधकार के तत्व समाज पै हावी रहैंगे तब लौं प्रगति अरु परिवर्तन की आसा करनी व्यर्थ है। तिमिर से बँधे कंठ' जैसी अभिव्यक्ति आधुनिक कविता की अनुभूति करावै।

कवि नै जा संग्रह माँय छंद मुक्त (छंदहीन नाँय) रचना हू दीनी हैं–

एक बार लै चलौ
कान्हा लै चलौ मोहि वृन्दाबन।

सहर के दमघोंटू वातावरण, कानफोडू सोर, अपराध–त्रस्त जीवन सौ त्राण पायबे हेतु एक आकुल पुकार है। भाषा अरु प्रवाह भावानुसार उतार चढ़ाव के संग दिखाई परै। बरन औ मात्रान की गिनती के काजैं अटके बिना जो छंद मुक्त कविता लिखी जाय बाकी हू एक नैसर्गिक गति होय–साँच कह्यौ जाय तौ बामें छंद की एक अन्तः सलिला बह्यौ करै। *गुप्त जी कौ सिद्धराज, दृश्य रूप सौ छदमुक्त है पै पूरे काव्य* में कवित्त छंद प्रवाहित है रह्यौ है।

दिनेश जी की कविता भाव पक्ष अरु कला पक्ष दोऊ प्रकार सौ उत्कृष्ट है। आधुनिक भाव बोध के संग नई अभिव्यक्ति कौ समावेस ब्रज काव्य कूँ गतिसीलता प्रदान कर रह्यौ है।

मैं दिनेस जी की सेवा में एक दोहा लिखिकैं अपनी बात समाप्त करनौ चाहूँ–

लखि दिनेस–कविता–किरन, तुरत दुरत तम पुंज।
हिय सतदल खिलि खिलि परत, स्रवन सुनत ब्रज गुंज॥

डी–90 कृष्णा मार्ग
सिवाड़ एरिया बापू नगर
जयपुर– 302015

□

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. दिनेश

- श्री विहारी शरण पारीक

सुरति मिश्र के काव्य कौ चार वृहद्‌खण्डन में सम्पादन करिबे वारे, सोमनाथ के 'शशिनाथ विनोद' सहित कुल 18 ग्रंथन कौ समालोचन, सम्पादन अरु समीक्षा करिकैं प्रकासित कराइबे वारे,समस्त भारत सौ प्रकासित हैवे वारे प्रतिष्ठित हिन्दी अखवार अरु पत्र-पत्रिकान में आग्रह सौं छापे जाबे वारे अरु 123 पुस्तकन के रचयिता के ब्रजभासा काव्य की समालोचना कौ भार वहन करिबौ,एक ओर तौ दुर्वल कन्धन वारे जीव के काजैं सामर्थ सौं बाहर है अरु दूसरी ओर अति गौरव कौ कार्य है।

जिन डाक्टर रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के विषै में या आलेख माँहि लिखौ जा रह्यौ है बिनकौ कृतित्व इतनौ विराट है कै वाकी विषै वस्तु मात्र सब्दन में समेटिबौ असम्भव सौ लगै है। भारत की स्वतंत्रता सौं 5 बरस पूर्व आरंभ भई, बिनकी सृजन यात्रा,अजहुँ अविराम गति सौं चल रही है। कामना है अरु जे विसवास है कै बिनकौ सुदीर्घ सृजनसील जीवन आगै हू ब्रजभासा अरु हिन्दी भासीन कूँ ज्ञान कौ आलोक देतौ रहैगौ। डाक्टर 'दिनेश' के स्वकथनानुसार विगत अवधि माँहि अनेक ग्रंथन कौ प्रनयन भयौ अरु लगभग सवा सौ ग्रंथन कौ मुद्रण हैकैं प्रकासन भयौ। आगै हू कछु ग्रंथ या प्रक्रिया के आधीन हैं।

डाक्टर शर्मा की यात्रा कोरी शब्द अरु सृजन की ऐसी यात्रा लौं सीमित नाँय रही जामें मानसिक धरातल सौं शब्द ब्रह्म निकरि कै लेखनी के माध्यम सौं ग्रंथन कौ आकार ले लैं हैं। अपितु विस्व के अनेक देसन माँहि वे सम्मान सौं आमंत्रित भए अरु अपने विसद अध्ययन के आधार पै बिन्नैं चीन के चिन्तकन कूँचकित कियौ,

उत्तरी कोरिया के उद्‌भट विद्वानन की उत्कंठान के उत्तर दिये अरु जर्मनी सौं जस की उपलब्धि करी। जि तौ हमारे देस की पुरातन परम्परा रही है जाकौ निर्वाह डाक्टर दिनेश नैं कियौ। सम्राटन नैं अपने पुत्र–पुत्रीन कूँ भिक्षुकन कौ बानौ दैकैं धर्म अरु संस्कृति के प्रचार प्रसार कूँ बिदेसन माँहि पठायौ। वर्तमान समय में हू स्वामी विवेकानन्द, योगानन्द,प्रभुपाद महेश योगी, अरु ओशो आदि महापुरुष भारत के ज्ञान, संस्कृति,धर्म अरु योगदि के प्रचार अरु प्रसार के हेतु सौं विदेसन कौ भ्रमण करते रहे हैं। डाक्टर दिनेस नैं उपरोक्त देसन के अतिरिक्त रूस, मारीशस अरु थाईलैण्ड आदि देसन माँहि भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक सन्देस पहुँचाए।

डाक्टर दिनेस शर्मा के व्रजभासा साहित्य–सृजन पै विचार करिबे सौं पैलै हमें बिनके समग्र साहित्य सृजन कौ विचार आवै है। खड़ी बोली माँहि इन्नैं जा बृहद् परिमाण में साहित्य रचौ है वैसी ही चिन्तनधारा यदि ब्रजभासा की ओर उन्मुख है जाती तौ ब्रजभाषा हेत कैसौ सुपरिणाम निकरतौ अरु ब्रजभासा कूँ प्रचुर साहित्य उपलब्ध है जातौ। ब्रजभासा में हू मौलिक सृजन बिन्नैं खूब करौ है किन्तु वो सिगरौ मुक्तकन अरु कवितान के रूप में ही है। जा पोथी माँहि बाकौ अति लघु अंस समाविष्ट कियौ जा सकौ है' शेष अन्य साहित्य हेतु श्री दिनेश जू कौ कथन है कै बू सामग्री उदयपुर माँहि रह गई है जाकूँ प्राप्त करनौ हाल संभव नाँय है सकै है।

डाक्टर शर्मा एक ओर लेखक, समीक्षक, आलोचक अरु कवि कर्मन कौ निर्वाह करते रहे तौ दूसरी ओर वे पत्रकारिता सौं हू जुरे रहे। अनेक बरसन लौं 'सरस्वती संवाद'अरु 'समीक्षा लोक' के प्रधान सम्पादक रहे, 'सैनिक' साप्ताहिक के सहसम्पादक रहे। अनेक प्रतिष्ठित समाचार पत्रन में नियमित रूप सौं बरसन लौं समीक्षा लिखते रहे। श्री गनेस शंकर विद्यार्थी अरु श्री कृष्णदन्त पालीवाल सरिस समर्थ सम्पादकन सौं सुलभ भई दिसा नैं इनकूँ पत्रकारिता की ओर उन्मुख कियौ पै परिस्थितीन के वश हैकैं व्यवसाय के रूप में अध्यापन सौं संयुक्त रहे। आदर्स अध्यापक के रूप पै इनकौ व्यक्तित्व निखरिबे पैहू पत्रकारिता सौं इनकौ प्रेम बनौ रह्यौ अरु इन्नैं ही अपने कुसल निर्देसन में पत्रकारिता के विद्याध्ययन सौं पी.एच.डी. हेतु शोध कार्य कराए। साहित्य की सिगरी विधान सौं गहरे लगाव के कारन डाक्टर शर्मा के अन्तर्मन कौ चिन्तक हमेसा चौकस रह्यौ है जाकौ प्रभाव इनके ब्रजभासा काव्य पै स्पष्ट रूप सौं परिलक्षित होय है। सफल समीक्षक अरु प्रखर आलोचक हैवे

कौ प्रमान तौ इनके काव्य माँहि पग-पग पै मिलै है अरु ब्रजभासा, ब्रजभूमि अरु ब्रजवासीन की वर्तमान दसा इनकूँ व्यथित करै है जासौ इनके प्रति इनकौ भीतरी असन्तोष प्रकट है जाय है तदपि इन तीनन सौं इनकौ मोह अनवरत बन्यौ दीखै है।

जा कराल कलिजुगी काल अरु आपाधापी के जुग माँहि समर्थ जन असमर्थन के कण्ठन सौ वानी निकसवे ही नाँय दै, जो कहुँ अनुयोग-सिकायत करी हू जावै तौ वाय सुनिबे वारे अरु विनकौ निदान करिवे कूँ कोऊ तत्पर नाँय लगै सो लै-दै-कैं सिगरी सिकायत ब्रज के वंसीवारे कूँ ही अर्पित भई है। सब कछु श्री कृष्णार्पण,-

द्वापर कंस हतौ इक कान्हा,
कलिजुग कंस अनेक भए

अरु

दम घोट रही गैसें,
धुआँ
कानन कूँ फोड़ती आवाजें
हत्यान सौं भरे अखबार
बलात्कार
हासिए पै इन्सान
कान्हा!
शहर एक जंगल है
मोहि लै चलौ वृन्दावन!

ससार के सिगरे ऐस्वर्य कूँ हासिल करिकैं जो मनुज इन्द्रासन पै अधिकार करनौ चाहै वाकौ उदर दो रोटी अरु दार सौ कब भरि सकै है। भारतीय सात्विक जीवन के दार-रोटी वारे मुहावरे कौ स्मरन करते भए डॉ. दिनेस मानुस की अकारन लिप्सा की निन्दा करै है-

दो रोटी अरु दारि सौं, भरौ न तेरौ पेट।
जग की सिगरी सम्पदा, घर में धरी समेट॥

भौतिक सम्पदा के संचयन कौ चिन्तन भारतीय दर्सन माँहि कबहूँ नाँय रह्यौ, जो कछु सहज उपलब्ध है जाय सो ठीक है तदपि याके काजैं अनाचार कौ आसरौ लैकैं जो मनुज उन्नति के सोपानन पै चढ़ै हैं वाकौ पतन अवश्यंभावी होय है। स्वर्ग

लौं सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कवरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भाषान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभाषान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनैं सबसौ पैलैं कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, ब्रज अरु अवधि विभाषान की बोलीन सौ विकसित भई है। इन विभाषान में ब्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनैं सबसौं पैलैं जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खडी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। ब्रजभाषा मे मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– ब्रजभाषा में आपनै कौनसी विधा में रचना प्रारंभ करीं अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– ब्रजभाषा में मैनैं कविता में रचना प्रारंभ करीं। ब्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नैं हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौं मैं ब्रजभाषा में कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौं सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ़्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कबरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भापान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभापान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनैं सबसौ पैलैं कौन–सी भापा मे रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, व्रज अरु अवधि विभापान की बोलीन सौ विकसित भई है। इन विभापान में व्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनै सबसौं पैलै जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। व्रजभाषा में मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– व्रजभाषा में आपनैं कौनसी विधा में रचना प्रारंभ करी अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– व्रजभाषा में मैनैं कविता में रचना प्रारंभ करीं। व्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नैं हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौं मै व्रजभाषा में कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौं सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ्यौ, उतनौ गिर्यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्यौ, गरौ कबरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कै अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भापान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभापान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनैं सबसौ पैलैं कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, ब्रज अरु अवधि विभापान की बोलीन सौं विकसित भई है। इन विभापान में ब्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में वोली जावे वारी माँ की भापा रही है। मैनै सबसौं पैलैं जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। ब्रजभाषा में मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– ब्रजभाषा मे आपनैं कौनसी विधा मे रचना प्रारंभ करी अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– ब्रजभाषा में मैनैं कविता में रचना प्रारंभ करीं। ब्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नै हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौ मैं ब्रजभाषा में कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौ सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कबरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भाषान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभाषान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनै सबसौ पैलै कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, व्रज अरु अवधि विभाषान की बोलीन सौ विकसित भई है। इन विभाषान में व्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर मे बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनै सबसौं पैलै जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। व्रजभाषा में मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– व्रजभाषा मे आपनै कौनसी विधा मे रचना प्रारंभ करी अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– व्रजभाषा में मैनैं कविता में रचना प्रारंभ करीं। व्रज के लोकगीतन सौं मै बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नैं हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौं मैं व्रजभाषा में कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौं सोने की सीढ़ी लगायवे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ़्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कवरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भाषान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभाषान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनैं सबसौ पैलै कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, ब्रज अरु अवधि विभाषान की बोलीन सौ बिकसित भई है। इन विभाषान में ब्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनै सबसौं पैलैं जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। ब्रजभाषा में मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– ब्रजभाषा में आपनैं कौनसी विधा मे रचना प्रारंभ करीं अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– ब्रजभाषा में मैनैं कविता में रचना प्रारंभ करीं। ब्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नैं हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौं मैं ब्रजभाषा मे कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौं सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ़्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कबरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौं जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत,उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भाषान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभाषान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनै सबसौ पैलैं कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, ब्रज अरु अवधि विभाषान की बोलीन सौं विकसित भई है। इन विभाषान में ब्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनै सबसौं पैलैं जाही में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। ब्रजभाषा में मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– ब्रजभाषा में आपनैं कौनसी विधा मे रचना प्रारंभ करी अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– ब्रजभाषा में मैनैं कविता मे रचना प्रारंभ करी। ब्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नैं हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौ मैं ब्रजभाषा में कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

लौं सोने की सीढ़ी लगायबे कौ संकल्प रावन सरीखौ बलसाली हू पूरौ नाँय करि सकौ तौ निरीह आदमी कौनसी गिनती में है। याकी चेतावनी देते भए दिनेश दोहावली कौ छन्द अपनौ मन्तव्य प्रकट करै है–

ऊपर तू जितनौ चढ़्यौ, उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
सांस गई, पावक पर्‌यौ, गरौ कवरि में चाम॥
कियौ, विविध अपकरम करि, संचित बित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहि, डूबि गयौ मँझधार॥

भासा के माध्यम सौं भाव अरु भावनान की अभिव्यक्ति कविता होय है, जाके अनुसार दिनेस जी नैं आत्म प्रबोध के भावन कौ आश्रय लैकैं संसारी जनन कूँ अपनी दिनेस दोहावली माँहि कदम–कदम पै चेतायौ है। करका मनका छाँड़ि कैं मन का मनका फेरि' कैं अनुरूप इन्नैं हू कह्यौ है माला हू जो फेरनी है तौ मन के माँहि सत्य धारन कूँ ही माला मानि लैं। संसार माँहि यदि निष्काम कर्म नाहीं कियौ तौ जीभ सौं हरिनाम रटिकैं याकूँ केवल व्यायाम कराइबे के समान है। अपने मन सौं ही कवि पूछै है–'बोल रे बोल, अपनी वृत्तीन कूँ जस अर्जित करिबे में, अर्थ की साधना में अरु कामार्चन माँहि ही यदि तोय प्रयुक्त–प्रवृत्त करनौ है तौ निष्काम भाव सौं प्रभु की पूजा उत्तम है कै सांसारिक तृषनान की, अपने विवेक कूँ ही याकौ निर्णय करनौ होयगौ।'

माला मन में साँच की, जीभ जपै हरिनाम।
लैनौं का या जगत सौं, करहु करम निष्काम॥

अरु

पूजा अर्चा ठीक है, पर का की? मनबोल!
धन धरती जस काम की, या प्रभु की, मुँह खोल॥
हम इनके सुदीर्घ–स्वस्थ जीवन की कामना करैं हैं।

61–माधव नगर रेल्वे स्टेशन
दुर्गापुरा, जयपुर–302018

❑

भेंटवार्ता डॉ. दिनेश सौं

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. ल.ना.नंदवाना–डॉ. दिनेश! मेरी जानकारी के अनुसार आप संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी, अरु गुजराती भाषान के ज्ञाता हौ अरु हिन्दी की बोलीन अरु विभाषान के गंभीर अध्येता रहे हौ। मेरी जिज्ञासा है कै आपनै सबसौ पैलैं कौन–सी भाषा में रचना–कर्म प्रारंभ कियौ ?

डॉ. दिनेश– हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। जो राजस्थानी, ब्रज अरु अवधि विभाषान की बोलीन सौ विकसित भई है। इन विभाषान में ब्रजभाषा मेरी मातृभाषा यानी मेरे घर में बोली जावे वारी माँ की भाषा रही है। मैनें सबसौं पैलैं जाहीं में कविता करनौ प्रारंभ कियौ। वाके बाद खड़ी बोली हिन्दी में रचना प्रारंभ करी। ब्रजभाषा मे मेरे रचना–कर्म कौ प्रारंभ लगभग 1942 में भयौ।

डॉ.नंदवाना– ब्रजभाषा में आपनैं कौनसी विधा मे रचना प्रारंभ करीं अरु क्यों ?

डॉ. .दिनेश– ब्रजभाषा मे मैनें कविता में रचना प्रारंभ करीं। ब्रज के लोकगीतन सौं मैं बचपन सौं ही प्रभावित होत रह्यौ। सूर, रहीम, रसखान, मीरा आदि की रचनान नै हू मेरे मन कूँ भौत प्रभावित कियौ। इन कारनन सौं मै ब्रजभाषा मे कविता लिखन कूँ प्रेरित भयौ।

डॉ. नंदवाना–आप अपनी कविता–यात्रा कूँ स्पष्ट करन की कृपा करें।

डॉ. दिनेश– ब्रजभाषा में मैंनें फुटकर कविताएं ही ज्यादा लिखीं। कछू लोकगीत हू लिखे। ब्रजलोकगीतन की समीक्षाएं हू लिखीं। डॉ. सत्येन्द्र सौं जा क्षेत्र में काफी प्रोत्साहन पायौ। 'साहित्य संदेश' मासिक (आगरा) के कछू अंकन में समीक्षान कौ प्रकाशन भयौ। ब्रजभाषा सम्बन्धी समीक्षान की भाषा खड़ी बोली रही। बाबू गुलाबराय नैं राय दई कै खड़ी बोली में कविता हू लिखौ। जा बीच में मैं बीमार पर्‌यौ अरु अपनी दादी अमृतादेवी मिश्रा की आँखिन के आँसू बीमारी की दशा में ही मेरी खड़ी बोली की कविता के जनमदाता बन गए। 14 वर्ष की आयु में मैंनें 'वीरांगना' नाम सौं गीतन कौ संग्रह लिखनौ आरंभ कियौ, जो 1949 में पूरौ है कैं प्रकाशित भयौ। महात्मा गांधी की हत्या के उपरान्त मैंनें 'विश्व ज्योति बापू'' खण्डकाव्य लिख्यौ,जो 1952 में प्रकाशित भयौ।इन दो रचनान सौं मोहि उत्तप्रदेश के युवा कवीन में आदर कौ स्थान मिलन लग्यौ। मैं कवि सम्मेलन में ब्रज अरु खड़ी बोली की कविताएँ सुनावत रह्यौ, जो काफी सराही गईं। तबसौं अब तक मेरी कवितान की 18 पुस्तकें प्रकाशित है चुकी हैं।, जिनमें 'सारथी'(महाकाव्य), 'मधुरजनी (गीत–संग्रह) जलती रहे मशाल', 'रूपगंधा', 'संघर्षों के राही', 'अहं मेरा गेय', 'आयाम','साक्षी है सूर्य'आदि मुख्य हैं। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (इलाहाबाद) नैं मेरी कवितान कूँ राष्ट्रीय स्तर पै 1983 ई. में पंत आदि की श्रेणी में आधुनिक कवि–20' के रूप में काव्य–यात्रा सहित मोहि प्रकाशित कियौ। भारत कौ शायद ही कोऊ प्रमुख पत्र या पत्रिका होय जामें मेरी कविता न छपी हाय। मेरी काव्य–रचना की जि यात्रा लगातार चल रही है। दो नई काव्य–पुस्तकें 1998 में प्रकाशित होन वारी हैं। पत्र–पत्रिकान में हू नियमित रूप सौं मेरी कविताएं छपती रहैं हैं।

डॉ.नंदवाना– आपकौ एक सुप्रसिद्ध महाकाव्य ''सारथी'' है जाहि एक ज्योतिवादी महाकाव्य घोषित कियौ गयौ है। डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय की स्थापनानुसार समालोचकन नैं जा महाकाव्य कूँ प्रसादोत्तर एक श्रेष्ठ महाकाव्य के रूप में रेखांकित कियौ है। केन्द्रीय''साहित्य, अकादमी'' नैं हू जा महाकाव्य कूँ पुरस्कार–हेतु चुनी गई पुस्तकन की सूची में 1962 ई में सामिल कियौ हतौ अरु राजस्थान साहित्य अकादमी नैं अपने काव्य–पुरस्कार सौं सम्मानित कियौ हतौ। आप जा महाकाव्य की कछू विशेषतान कूँ स्पष्ट करन की कृपा करें।

डॉ. दिनेश– 'सारथी' की कथा 'कामायनी' की कथा की पूरक है। मनु के बाद मानव कौ का भयौ ? हम सब मानव कहाँ आय पौहचे हैं ? हृदय सौ आरंभ है कैं मानव की जीवन–यात्रा कौन–कौन से सोपान पार कर चुकी है ? विज्ञान–बुद्धि के बल पै मानव आतंक अरु युद्धन की विभीषिकान सौं घिरि रह्यौ है। 'सारथी' महाकाव्य में इन सब प्रश्नन कौ उत्तर दियौ गयौ है और त्रिपुर संहार की प्रतीक कथा के माध्यम सौं अन्तरिक्ष युद्ध की विनाशलीला कौ भविष्य मानव जाति कौ बतायौ गयौ है। शीत–यद्ध की विभीषिका सौ डरे भये समस्त विश्व कूँ सन् 1962 में प्रकाशित मेरौ जि महाकाव्य जो संदेश देवै है; बू आजहू सार्थक एवं प्रासंगिक है अरु तब तानूँ तक रहैगौ जब तानूँ मानव जाति वैज्ञानिक अस्त्र–शस्त्रन के निर्माण में लीन रहैगी। भाषा अरु छंद प्रयोग की दृष्टि सौ हू जा महाकाव्य की विद्वानन नै प्रशंसा करी है।

डॉ. नंदवाना–आपकी मधुरजनी, रूपगंधा आदि काव्य कृतीन पै हू पुरस्कार मिले हैं अरु महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन नै आपकूँ पुरस्कृत करिकैं राष्ट्रीय संस्कृति एवं मानववादी मूल्यन के विकास मे आपकौ योगदान रेखाँकित कियौ है। आप इन सब तथ्यन सौ एक कवि के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हैं। साहित्य की अनन्य विधान में आपकौ जो योगदान है, वाहू सौं कछू परिचित करावै।

डॉ. दिनेश– काव्य के अलावा मैनैं 8 नाटक हू लिखे हैं औरु एक नयौ नाटक रचनाधीन है। भारत सरकार सौ मेरौ एक नाटक पुरस्कृत हू भयौ है। मेरे खण्डकाव्य एवं फुटकर कवितान कूँ विभिन्न विश्वविद्यालयन में पाठ्यक्रम मे स्वीकृत कियौ गयौ है। मेरे तीन नाटक हू पाठ्यक्रम में रहे हैं। कहानी हू काफी छपी है। 'चौराहे का आदमी' मेरी कहानीन कौ संग्रह छप चुकौ है। तीन उपन्यास हू छपे हैं। ललित तथा समीक्षात्मक लेखन के तीन संग्रह प्रकाशित भए हैं। जाके अलावा कविता सौं हू ज्यादा मैंनै शोध अरु आलोचना के क्षेत्र में कार्य कियौ है अरु बाल एवं प्रौढ़ पाठकन के लिए हू कुछ पुस्तकें लिखीं हैं अब तक मेरी कुल 123 पुस्तके प्रकाशित है चुकी हैं। गद्य की दो पुस्तकन पैहू मोय पुरस्कार मिले है।

डॉ. नंदवाना–आप आरंभ में पत्रकारिता सौ हू जुडे रहे है। किन पत्र–पत्रिकान सौ आप जुड़े रहे तथा आपके जा क्षेत्र में का–का अनुभव रहे ?

डॉ. दिनेश–आरंभ में हिन्दी के शीर्ष कोटि के मासिक 'विशालभारत' (कलकत्ता) सौं जुड़ौ। जा मासिक पत्र नैं पं. बनारसीदास चतुर्वेदी अरु पण्डित श्रीराम शर्मा (शिकारी साहित्य के लेखक) के सम्पादन–काल में निराला, हजारीप्रसाद द्विवेदी–जैसे साहित्य महारथी हिन्दी–जगत् कूँ दिए। पण्डित श्री कृष्ण दत्त पालीवाल के सम्पादन में प्रकाशित "सैनिक" के साप्ताहिक संस्करण सौं मैं सहायक सम्पादक के रूप में सम्बध रह्यौ। छः वर्ष तानूँ मैं "सरस्वती सम्वाद" (त्रैमासिक) एवं "समीक्षालोक" (त्रैमासिक) कौ प्रधान सम्पादक रह्यौ। "समिति–वाणी" (भरतपुर) अरु "शोध–पत्रिका" (उदयपुर) के परामर्श–मण्डल में हू रह्यौ। कई पत्रन में नियमित रूप सौं वर्षन तक समीक्षा के कालम लिखतौ रह्यौ। 'नवभारत टाइम्स' दैनिक इनमें प्रमुख रहृयौ है। आनंद जैन के सम्पादन–काल में मैंनैं जा पत्र में नियमित रूप सौं तीन वर्ष तक समीक्षाएं लिखीं । दैनिक "सैनिक" एवं दैनिक 'प्रताप' नामक दो अखबार आजादी की लड़ाई में कई वर्षन तानूँ भाग लेत रहे। श्री कृष्णदत्त पालीवाल एवं गणेश शंकर विद्यार्थी इन अखबारन के सम्पादन के कारण ही अनेक बार जेल गए। मैंनैं अपनी युवावस्था के चढ़ाव पै इनसौं पत्रकारिता की जो दिशा पाई बामें मैं आगै बढ़नौ चाहत हतौ, पै घर की परिस्थितीन नैं मोहि अध्यापन की ओर मोड़ दीनौं। उदयपुर विश्वविद्यालय (सुखाड़िया विश्वविद्यालय) में शोध–निर्देशन कौ कार्य करत समय मैंनैं अपने पत्रकारिता–प्रेम के कारन ही श्री मनोहर प्रभाकर कूँ अपने निर्देशन में पत्रकारिता विषय पै पी.एच.डी. के काजैं शोध–कार्य करायौ। पत्रकारिता–सम्बन्धी कई लेख हू लिखे।

पत्रकारिता के सम्बन्ध में मेरौ जि अनुभव रह्यौ है कै निःस्वार्थ भाव सौं त्याग–भावना सौं आजादी के आगमन तक लगभग सिगरे पत्रकार अखबार निकास रहे हे । उनकी दृष्टि देश–प्रेम सौं प्रेरित रही। धीरै–धीरै जा क्षेत्र में जो गिरावट आई है, वाही कौ नतीजा है देश की वर्तमान अधोगति।

डॉ. नंदवाना–आपकी प्रतिष्ठा राष्ट्रीय स्तर पै है। रचनात्मक साहित्य के अलावा आपकूँ अन्य कौन–से ग्रन्थन पै सम्मान अरु पुरस्कार मिले हैं ?

डॉ.दिनेश– 'हिन्दी काव्य में नियतिवाद' मेरौ पी.एच.डी. कौ शोध प्रबन्ध है, जो भौत बड़े प्रकाशक किताब महल इलाहाबाद नैं 1963 में प्रकाशित कियौ हतौ अरु भौत जल्दी एक संस्करण बिक गयौ । हिंदी शिव काव्य का उद्भव और विकास" ग्रन्थ पै उत्तर प्रदेश सरकार कौ विशेष तुलसी–पुरस्कार प्राप्त भयौ। "प्रबुद्ध

चेतना और हिन्दी साहित्य'' नामक ग्रन्थ पै (नामान्तर सौं) देवराज उपाध्याय-पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी नैं दियौ। राजस्थान सरकार सौं प्रौढ़-साहित्य पै हू पुरस्कार मिल्यौ। जाके अलावा समस्त लेखन कूँ ध्यान में राखिकैं हू ''साहित्य श्रीनिधि'', ''रास्ट्रकवि'', ''साहित्य-शिरोमणि'', ''महामहोपाध्याय'', एवं ''विशिष्ट साहित्यकार'' आदि सम्मान समय-समय पै विभिन्न संस्थान नें दिए है। सूरति मिश्र के ब्रजभाषा में लिखित समस्त ग्रन्थन कौ मैंनें सम्पादन समालोचनापूर्वक कियौ है, जाके चारि ग्रन्थावली-खण्ड प्रकाशित है चुके हैं। जा कार्य के काजै मोय आगरा विश्वविद्यालय नै डी.लिट् की उपाधि सन 1972 में प्रदान करी। राजस्थान साहित्य अकादमी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नागरी प्रचारिणी सभा काशी तथा देश के अनेक विश्वविद्यालयन नैं मोय साहित्य सेवा के सम्मान-स्वरूप अपनी विद्वत-परिषदन कौ सदस्य बनायौ। राजस्थान सरकार एवं भारत सरकार की कछू हिन्दी-सलाहकार-समितियन में हू मोय सदस्य मनोनीत कियौ गयौ है।

डॉ.नंदबाना-आपनै हिन्दी साहित्य कौ इतिहास हू लिख्यौ है। कृपया अपनी इतिहास-दृस्टि पै कछू प्रकाश डारैं।

डॉ. दिनेश- मैनै सबसौं पैलै एक लघु इतिहास ''हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहास'' नाम सौं लिख्यौ हतौ। सन 1951 के लगभग ,जो करीब 10 वर्ष मध्यप्रदेश की हायर सैकण्डरी परीक्षा के पाठ्यक्रम में रह्यौ। डॉ. सम्पूर्णानंद नै नागरी प्रचारिणी सभा काशी सौ प्रकाशित हिन्दी साहित्य के बृहत इतिहास में हू मोसौं लिखाइकैं एक अध्याय छपवायौ। डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' में मेरौ एक अध्याय है। बड़े अकार मे मेरौ ''हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी नै प्रकाशित कियौ है। जा इतिहास में कवि और लेखकन की साहित्यिक देन कूँ नई दृस्टि सौं प्रस्तुत कियौ गयौ है अरु नवीनतम शोध के परिणामन कौ समावेश कियौ गयौ है। एक विशेष दृस्टि काल-विभाजन में रही है। आधुनिक काल कौ विभाजन केवल प्रवृत्ति-प्रेरक साहित्यकारन के नाम पै कियौ गयौ है। सन् 1943 सौं 1993 तक के युग कौ नाम जाही आधार पै पैली बार मैनैं ही अज्ञेय-युग रखौ है।

डॉ. नंदवाना–आप विदेश–यात्रान पै हू जात रहे हैं। आपकी इन यात्रान कौ उद्देश्य एवं अनुभव का रह्यौ है ?

डॉ. दिनेश– मैंने चीन,उत्तरी कोरिया, रूस, जर्मनी, मारीशस, जापान अरु थाईलैण्ड आदि देशन की यात्रा भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं धर्म दर्शन के सम्बन्ध में कीन्ही है। सिगरौ संसार आजादी सौं पैलैं भारत कौ लोहा इन क्षेत्रन में मानत हौ; आजादी के बाद भारत की इन क्षेत्रन की पुरातन देन कूँ नकारौ गयौ है। अत. ई भौत जरूरी है कै बाहर जाइकैं अपनी पुरातन सम्पदा कौ परिचय विस्तार सौं दियौ जाय। मैंने जाही दिशा में कछु प्रयास विभिन्न अवसरन पै कीनौ है। मेरौ जि अनुभव रह्यौ है कै बाहरी नकल के कारन अपनी सांस्कृतिक निधि के विनाश–काल में हू हमारी जीवन–पद्धति एवं मानवीय दृष्टि संसार के अनेक विकसित देशन सौं ज्यादा अच्छी हैं। जरूरी यही है कि उनकूँ पुनः संसार कौ व्यवहारिक परिचय दियौ जाय। भारतीय साहित्य की वर्तमान उपलब्धीन सौं तौ बाहरी जगत, अनभिज्ञ ही रह्यौ है। लै–दैं कैं रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद आदि के कछू नाम ही वे जानत हैं, जबकि हिन्दी के ही कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, पंत, प्रसाद, निराला, अज्ञेय, दिनकर, महादेवी आदि नैं मानवीय संवेदन प्रश्न पृष्ठ भाग सौं देखकैं जो निधि संसार कूँ सौंपी है, ऊ बेजोड़ है।

डॉ. दिनेश– साहित्य समाज या व्यक्ति कौ केवल दर्पण नाँय। समाज मानव–जीवन की सुख शान्ति के काजैं बनायौ गयौ है। नैतिकता अरु आस्था के बिना पारस्परिक सम्बन्ध नायँ चलि सकैं। हमारे जीवन में जो समस्याएँ आमैं हैं, उनकूँ समझनौ अरु समाधान खोजनौ साहित्यकार कौ काम है। लेकिन जि काम सरकारी कानूनन जैसौ नाहिं। साहित्यकार नैतिक मूल्यन की व्याख्या करत भयौ आस्था अरु विश्वास के बल पै ही जि काम करि सकत है। लेकिन नैतिकता में जाति, धर्म, अर्थ आदि के अवरोध आइ जात हैं। साहित्यकार कौ काम है कै ऊ इन अवरोधन कूँ मिटावन वारी दृस्टि अपनी रचनान सौं समाज कूँ देय। जा काम के काजैं अतीत और वर्तमान कूँ जोरिकैं चलनौं जरूरी है।

डॉ.नंदवाना– वैज्ञानिक अविष्कारन के कारन आज सिगरौ संसार सिमट कैं भौत निकट आय गयौ है अरु विश्वभाषा के रूप में अंगरेजी की प्रतिष्ठा है चली है। ऐसी दशा में आप ब्रजभाषा की कितनी सार्थकता मानौ ?

डॉ. दिनेश– समाज के होत भयेहू व्यक्ति जरूरी है, वाही भाँति विश्वभाषा या राष्ट्रभाषा के होवे पैहू मातृभाषा अरु क्षेत्रीय भाषा जरूरी हैं। घर–पड़ौस, गाँव, मौहल्ला और क्षेत्र–विशेष की शब्दावली,मुहावरे, कहावतें, लोकोक्ति आदि सब अरु ज्यों की त्यों न तौ राष्ट्रभाषा में समाय सकैं हैं, न विश्वभाषा उनकूँ नस्ट होवे ते बचाइ सकै है। याके काजैं ब्रजभाषा कौ ज्ञान, प्रचार–प्रसार अरु वाकी सम्पदा की रक्षा भौत जरूरी है। जिन लोगन नैं ब्रजभाषा–क्षेत्र में जन्म लियौ या पले–बढे है, उनके भाव अरु विचारन मे ब्रजभाषा घुली–मिली है अरु वाही सौं वे विश्वभाषा तक पौहूंच सकत है। अतः ब्रजभाषा की आज ही नायँ, हमेशा सार्थकता रहैगी। जहाँ तक जि माननौ है कै अंगरेजी विश्वभाषा है चली है, एकदम गलत है। कोई एक भाषा विश्वभाषा नाहिं है सकै। आज हू संसार के अनेक देशन में अंगरेजी के नाम लेवा नाहिं मिलत। कई स्वाभिमानी देश तौ आज हू अंगरेजी कूँ गुलामी की भाषा मानै है।

डॉ.नंदवाना– डाक्टर साहब! मैं एक अन्तिम प्रश्न और करनौ चाहूँ। ब्रजभाषा के काजैं आजु जो प्रयास है रहे है, उनसौं आप कहाँ तानूँ संतुष्ट हैं अरु कौन–से प्रयास आपकी दृष्टि में औरु अपेक्षित हैं।

डॉ. दिनेश– ब्रजभाषा मध्यकाल मे सिगरे देश की बिना प्रयास के ही राष्ट्रभाषा रही है। पूरे देश में अल्पाधिक मात्रा मे ब्रजभाषा मे रचना लिखी जात रही हैं। खड़ी बोली कौ प्रयोग अंगरेज शासन के आगमन के सग शुरू भयौ, जाकौ सम्बन्ध छुटपुट रूप में खुसरो के समय सौ चल्यौ आयौ हौ। अँगरेजन की जि चाल रही कै सिगरे देश मे फैली ब्रजभाषा कूँ हटायौ जाय अरु वाकौ स्थान एक ऐसी बोली कूँ दिवायौ जाय जो कम क्षेत्र मे बोली जाति है अरु जामे साहित्य–रचना हू अधिक नाहिं भई। ऐसौ करिकै वे अँगरेजी कौ प्रभुत्व बढ़ावन चाहत हते। वही भयौ। ब्रजभाषा कौ स्थान खड़ी बोली नै लियौ अरु अकेली वही हिन्दी कही जान लगी,जबकैं असली रूप में *ब्रजभाषा ही हिन्दी नाम की अधिकारिणी हती अरु खडी बोली आदि या विभाषाएँ* वाही कौ अंग हतीं। आज अंगरेजन की जा चाल पै आइकै कई हिन्दी विद्वान हू हिन्दी कौ इतिहास आधुनिक काल सौ मानन लगे है अरु जन–गणना मे राजस्थानी, ब्रजी, कन्नौजी, अवधी,भोजपुरी, बघेली आदि रूपन में प्रचलित हिन्दी कूँ हिंदी के बाहर करन लगे है। ऐसी परिस्थिति में ब्रजभाषा अकादमी या अन्य संस्थान सौ जो प्रयास शरू भये हैं, वे प्रशंसा के योग्य हैः लेकिन अबई भौत कछू करनौ है। हिन्दी तौ अब अंगरेजी ही होति जात है। जब तक हम वाके पूर्व रूपन की ओर नाँय लौटिंगे, तब

तानूँ हम अपने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक अस्तित्व के विनाश कूँ नाहि रोक सकत। अतः आज व्रजभाषा की रक्षा, विकास आदि के काजैं अनेक प्रयास करने हैं। व्रजभाषा के समस्त प्रचलित–अप्रचलित शव्दन कूँ संकलित करिकैं नयौ शव्द कोष वनानौ है। विभिन्न प्रदेशन में साहित्य के आदिकाल सौं अव तानूँ व्रजभाषा में जी साहित्य लिख्यौ गयौ वाकौ नयौ इतिहास तैयार करनौ है। जो प्रतिभाएँ आज काल साहित्य रचना करि रही हैं, उनकूँ तरह–तरह कौ प्रोत्साहन दैनौ है। गामन के लोग उन हिन्दी अखवारन कूँ नाहिं समझ पावत जिनमें अंगरेजी शव्दन की भरमार रहति है। अतः व्रजभाषा में ग्रामीण पाठकन के काजैं क्षेत्रीय समाचार–पत्र (अरु पत्रिकाएं हू) अपेक्षित हैं। ऐसे ही कुछ अन्य प्रयास हू जरूरी हैं। मोहि पूरौ भरोसौ है कै व्रजभाषा कौ प्रचार–प्रसार नाहिं रुकैगौ अरु वाही के माध्यम सौं हिंदी हू हिंदी रह सकैगी।

❑

मेरी रचना प्रक्रिया

डा. रामगोपाल शर्मा

साहित्य में रचना–प्रक्रिया कौ सवाल पच्छिम सौं आयौ है। वहाँ जि बात मानी जाय है कै वास्तु ,शिल्प, संगीत, आदि कलान की भाँति साहित्य–रचना हू एक काट–छाँट अरु नियमन की कला है पर जो लोग साहित्य रचना करैं है वे जि बात अच्छी तरह समुझत हैं कै साहित्य की हर एक विधा की रचना पैलैं सहज रूप में जनम लेय है, अरु वुई साँची रचना होवै। कविता तौ खासतौर सौं काहू प्रयास के बिना उत्पन्न होय है। जो कविता योजना बनाइकैं अरु पूरी कोसिस के बाद लिखी जाय है, बा कविता कौ असली रूप हू गायब है जाय है। मेरौ तौ जे ही विस्वास है अरु बिना प्रयास के ही सहज में लिखनौ मेरी रचना–प्रक्रिया मानी जाय सकै है।

कछू लोग कहिंगे कै कविता में छंद, संगीत, आदि कौ जो समावेस पुराने समय सौं होतौ आयौ है, बाकूँ सजान–सम्हारन के कारन एक खास रचना–प्रक्रिया की का जरूरत नाँय परती ? मेरौ निवेदन जि है कै मैनैं कबहूँ छंद वारी कविता या गीत की रचना करत समय न तौ छंद के चुनन की बात सोची है औरु नाहिं छंद की मात्रा या गण आदि कूँ गिनबे की कोसिस करी है। सहज मे जो कछु लिखि गयौ है, वाही कूँ सही मानिकैं केवल सब्दन, मुहावरेन आदि में भासा की मर्जादा के अनुसार जहाँ–तहाँ परिवर्तन करौ है। भासा की हू एक संस्कृति होवै। या यौं कहैं कै भासा पाठक की भावना औरु विचारन कौं अर्थन की विसेस मरिजादा में घेरैं है। रचना में जाही कारन सौं भासा कूँ माँजनौ–संवारनौ जरूरी होत है। कविता कौ एक समाज होय है। जा समाज में संगीत,चित्र आदि कलाएँ अरु दर्शन, व्याकरण आदि विधाएँ सामिल हैं। इन कला और विधान के अनुसासन की रच्छा के काजैं कविता की रचना

कूँ परखनौ जरूरी है। ई काम मेरी रचना प्रक्रिया में सामिल कियौ जाय सकै। समाज की मरजादा अरु परिस्थितीन कौ ध्यान रखनौ परै। हर साहित्यकार की जि जिम्मेदारी होवै है कै वू वाहरी अनुभवन कूँ वचाइ कैं अपने नए अनुभव समाज कूँ देय। जा कारन रचना सौं पैलैं समाज में रहिकैं गहरे औरु साँचे अनुभव हू लेनौ फिर उनकूँ सहज वनाइकैं प्रस्तुत करनौ हू मेरी रचना प्रक्रिया कौ अंग है। जो लोग केवल कल्पना के आधार पै रचना करत हैं, मैं उनमें सौं नाँय।

गद्य की रचना मेंहू सहजता कौ पच्छपाती सदा रह्यौ हूँ। निवन्ध, कहानी, उपन्यास आदि की रचना में कभी–कभी विषय सामग्री कौ गठन पैलैं करनौ परै लेकिन वाहू की एक सीमा है जो सहज अरु सांची अनुभूतीन कौं वचावति है। नाटक में पात्रनि के संवादन की रचना में विशेष ध्यान दैनौ परै, क्योंकि उनके चरित्रन कौ सहज विकास जरूरी है। या कारन विषयवस्तु की पूर्व योजना करनी परै। देश अरु समाज कूँ ध्यान में राखिकैं लिखी गई रचना ही सार्थक है सकै। गद्य की रचना में याही कारन सौं कविता की सहजता के संग एक विशेष कौसल सौं काम लैनौं परै ऐसौ मेरौ विस्वास रह्यौ है।

❑

एकलिंगनाथ जू कौ मंदिर

राजस्थान के उदयपुर सहर सौं 22 कि.मी. दूर ब्यावर–अजमेर मारग पै "कैलासपुरी" नाम कौ एक छोटो–सौ कस्बा है। यहाँ पुराने मेवाड़ राज्य के महारानान के आराध्य देवता भगवान एकलिंगनाथ कौ प्रसिद्धि मंदिर है। जाई कारन सौं जि कस्बा 'एकलिंगजी' नाम सौं हू जानौ जात है। अरावली परबत की घाटिन सौं गुजरबे वारे मारग के किनारे बनौ भगवान शिव कौ जे मंदिर प्रकृति अरु धरम कौ अनोखौ, मन कूँ हरनवारौ पावन स्थान है।

पुरानन में हू एकलिंग भगवान की पूजा कौ प्रसंग पायौ जात है। 'वायु पुराण' में "श्री एकलिंग महात्म्य" में जि बरनन मिलतु है:–

"इन्द्रः सर्वसुरेश्वरः कृतयुगे भक्त्यामाराधयत्।
त्रेतायां सकलाभिलाषफलिनी धेनुस्तथा द्वापरे।
नागेशः किल तक्षकः कलियुगे हारीतनामा मुनिः।
सोऽयं सर्वजगद्गुरुर्विजयते श्रीमदेकलिंगः प्रभुः॥

जा उदाहरन सौं भगवान एकलिंग की पूजा–प्रार्थना कौ सम्बन्ध सतयुगीन इन्द्र सौं जुरै है। आधुनिक इतिहासकारन नैं एकलिंग मंदिर की इतनी प्राचीनता स्वीकार नाहिं करी पै बापा रावल के समय सौं जा मंदिर की ख्याति में कोऊ बिवाद नाँय है।

जो प्रमान अब मिलत हैं, विनसौं जि बात सिद्ध है कै जोगीराज

'हारीतराशि' जा स्थान के आदि आचार्य हते। वे मेवाड़ राज्य के संस्थापक बापा रावल के गुरु हते। उनकौ समय विक्रम संवत् ७९१ सौं ८१० तक मानौ जाय है। ऐसौ है सकत है कै जे समै जा स्थान की दुवारा प्रसिद्धि कौ समै हो क्योंकि ऐसे अनेक प्रमान मिलैं हैं, जिनसौं जा स्थान की प्राचीनता सिद्ध होय है।

'एकलिंग–महात्म्य' के अनुसार द्वापर में जब जनमेजय नैं नागयज्ञ करौ हतौ तब तच्छक साँप डरिकैं एकलिंग जू की सरन में गयौ । फिरि बु कुटिलगंगा में एक कुंड बनाइकैं रहन लगौ । कैलासपुरी में अबहू कुटिला नदी अरु तच्छक कुंड है औरु आस–पास की पूरी जगह 'नागहद्र' कहलाबै है। जि नाम बापा रावल के पैलैं सौं ही प्रसिद्ध रह्यौ है। जा 'नागहद्र' कौं ही अब 'नागदा' कहन लगे हैं। जि एक गाँव है, जा गाँव में रहनवारी बामन अरु बनिक जाति हू 'नागदा' कही जाँय हैं। एक जि मान्यता हू है कै 'तच्छक कुंड' में नहावे सौं साँप के काटवे कौ डर नाहीं रहै। जि बात हू कही जाय है कै कुंड में नहावै सौं साँप के काटे कौ बिस हू उतरि जाय है। लोग कहत हैं कै यहाँ साँपन की अधिकता हैबे पै हू काहू की साँप के काटबे सौं मौत नाँय सुनी गई।

कैलासपुरी में दो तालाब हैं। उनमें सौं एक कौ नाम 'इन्द्रसरोवर' है। जि सरोवर भौत बड़ौ है, गहरौ हू भौत है। मंदिर के दच्छिन–पूरब में बने जा सरोवर के बारे में 'एकलिंग महात्म्य' में उल्लेख मिलै है कै बृत्रासुर के बध सौं लगे ब्रह्म हत्या के पाप सौं छुटकारौ पाबे के काजैं यहाँ इन्द्र नैं एकलिंग भगवान की आराधना करी हती। कथा कछू रही होइ पै इतनौ तौ सिद्ध होय है ही कै ई सरोवर बापा रावल औरु हारीतराशि सौं हू पुरानौ है औरु लोक बाकौ सम्बन्ध एकलिंग जू की भक्ति सौं जोड़त हैं। ऐसी मान्यता हू है कै जा सरोवर में स्नान करन के बाद भगवान एकलिंग जू के दर्सन करन वारेन कूँ बिना जज्ञ आदि किए ही पापन सौं छुटकारौ मिलि जाय है। 'एकलिंग माहात्म्य' में ऐसौ उल्लेख मिलत है –

इह तीर्थे नरो यात्रां कुर्यात् पर्वणि पर्वणि।
ब्रह्म हत्यादिपापानामुपपातक कर्मणाम्।
क्षयं करोति भूतेश एकलिंगः कलौयुगे।
न तीर्थेर्नतपोरातैर्न यरोर्वहुविस्तरैः॥

यत्फलं प्राप्यते ब्रह्मन्नेकलिंगावलोकनात्॥

लोगनि में जि बात प्रचलित है कै शुरू में भगवान एकलिंग जू की मूरति सफेद पत्थर की हती। जो मूरति अब है वू स्याम पत्थर सौं बनी है अरु चार मुँह वारी है, जबकि पहली मूरति लिंगाकार ही हती। दच्छिन द्वार पै लगी प्रशस्ति सौं जि ज्ञात होय है कै चार मुँह वारी स्याम मूरति महाराना रायमल नैं प्रतिष्ठित कराई हती। भगवान शिवजी के सब तीर्थन मे चार मुँहवारी मूरति कौ भौत बड़ौ महत्व है क्योंकि जामैं एक मुख ब्रह्मा कौ, दूसरौ विष्णु कौ , तीसरौ सूर्य कौ अरु चौथौ मुख रुद्र कौ है।

मंदिर के परकोटा सौं कछु दूर बने इन्द्रसरोवर के तटबन्ध भौत मजबूत औरु आकर्षक हैं। वहाँ तीर्थ यात्रीन के काजैं नहान आदि कौ सुन्दर इन्तजाम है। एक किनारे पै दो विष्णु मंदिर औरु महाराना के दो महल हू बने भए हैं। मुख्य मंदिर सौं ईसान कोन में बापा रावल की समाधि है, जहाँ मंदिर हू बनौ है औरु पास की पहाड़ी सौं एक सुन्दर झरना झरै। जो लोग एकान्त में साधना करनौ चाहें, उनके काजैं जि भौत ही सान्त– एकान्त अरु मन कौं स्थिर करन वारी जगह है।

सचमुच कैलासपुरी एक दिव्य आनंद दैनवारी नगरी है। यहाँ प्रकृति अरु पुरुष की अनौखी साधना प्रत्यक्ष होन लगै। जि तीरथ मेवाड़ राज्य कौ सैकड़ों सालनि सौं गौरव रह्यौ है। मेवाड़ कौ हर एक महाराना भगवान एकलिंग कूँ अपनौ आराध्य देवता ही नाँय मेवाड़ कौ स्वामी हू मानतौ रह्यौ, है और खुद कूँ उनकौ दीवान मानि कैं राजकाज चलातौ रह्यौ है। मेवाड़ के पट्टे–परवाननि पै ''एकलिंगो जयति'' अंकित करन की प्रथा हू रही है। भगवान एकलिंग की भक्ति की जि परम्परा आजहू चली आय रही है, जो महाराना प्रताप की पुण्य भूमि के गौरव कूँ स्मरन करात है।

(लेखक के जा वर्ष लिखे
''राजस्थान के धार्मिक स्थान''
नामक अप्रकाशित ब्रजभाषा ग्रन्थ कौ एक अंस)

❑

भाषा, लिपि, अरु संस्कृति कौ भविस्य

ऐसौ कोऊ देस नाहिं जाकी स्वाधीनता बाकी अपनी संस्कृति के बिना सुरच्छित रहि सकै। गुलाम देस के काजैं आजादी कूँ पानौ जितनौ कठिन है, बाते ज्यादा कठिन आजादी पाइवे के बाद रच्छा कठिन होय है। भारत नैं एक लम्बी लड़ाई के वाद आजादी पाई हती, जि बात नई पीढ़ी कूँ अच्छी तरह नाहिं समझाई जाय रही। पच्छिमी देसन नैं योजना वनाइकैं हमारे देस की संस्कृति पै एक संग कैई हमला करे हैं। देस की संस्कृति कूँ नष्ट करन काजें या बाकौ विकास रोकन काजैं राष्ट्र भाषा कूँ बिगाड़नौ, देस की सभी भाषान कूँ आपस में लड़ानौं अरु हीनता की गाठें बढ़ानौ एक खास योजना वनाइकैं प्रारंभ कियौ गयौ। नतीजा जि भयौ कै हिन्दी की खिलाफत सिगरे देस में फैल गई अरु अंगरेजी कौ राज बरावर चलतौ रह्यौ, जो धीरैं–धीरैं पक्कौ होत जात है। जाकौ फल जि भयौ है कै हमारे देस की सभी भाषान के वे सव्द विगाड़े जाइ रहे हैं जो हमारी संस्कृति के अर्थन कूँ वहन करत हैं। एक ऐसौ षड्यंत्र हू चालू है, जासौं हिन्दी अपनी विभाषान अरु वालिन के सव्दनि कौं छोड़िकैं अंगरेजी सव्दनि कूँ अपनाय लेइ। नव्वे करोड़ जनता में एक–दो करोड़ लोग ऐसे हैं, जो या षड्यंत्र में लगे हैं। आजकल दूरदर्शन (देसी–विदेसी दोनों) कौ माध्यम खासतौर सौं भाषा और संस्कृति के बिनास में लगौ है। जो लोग अंगरेजी के माध्यम सौं सिच्छित भये हैं या ऊँची कच्छानि में जिन्नैं अंगरेजी माध्यम अपनायौ है, वे बेहिचक भारतीय भाषान में अंगरेजी सव्दनि की ही नाँय, मुहावरेन और वाक्यन कौहू प्रयोग करत हैं। ऐसौ हू देखौ गयौ है कै वे पूरे–के–पूरे वाक्य हू अंगरेजी के मिलाइकैं हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा बोलत हैं पर जब कोऊ भारतीय भाषा प्रेमी अंगरेजी में भासन

देत समय उच्चारन भारतीय लहजा में करै या भारतीय सब्द मिलाइ कै बोलत है तौ, उन्हें बुरौ लगै अरु वे भासनकर्ता कौ मजाक बनावत हैं। लगभग ढाई सौ बरस ताँनू देस कूँ गुलाम बनाइकै रखनबारी अंगरेजी भासा की रच्छा कौ आजादी के बाद पचास बरस सौं इन देसी लोगन नैं ठेका ले राखौ है अरु सरेआम वे राष्ट्रभाषा अरु अन्य भारतीय भासान की उन्नति में रोड़ा बनि रहे है। फल जि भयौ है कै हिन्दी की आधारभूत भासाएँ पिछड़ती जा रही है। ब्रजभाषा उनमे ते एक रही है। हिन्दी के सब्द-भंडार में जाके अस्सी फीसदी सब्द हैं, जिनमे सौ ज्यादातर सब्दन की जगह अंगरेजी सब्दन कौ प्रयोग अब होन लगौ है। जाकौ नतीजौ जि है रह्यौ है कै ब्रज की संस्कृति हू भुलाई या बिगाड़ी जाय रही है।

जि सही है कै अनेक देस-प्रेमी अरु आजादी के हामी लोग भारतीय भासान की रच्छा के लएँ संघर्ष करत रहे हैं अरु अब उनमे फिर नई चेतना आय रही है, लेकिन ऐसौ लगै है कि वे हू अगरेजी के प्रचारकन के एक नए षड्यंत्र सौं बेखबर हैं। जि नयौ षड्यंत्र लिपि के बारे में चलन लागौ है। दूरदर्शन अरु सिनेमा में अब सिगरे नाम रोमन लिपि में दिए जान लगे हैं। योजना के तहत ह्याँ तेऊ देवनागरी लिपि हटाई जाय रही है। मैंने जा बारे में तीन लेख हू कछु पत्र-पत्रिकान में छपाए ,जिनकौ आम पाठक नैं स्वागत करौ, कई पत्र हू आए: पर जो लोग ऊपर बैठे हैं उनमें सौं काऊ नैं जा बात कौ सवाल काऊ प्रभावशाली मंच सौं नाहिं उठायौ कै देवनागरी लिपि कूँ हटाइकै रोमन लिपि क्यों लाई जा रही है। जि लिपि केवल हिन्दी की ही लिपि नाँय, जामें वेद-पुरान-शास्त्र लिखे गए हैं, पाली प्राकृत और अपभ्रंश कौ सिगरौ साहित्य जाई लिपि में है। हिन्दी-परिवार की सिगरी भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जामें हैं। मराठी भासा की हू यही लिपि है। उत्तर भारत की सिगरी भासान की लिपिन कौ हू प्राचीन स्रोत देवनागरी ही रही है। साफ जाहिर है कै देवनागरी लिपि पै हमलौ करिकै रोमन लिपि सिगरी भारतीय भासान की जड़ काटनौं चाहति है। हमें याद होइगौ कै उत्तर भारत के विश्वविद्यालयन में हू भौत समय तक संस्कृत कौ साहित्य अंगरेजी भासा में पढ़ायौ जातौ। का आजादी के पचास बरस बादि अब ऐसौ समय आन बारौ है कै हिन्दी भासा रोमन लिपि में लिखी जावैगी ?

आज तौ काहु के काननि पै जूँ नाहिं रैंगि रही। सब अपने-अपने स्वारथ की पूर्ति में लगि रहे हैं। जो चिनगारी भारत की संस्कृति के विसाल भवन में लगाई जाय रही है, बाकी ओर अगर शुरू में ध्यान नाहिं दियौ गयौ तौ सांस्कृतिक गुलामी कौ एक भयकर इतिहास बनेगौ।

भारतीय संस्कृति पै जो काले बादर घिरत चले आवत हैं, वे विश्व की मानवता के काजैं हूँ ख़तरनाक हैं। खुसी की बात है कै राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी ब्रजभाषा की रच्छा अरु विकास की दिसा में अग्रसर है रही है। देस–प्रेमी लोगनि कूँ जा मंच सौं देवनागरी लिपि की रच्छा की आवाज उठानी जरूरी है। जो देवनागरी बचैगी तौ वे भाषाऊ बच सकैगी जो यामें लिखी पढ़ी जाँय हैं। अरु जो भासा बचेगी तौ भारत की हजारों बरस पुरानी संस्कृति की रच्छा है सकैगी। अंगरेजी सौं प्रेम करन वारे कछु लोग कहिंगे कै भारतीय संस्कृति तौ भौत पिछड़ी भई संस्कृति है। आज दुनिया कहाँ ते कहाँ पौहूच चुकी है। ये ही वे लोग हैं, जो संस्कृति कौ सही रूप नाहिं समुझत। ये लोग नाचकूद अरु पहनावे कूँ संस्कृति मानत हैं। ये लोग भूल जात हैं कै भारत की संस्कृति कौ प्रवाह हजारों सालनि सौं नित नवीनता लेतु भयौ चलौ आय रह्यौ है अरु ई नवीनता आचार–विचारन की नवीनता है ,जासों परिवार, समाज और देस गहरी मानव–संवेदना सौं जुरे भए हैं। जि संवेदना अन्य देसन में कहूँ दिखाई नाहिं देति तो कई देसनि में घूमिकैं जि बात देखि चुकौ भारत ही एकु ऐसौ देस बचौ है, जहाँ आज हू गहरी मानव–संवेदना बची है। भारतीय संस्कृति कौ यही एक तत्व सदा विकास करनवारी शक्ति है। पच्छिम के देस याही तत्व पै अंगरेजी भासा के माध्यम सौं हमला करि रहे हैं। ह्याँ के आदमी कूँ ऐसौ बनायौ जाय रह्यौ है कै ऊ परिवार,समाज, और देस कूँ भूलिकैं अपनी मौज मस्ती में ही अपने जीवन की सार्थकता मानन लगै। आज जि बात बड़े बड़े सहरन में तौ इतनी ज्यादा बढ़ि गई है कै चारों ओर जंगलराज दिखाई दैन लागौ है। आदमी आदमी कूँ कुचलि कैं भागौ जाय रह्यौ है। धन की अनाप–सनाप होड़ में माँ–बाप, भाई–बहन, बेटा–बेटी सब कौ सम्बन्ध बेकार होत जात है। ऐसी आपा–धापी में आदमी कौ दिमागी नंगौपन जा हद तक बढ़ि गयौ है कै तरह–तरह के जघन्य पाप होन लगे हैं। सहरन सौं धीरै–धीरै भारतीय संस्कृति के विनास की जि लीला गाँवन तक जान लगी है। जिन लोगन कूँ आजादी सौं प्यार है, उन्हें जि बात गंभीरता सौं सोचनी चहिए कै फूहड़ गाने सुबह शाम मंत्रन की तरह जब हमारे घरनि में गूँजत रहेंगे, तब नई पीढ़ी कौ भविष्य कैसै बनैगौ और कैसी संस्कृति भारत में पनपैगी का यई है संस्कृति कौ नयौ तानौ–बानौ। आज हमारे सिनेमान में जो कछु दिखायौ जाइ रह्यौ है, वासों आँखिन पै कैसौ असर परि रह्यौ है ? का हमारी नई पीढ़ी कूँ लिपि, भासा अरु संस्कृति की ऐसी धरोहर ही उन्नति के सिखरनि पै चढ़ावैगी ? का हमारी आजादी अपने अस्तित्व कूँ खोइकैं बची रहि सकैगी ? पढ़े–लिखे लोगन कूँ जि बात गंभीरता सौं सोचनी चहिए।

❑

मेरी सृजन यात्रा के पथ-चिन्ह

डा. रामगोपाल शर्मा

हमारे पूर्वज जयपुर औरु सीकर के बीच बसे एक गाँव (जगनि की वही के अनुसार "रामसिंह कौ पुरा") के रहनवारे हते। बाद में वे भरतपुर राज्य के दीवान (अरु मंत्री) रहे। वे दो भाई हते। बड़े कौ नाम हतौ पं. गंगाधर मिश्र। भरतपुर महाराज नैं विनकूँ बटेसुर(बटेश्वर) तीरथ के पास विनकी इच्छा के कारन–पाँच गाँव की जमीदारी खैरात में दई। इन गाँवनि में 'सिधावली(सिद्धावलि) नए सिरे सौं विन्नै बसाई अरु पास के 'मई' गाँव में एक "धूरिकोटु बनवायौ, जो अधूरौ ही छोड़िकैं पंडित गंगाधर मिश्र स्वर्ग सिधार गए। जि धूरिकोटु आजु हू अधूरौ मौजूद है। अभई गांव में ही सात मंजिल कौ एक विसाल महलहू विन्नैं बनवायौ हतौ जो आजहू टूटौ–फूटौ वा समय की गवाही दै रह्यौ है। पण्डित गंगाधर मिश्र की वंस परम्परा में सिधावंली गाँव मे (जो अब तहसील बाह जिला आगरा में है अरु पैलैं भरतपुर राज्य कौ ही भाग हतौ) पण्डित देवीप्रसाद मिश्र के पौत्र अरु पण्डित कन्हैया लाल मिश्र के पुत्र के रूप में माता सियादुलारी के गर्भ सौं 22 मई 1927 ई. शनिवार कूँ मैरौ जनम भयौ।

प्राइमरी स्कूल में जब मेरौ नाम लिख्यौ गयौ, तब प्रधानाध्यापक नैं 5 जुलाई 1929 ई. मेरे जन्म की तारीख लिख दई जो अब मानी जाति है। बड़े लाड़–प्यार सौं दादी अमृता देवी नैं मेरौ पालन–पोषण कियौ अरु खानदान की मर्जादनि कूँ तोर कैं मोहि पाठशाला में पढ़न कूँ भेज्यौ, क्योंकि पिताजी तक पूरे गाँव के मिश्र बालक–बालिकान कौं स्कूल में पढ़ावन की मनाही हती। शुरू शरू में कछू दिननि तानूँ मोकूँ हू प्रसिद्ध राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी के (वंस–नाते) चाचा श्री पुखी पण्डित (पुष्पदन्त वाजपेयी) घर पै ही संस्कृत पढ़ावन कूँ आवत रहे।

हमारे गाँव के पास जमुना नदी बहति है। करारें,टीले, भरिका, खार, घनौ जंगल अरु जमुना की सुन्दर कछारें मेरे बचपन अरु किसोर जीवन कूँ अपनी विसेसतानि सौं लुभावति रहीं। तरह–तरह सौं खेलत–कूदत वहीं मेरी कविता कौ जनम भयौ ।

बाह सौं आगरा तानूँ पढ़ाई–लिखाई कौ जो क्रम चल्यौ, बाकौ परिनाम, एम.ए. (संस्कृत) अरु एम.ए.(हिन्दी) की उपाधिन के रूप में सामनैं आयौ। बाह में भदावर विद्या मंदिर नाम सौं एक उच्चतर विद्यालय बन्यौ जो बाद में डिग्री कालेज ह्वै गयौ अरु बाके ट्रस्टीन में मोय शामिल कियौ गयौ। बाह तहसील कौ क्षेत्र 'भदावर' कहावत है। भदावर विद्या मंदिर में हिन्दी के प्राध्यापक कौ पद सँभारिबे के संग–संग ''भदावर भारती'' नामक एक पत्रिका हू मैंनें अपने सम्पादन में निकारी औरु कछु समय तक 'विशाल भारत'मासिक (कलकत्ता) के काजैं पण्डित श्री राम शर्मा, सम्पादक,कूँ सहयोग दियौ अरु कछू दिननि तानूँ तत्कालीन क्रान्तिदर्शी दैनिक 'सैनिक' के साप्ताहिक में हू मैं सम्पादन–सहयोगी रह्यौ।

मेरी साहित्य–रचना कौ आरंभ ब्रजभाषा की कवितान सौं भयौ। बटेश्वर के मेला में पचास हजार सौं ज्यादा श्रोतान के बीच मैंनें अपनी पैली ब्रजभाषा कविता कौ पाठ कियौ, जाहि सुनिकैं कवि–सम्मेलन के अध्यक्ष विशाल भारत के प्रसिद्ध सम्पादक पण्डित श्री राम शर्मा नैं जो प्रशंसा करी बू मेरे आगैं के जीवन कौ पाथेय सिद्ध भई। वे वा समय उत्तर प्रदेश सरकार की कृषि–विकास समिति के अध्यक्ष हते। वे अपनी जीप लैकैं मेरे घर आए औरु अपने संग आगरा लै गए। तबसौं मेरी साहित्य साधना कौ अटूट क्रम बन गयौ। पत्र–पत्रिकान में मेरी रचनाएँ छपन लगीं। धीरे धीरे मैं ब्रजभाषा की कवितान की ठौर खड़ी बोली में अधिक लिखन लग्यौ। ब्रजभाषा की ज्यादातर कविताएँ अप्रकासित ही रहीं। खड़ी बोली में अब तानूँ 18 काव्य (सारथी महाकाव्य सहित), 2 उपन्यास, एक कहानी संग्रह, 8 नाटक तथा 75 के करीब अन्य विषयन में (आलोचना शोध आदि) की पुस्तकें प्रकासित है चुकी हैं। लेकिन ब्रजभाषा की तौ फुटकर रचनाएँ ही छपी हैं। पुस्तक–रूप में ब्रजभाषा के तीन काव्य संग्रह तैयार हैं, जिनमें एक दिनेश दोहावली हू सामिल है। ब्रजभाषा में तीन एकांकी नाटक हू भौत पैलैं मैनें लिखे हते, जो अब पुरानी फाइलनि में मिलि गए हैं। ब्रजभाषा अकादमी की प्रेरना सौं अब चार–पाँच एकांकी ब्रजभाषा में औरु तैयार करि रह्यौ हूँ जासौं एक पुस्तक बनि सकै।

सन् 1958 ई.के अक्टूवर मास सौं मैं भरतपुर अरु महारानी श्री जया डिग्री कॉलेज मे प्राध्यापक नियुक्त भयौ। वहाँ 'बुद्ध की हाट' अरु वी नारायन गेट पै हमारे बस के लोगन के निवास हते। रिश्ते मे चाचा लगन वारे एक भदौरिया मिश्र, 'वीनारायन गेट' के पास रहते। वे बोले बेटा! जा मकान में तिहारे पिताजी कौ हू खानदानी हिस्सा है, सो यहां हमारे संग रहौ। मैनै उन्हें धन्यवाद दियौ, लेकिन मैं रह्यौ अपने एक रिश्तेदार वैद्य के घर, जिनकौ लक्ष्मण मंदिर पै औषधालय हतौ। कई पीढ़ीन के बाद मेरे रूप में पण्डित गंगाधर मिश्र कौ खानदान फिर भरतपुर लौट्यौ। चार बरस तानूँ भरतपुर के कॉलेज में मैं रह्यौ अरु यहीं सौं मेरी रचनानि के प्रकासन की परम्परा तेजी सौं आगैं बढ़ी। वाह मे निवास के समय मेरी तीन पुस्तकें छपीं हती–वीरांगना, संघर्षो के राही, विश्वज्योति बापू। भरतपुर में श्री मूलचंद गुप्त नैं मेरे साहित्य क़े प्रकासित करन कौ बीड़ा उठायौ। उन्नैं साहित्यालोक प्रकासन की स्थापना करिकैं मेरी जो पुस्तकें प्रकासित करीं वे हैं–

1. संघर्षो के राही(दूसरा संस्करण, गीत संग्रह)
2. जलती रहे मशाल(गीत–संग्रह)
3. आयाम (नई कविताएँ)
4. जय घोष (गीत–संग्रह)
5. गौरव गान (गीत–संग्रह)
6. दुर्वासा (खण्ड–काव्य)
7. हिमप्रिया (खण्ड–काव्य)
8. सारथी (महाकाव्य)
9. उत्सर्ग (खण्ड काव्य)
10. हिम्पुरुष (एकांकी–संग्रह)

सन् 1962 में मैं गवर्नमेण्ट कालेज, अजमेर में स्थानांतरित है गयौ। वहाँ दो साल रहिकै सन् 1964 मे मैं उदयपुर के विश्वविद्यालय में स्थानान्तरित है गयौ।

भरतपुर के कार्य–काल में मैंनै "हिन्दी काव्य मे नियतिवाद" विसय पै पी.एच.डी. की उपाधि सन् 1960 ई. में प्राप्त करी औरु अपनी अप्रकासित काव्य कृति "मधुरजनी" पै राजस्थान साहित्य अकादमी कौ काव्य–पुरस्कार हू पायौ। अजमेर में निवास के समय मेरी "हम धरती के लाल" गद्य कृति राजस्थान सरकार सौं पुरस्कृत भई अरु 'लोक देवता जागा' नाटक पै भारत सरकार कौ पुरस्कार

हमारे गाँव के पास जमुना नदी बहति है। करारें,टीले, भरिका, खार, घनौ जंगल अरु जमुना की सुन्दर कछारें मेरे बचपन अरु किसोर जीवन कूँ अपनी विसेसतानि सौं लुभावति रहीं। तरह–तरह सौं खेलत–कूदत वहीं मेरी कविता कौ जनम भयौ ।

वाह सौं आगरा तानूँ पढ़ाई–लिखाई कौ जो क्रम चल्यौ, बाकौ परिनाम, एम.ए. (संस्कृत) अरु एम.ए.(हिन्दी) की उपाधिन के रूप में सामनैं आयौ। बाह में भदावर विद्या मंदिर नाम सौं एक उच्चतर विद्यालय बन्यौ जो बाद में डिग्री कालेज ह्वै गयौ अरु बाके ट्रस्टीन में मोय शामिल कियौ गयौ। बाह तहसील कौ क्षेत्र 'भदावर' कहावत है। भदावर विद्या मंदिर में हिन्दी के प्राध्यापक कौ पद सँभारिबे के संग–संग ''भदावर भारती'' नामक एक पत्रिका हू मैंनैं अपने सम्पादन में निकारी औरु कछु समय तक 'विशाल भारत'मासिक (कलकत्ता) के काजैं पण्डित श्री राम शर्मा, सम्पादक,कूँ सहयोग दियौ अरु कछू दिननि तानूँ तत्कालीन क्रान्तिदर्शी दैनिक 'सैनिक' के साप्ताहिक में हू मैं सम्पादन–सहयोगी रह्यौ।

मेरी साहित्य–रचना कौ आरंभ ब्रजभाषा की कवितान सौं भयौ। बटेश्वर के मेला में पचास हजार सौं ज्यादा श्रोतान के बीच मैंनैं अपनी पैली ब्रजभाषा कविता कौ पाठ कियौ, जाहि सुनिकैं कवि–सम्मेलन के अध्यक्ष विशाल भारत के प्रसिद्ध सम्पादक पण्डित श्री राम शर्मा नैं जो प्रशंसा करी बू मेरे आगैं के जीवन कौ पाथेय सिद्ध भई। वे वा समय उत्तर प्रदेश सरकार की कृषि–विकास समिति के अध्यक्ष हते। वे अपनी जीप लैकैं मेरे घर आए औरु अपने संग आगरा लै गए। तबसौं मेरी साहित्य साधना कौ अटूट क्रम बन गयौ। पत्र–पत्रिकान में मेरी रचनाएँ छपन लगीं। धीरे धीरे में ब्रजभाषा की कवितान की ठौर खड़ी बोली में अधिक लिखन लग्यौ। ब्रजभाषा की ज्यादातर कविताएँ अप्रकासित ही रहीं। खड़ी बोली में अब तानूँ 18 काव्य (सारथी महाकाव्य सहित), 2 उपन्यास, एक कहानी संग्रह, 8 नाटक तथा 75 के करीब अन्य विषयन में (आलोचना शोध आदि) की पुस्तकें प्रकासित है चुकी हैं। लेकिन ब्रजभाषा की तौ फुटकर रचनाएँ ही छपी हैं। पुस्तक–रूप में ब्रजभाषा के तीन काव्य संग्रह तैयार हैं, जिनमें एक दिनेश दोहावली हू सामिल है। ब्रजभाषा में तीन एकांकी नाटक हू भौत पैलैं मैंनें लिखे हते, जो अब पुरानी फ़ाइलनि में मिलि गए हैं। ब्रजभाषा अकादमी की प्रेरना सौं अब चार–पाँच एकांकी ब्रजभाषा में औरु तैयार करि रह्यौ हूँ जासौं एक पुस्तक बनि सकै।

सन् 1958 ई.के अक्टूबर मास सौ मैं भरतपुर अरु महारानी श्री जया डिग्री कॉलेज मे प्राध्यापक नियुक्त भयौ। वहाँ 'बुद्ध की हाट' अरु बी नारायन गेट पै हमारे बंस के लोगन के निवास हते। रिश्ते में चाचा लगन वारे एक भदौरिया मिश्र, 'बीनारायन गेट' के पास रहते। बे बोले बेटा! जा मकान में तिहारे पिताजी कौ हू खानदानी हिस्सा है, सो यहां हमारे संग रहौ। मैनैं उन्हें धन्यवाद दियौ, लेकिन मैं रह्यौ अपने एक रिश्तेदार वैद्य के घर, जिनकौ लक्ष्मण मंदिर पै औषधालय हतौ। कई पीढ़ीन के बाद मेरे रूप में पण्डित गंगाधर मिश्र कौ खानदान फिर भरतपुर लौट्यौ। चार बरस तानूँ भरतपुर के कॉलेज में मैं रह्यौ अरु यहीं सौं मेरी रचनानि के प्रकासन की परम्परा तेजी सौं आगें बढ़ी। बाह मे निवास के समय मेरी तीन पुस्तकें छपीं हती–वीरांगना, संघर्षों के राही, विश्वज्योति बापू। भरतपुर में श्री मूलचंद गुप्त नैं मेरे साहित्य के प्रकासित करन कौ बीडा उठायौ। उन्नैं साहित्यालोक प्रकासन की स्थापना करिकै मेरी जो पुस्तके प्रकासित करीं वे हैं–

1. संघर्षों के राही(दूसरा संस्करण, गीत संग्रह)
2. जलती रहे मशाल(गीत–संग्रह)
3. आयाम (नई कविताएँ)
4. जय घोष (गीत–संग्रह)
5. गौरव गान (गीत–संग्रह)
6. दुर्वासा (खण्ड–काव्य)
7. हिमप्रिया (खण्ड–काव्य)
8. सारथी (महाकाव्य)
9. उत्सर्ग (खण्ड काव्य)
10. हिमपुरुष (एकांकी–संग्रह)

सन् 1962 मे मै गवर्नमेण्ट कालेज, अजमेर में स्थानांतरित है गयौ। वहाँ दो साल रहिकैं सन् 1964 में मै उदयपुर के विश्वविद्यालय मे स्थानान्तरित है गयौ।

भरतपुर के कार्य–काल में मैंने "हिन्दी काव्य मे नियतिवाद" विसय पै पी.एच.डी. की उपाधि सन् 1960 ई. मे प्राप्त करी औरु अपनी अप्रकासित काव्य कृति "मधुरजनी" पै राजस्थान साहित्य अकादमी कौ काव्य–पुरस्कार हू पायौ। अजमेर में निवास के समय मेरी "हम धरती के लाल" गद्य कृति राजस्थान सरकार सौं पुरस्कृत भई अरु 'लोक देवता जागा' नाटक पै भारत सरकार कौ पुरस्कार

मिल्यौ। यों मेरी साहित्य साधना कौ जो क्रम चल्यौ वाहि मेरे उददपुर में पहुँचबे पै ज्यादा बल मिल्यौ क्योंकि जा नगर कौ वातावरण मेरे स्वभाव औरु रचना के ज्यादा अनुकूल रह्यौ।

उदयपुर विश्वविद्यालय मे 1964 ई. मैं प्राध्यापक के पद पै ही आयौ हतौ। 1972 ई में मैं रीडर अध्यक्ष चुनौ गयौ अरु फिर एक साल वाद ही प्रोफेसर अध्यक्ष है गयौ। जा पद पै मैं 1989 तक रह्यौ अरु सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय कौ अधिष्ठाता हू तीन बार बनायौ गयौ। धीरे–धीरे हमारौ परिवार उदयपुर में ऐसौ रमि गयौ। जैसै कै पीढ़िन ते जाही नगर में रहत आयौ होय। मकान हू बनाइ लीन्हों अरु अब तौ उदयपुर छोड़न की काहू सदस्य की इच्छा नाहिं होवै। श्रीनाथद्वारा में श्रीनाथजू के दर्शन करिकैं मन ब्रज–वास कौ ही आनंद अनुभव करन लगै है।

मैं भरतपुर आयौ तब तानूँ दो कन्याएँ जन्म लै चुकी हतीं। भरतपुर में तीसरी कन्या नैं जन्म लियौ। अरु अजमेर में पुत्र भयौ, वाकौ नाम उमेश मिश्र है। उदयपुर में एक कन्या भई। यों मेरी चार कन्या अरु एक पुत्र तथा पत्नी सुखदेवी के परिवार के साथ कछू समय तक मेरे माता–पिता हू रहे जो क्रमशः 1968 और 1972 में मेरौ साथ छोड़ि स्वर्ग सिधार गए। 1977 सौं 1988 तक संताननि के विवाह की जिम्मेदारी पूरी करीं अरु तब तक 1989 में सेवा–निवृत्ति कौ समय आय गयौ। लेकिन पारिवारिक व्यस्तान के बीच हू मैं निरन्तर साहित्य–सेवा में रत रह्यौ।

गृहस्थ धर्म के संघर्सन की कहानी बड़ी विचित्र अरु खट्टे–मीठे अनुभवन सौं भरी होवै है। इन संघर्सन में ही मैंनें अपनी साहित्य–साधना चलाई। गद्य–पद्य की सिगरी विधान में खड़ी बोली अरु ब्रजभाषा की सेवा करी। विश्वविद्यालय में पढ़ावत समय मैंने डी. लिट् के काजैं महाराणा के संग्रहालय में ब्रजभाषा की पुरानी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपीन कौ अवलोकन कर्यौ। फलतः मोहि रीतिकालीन कवि सूरति मित्र के ग्रंथनि की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ मिलीं। इन ग्रन्थन की खोज में मैं राजस्थान के अन्य संग्रहालयन में हू गयौ अरु कठिन परिश्रम के बाद में 17 ब्रजभाषा–ग्रन्थन कौ पाठ–सम्पादन अरु समालोचन करिवे में सफल भयौ। राजस्थान प्रकाशन, जयपुर नैं इन ग्रन्थनि में से मेरे द्वारा सम्पादित ''सूरति ग्रन्थावली'' के चार खण्डन कौ प्रकाशन हू कर्यौ। भक्ति विनोद कूँ मैं पैलैं ही छपाय चुकौ हतौ। ब्रजभाषा के एक अन्य महत्वपूर्ण कवि 'सोमनाथ' के 'शशिनाथ–विनोद' काव्य कौ हू मैंनें सम्पादन करिकैं प्रकाशन करायौ। पाठ–सम्पादन कितनौ कठिन काम है, जि बात वे ही विद्वान जानैं

हैं, जो जा काम में थोडे हू प्रवृत्त भये होय। मैनैं कुल 18 ब्रजभापा ग्रन्थन कौ पाठालोचन पूर्वक सम्पादन कीन्हों अरु उनकी भूमिका हू लिखी। आज मोहि संतोप है कै मैनैं ब्रजभापी हैकै अपनी माँ की भापा कौ ऋण अपनी शक्ति के अनुसार उतारन की पूरी कोशिश करी है। विश्वविद्यालय में अध्यापन के समय हू ब्रजभापा के काव्य कूँ भली भाँति समझन वारे छात्र तैयार करे है अरु उन्हें सदा जि दृस्टि दई है कै ब्रजभापा अरु राजस्थानी के अस्तित्व सौं ही हिन्दी कौ अस्तित्व है; जा दिन लोग इन दोनोंन कौ भूल जायँगे, ता दिन हिंदी हिंदी नाहिं रहैगी, कछू और ही है जाइगी। अत: अगर रास्ट्रभासा हिंदी की रक्षा औरु सम्मान करनौ है, तौ सबसें पैलैं ब्रजभापा अरु राजस्थानी की रक्षा करौ। इन दोनोंन की शब्दावली में ही हिन्दी की पूरी संस्कृति कौ स्रोत छिपौ है, जि संस्कृति ही हमारे जीवन कौ पाथेय है।

अपनी इन भावनान कौ मैने सात शोध–पत्रन में हू विचार–विस्तार दियौ अरु मॉरीशस, जर्मनी (बर्लिन), रूस (मास्को) उत्तरी कोरिया(प्योंग्यांग) चीन(बीजिंग) जापान (क्योटो) तथा थाईलैण्ड(बैंकाक) में अपने देश की भापा संस्कृति अरु दर्शन सम्वधी व्याख्यान हू दिये लेकिन मेरे जैसे साधन–हीन सेवक टिटहरी प्रयास सौ कछू नाहिं है सकै, जव तानूँ कि अन्य विद्वान जा काम में आगै न आवैं। ब्रजभापा के काजै तौ भौत कम काम है रह्यौ है। राजस्थान ब्रजभापा अकादमी के कंधनि पै जो भार है, वाहि हल्कौ करनौ अरु आज अनेक रचनाकार अरु विद्वान आगै आमैं तौ भारतीय संस्कृति अरु बाके माध्यम सौ भारतीय जीवन–पद्धति की रक्षा है सकति है। पर दुर्भाग्य जि है कै आजकल के कई कवि, लेखक,पश्चिम की विचार धारान में नहात भये सेठनि के लखटकिया इनामन की लालसा मे अपनी कलम कौ दुरुपयोग करन में लीन हैं। हिन्दी सेवा के नाम सौ मोहि तीनि वेर काव्य पै अरु एक बेर गद्य के काजैं राजस्थान साहित्य अकादमी नैं पुरस्कार दिए। उत्तर प्रदेश सरकार नै हू 'हिन्दी शिव काव्य का उद्‌भव और विकास'' ग्रन्थ पै विशेप तुलसी पुरस्कार दियौ तथा महाराणा मेवाड़ ट्रस्ट नै साहित्य और सस्कृति की सेवा के काजैं। महाराणा कुंभा पुरस्कार सौं सम्मानित कियौ। ये सेठन के पुरस्कार नाहिं जो आय कर बचावन कूँ बाँटे जात है। विभिन्न संस्थान सौं राष्ट्रकवि, साहित्य शिरोमणि, साहित्य–महोपाध्याय, साहित्य–श्रीनिधि आदि जन सम्मान हू मिले औरु राजस्थान साहित्य अकादमी अरु राजस्थान ब्रजभापा अकादमी नै विशिष्ट साहित्यकार हू मान्यौ ,परन्तु इन सवनि सौं ज्यादा मेरौ सम्मान वा दिन होयगौ, जा दिन भारत के विश्वविद्यालयन मे ब्रजभापा के साहित्य की प्रतिष्ठा फिरि लौटि आवैगी। आज तौ ऐसी हालत है गई

है कै सूर अरु मीराँ कूँ समझन समुझावन वारे विद्वाननि कौ अभाव है गयौ है अरु नए प्राध्यापक नई कविता, कहानी अरु उपन्यास के अलावा औरु कछु पढ़ावन की इच्छा नाँय करैं।

उदयपुर में मैंनैं "राजस्थान भाषिकी·अनुसंधान अकादमी" की स्थापना करी हती । मैं चाहत रह्यौ कै जि संस्था राजस्थान की उन सब बोलिन की शब्द–सम्पदा तथा व्याकरण आदि कौ काम करै, जिनसौं हिन्दी कौ हू अंगरेजी–निरपेक्ष विकास है सकै। मैंनैं भीली भाषा के व्यावहारिक रूप कौ तीन साल अध्ययन हू कियौ अरु एक शब्दकोष बनायौ है जो शीघ्र छपैगौ जि सब्दकोष जा बात कौ प्रमान है कै भीली भाषा कौ ब्रजभाषा अरु राजस्थानी सौं बहुत गहरौ सम्वन्ध है। अँगरेज विद्वान अरु उनके अनुकरणकर्ता भारतीय विद्वानन नैं जो भ्रम राजस्थानी अरु ब्रजभाषा के संग–संग हिन्दी के काजैं हू फैलाए हैं, उन्हें दूरि करिबे की आज भौत बड़ी जरूरत है। लेकिन जि ऐसौ काम है, जाहि केवल वे विद्वान अरु लेखक ही करि सकत हैं, जिन्हें अपनी माँ, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति अरु अपने राष्ट्र पै अभिमान होय। जो लोग भारत कौ भूगोल अरु इतिहास तानूँ नाहिं समुझत, उनसौं ऐसी आसा करनौ व्यर्थ है। उनके लिये तौ केवल भगवान् सौं जि प्रार्थना करी जाइ सकति है–

हे प्रभु! जो सपननि रमत
देखि न सकल प्रभात।
खोलो बिनके उर–नयन
कटै भ्रमनि की रात॥

❑

ब्रजमाधुरी

कामना

प्रभु–गुन बानी मधुर करौ।
जा ब्रज जीव स्याम–रस भींजे
ता ब्रज हौं विचरौं।
प्रभु–गुन बानी मधुर करौं॥

जमुना–तीर करीलन–कुँजनि
गोपिन के सँग राधा।
नाचति–गावति रही चरावति
गाएँ, सही न बाधा।
जहाँ बजी बंसी कान्हा की
पथ–रज सीस धरौ।
प्रभु–गुन बानी मधुर करौ॥

गोपिन के घर करत कन्हैया
दधि–माखन की चोरी।
ग्वाल–बाल कौ बाँटि खवाबत
फिरि खेलें मिलि होरी।
मैं बरनौं वा रस–लीला कौं
मन कौ ताप हरौ।
प्रभु–गुन बानी मधुर करौ।

कलिजुग कंस अनेक भए

द्वापर कंस हतौ इक कान्हा!
कलिजुग कंस अनेक भए।

कुल–मर्जादा लाँघि रहे सब
बहिन–भानजी को समझै अब
कुर्सी के मद में मतवारे
सब नैतिकता भूलि गए।
कलिजुग कंस अनेक भए!
भेस धरैं साधुन कौ डोलें
ऊपर–ऊपर मीठौ बोलें
भीतर साँप बसैं द्रोहनि के
घर–घर विष के बीज बए!
कलिजुग कंस अनेक भए!
भूख रोग बेकारी छाई
घोर गरीबी घिरि गहराई
राजा मौज करैं महलनि में
अधिकारिन नैं ताप बए।
कलिजुग कंस अनेक भए!

एक बार लै चलौ
दम घोंटि रहीं गैस
धुआँ
काननि कौं फोरती
करकस धुनि
हत्यान सौं भरे अखबार
बलात्कार
हाँसिए पै इंसान!
कान्हा!

शहर एकु जंगल है
लै चलौ
मोहि लै चलौ वृन्दावन।
करील की कुंजनि में
सुननी है फेरि
तुम्हारी बाँसुरी
सीतल सुगन्धित हवा सौं
भरनी हैं हर साँस।
राधा के नीम तरे
झूलनि के रागनि मे
झुमनौ है
कान्हा! मोहि
लै चलौ बृन्दावन।

जा शहर रोज-रोज
रोग है
विहाग हैं
दौड-धूप
लूटमार। हाय-हाय!
बृन्दावन ऐसौ जहाँ
छप्पर के छेदनि सौ
राति-दिन छनत कान्हा!
जीवन रस-धार है।
लै चलौ
मोहि बेगि लै चलौ
जमुना के तीर
गाँव। वही
मेरौ रस-धाम है।

सूरज नैं देखी है

तुमनें देखी है माँ ?
सूरज नैं सबसौं पैलैं
देखौ है बाकौं
गायनि की सेवा में
चकिया पै
चौका में
घर–आँगन बुहारति
नहाइ–धोइ
तुलसी के घरुआ पै
रामायन कौ पाठ करि
ढारति है जल–कलस
सूरज नैं देखी है माँ!

फटे–खुले
कपड़नि कौं
तार–तार जोड़ति है
चेहरे की झुर्रिन पै
टूटे चस्मे के नीचे
सिमटे भए सीकरनि
बार–बार पोंछति है
दूरि दूरि देखति है
बीते दिन–राम माँ!
तुमने देखी है माँ ?

खेतनि में साँझ तानूं
झुकी–झुकी
चुनति धान
साँझ की गोधूली में
सिर पर लादे बोझ
सूरज नै देखी हैं माँ !

अवतरहु कन्हैया

कान्हा! भारत तुमहिं बुलावत।
शाम भई पै काहू पंथ पै, ग्वाल नजरि नहिं आवत।
गाएँ कचरा चरैं गलिन में, भूखे वत्स रँभावत।
कट्टीघर खुलि रहे शहर में ,अधरम करम बढ़ावत।
तन–मन–रंजन में जन भूले, दुर्लभ जनम गँवावत।
कवि 'दिनेश' अवतरहु कन्हैया,काहे देर लगावत।

मदिराए कूप

सहमी सी आवति है
आँगन में धूप।
छतनि के मुँडेरन सौं
छप्पर के छेदन तानूँ
अलसाई लेटी है
जमुहाती शीत।
बिगरौ है कुहरे में
गोरौ–सौ रूप।
आँगन में धूप।
गलिहारन में घूमति
पनिहारिन–पग चूमति
पनघट–घट गूँजति है
पायल की प्रीति!
आँचल लहरात देखि
मदिराए कूप।
आँगन में धूप।

गीत समझियों

मेरे भाव तिहारे आँसू
धो पावें तौ गीत समझियो।
यों तौ हर डाली फूलति है
हर उपवन में मधुऋतु आवति।
हर कोकिल कौ कण्ठ कुहकतौ

सूरज नैं देखी है

तुमनें देखी है माँ ?
सूरज नैं सबसौं पैलैं
देखौ है बाकौं
गायनि की सेवा में
चकिया पै
चौका में
घर–आँगन बुहारति
नहाइ–धोइ
तुलसी के घरुआ पै
रामायन कौ पाठ करि
ढारति है जल–कलस
सूरज नैं देखी है माँ!

फटे–खुले
कपड़नि कौं
तार–तार जोड़ति है
चेहरे की झुर्रिन पै
टूटे चस्मे के नीचे
सिमटे भए सीकरनि
बार–बार पोंछति है
दूरि दूरि देखति है
बीते दिन–राम माँ!
तुमने देखी है माँ ?

खेतनि में साँझ तानूं
झुकी–झुकी
चुनति धान
साँझ की गोधूली में
सिर पर लादे बोझ
सूरज नै देखी हैं माँ !

अवतरहु कन्हैया

कान्हा! भारत तुमहिं बुलावत।
शाम भई पै काहू पंथ पै, ग्वाल नजरि नहिं आवत।
गाएँ कचरा चरै गलिन में, भूखे वत्स रँभावत।
कट्टीघर खुलि रहे शहर में ,अधरम करम बढ़ावत।
तन–मन–रंजन में जन भूले, दुर्लभ जनम गँवावत।
कवि 'दिनेश' अवतरहु कन्हैया,काहे देर लगावत।

मदिराए कूप

सहमी सी आवति है
आँगन में धूप।
छतनि के मुँडेरन सौं
छप्पर के छेदन तानूँ
अलसाई लेटी है
जमुहाती शीत।
बिगरौ है कुहरे मे
गोरौ–सौ रूप।
आँगन में धूप।
गलिहारन में घूमति
पनिहारिन–पग चूमति
पनघट–घट गूँजति है
पायल की प्रीति!
आँचल लहरात देखि
मदिराए कूप।
आँगन में धूप।

गीत समझियों

मेरे भाव तिहारे आँसू
धो पावें तौ गीत समझियो।
यों तौ हर डाली फूलति है
हर उपवन में मधुऋतु आवति।
हर कोकिल कौ कण्ठ कुहकतौ

मधुपनि पै मादकता छावति।
किन्तु तिमिर सौं बंधे कण्ठ की

सिसकै जब आवाज न कोई
तब तुम जीवन के मौसम में
परिवर्तन की जीत समझियों।
मेरे भाव तिहारे आँसू
धो पावें तौ गीत समझियों।

स्रोत खुलत सरगम के लेकिन
पवन नहीं झंकार उठावत।
हिमगिरि गलत निरंतर तौ का
अगर नहीं मरुथल रस पावत।
जा दिन मौन खुलै माटी कौ
मेघनि की गर्जन कों पीकें
ता दिन तुम पतझर में आवत
जीवन कौ संगीत समझियों।
मेरे भाव तिहारे आँसू
धो पावें तौ गीत समझियों।

दिनेश–दोहावली

स्तवन

शिव–दुर्गा–गणपति सहित,
रमैं हृदय श्रीराम।
सीस जानकी–चरन–रज,
मन में राधा–स्याम॥ 1॥

पवनपूत कौ वरद कर,
करै दुखनि कौ नास।
बीना बादिनि देहिं नित,
सास्वत ग्यान–प्रकास॥ 2॥

मेरे मन-मंदिर बसैं,
राधा-नंदकिसोर।
आँखिन में उनसौं जगैं,
अमर जोति चहुँओर॥3॥

दसभुज माँ दुर्गा करैं,
रच्छा भू आकास।
साप-ताप सब मेटिकै,
चरननि देहिं निवास॥ 4॥

अनुभूति

कविता जीवन-सगिनी,
कहै हृदय की बात।
भरि भीतर के घाव सब,
सांत करै संघात॥ 5॥

माला मन में साँच की
जीभ जपै हरि नाम।
लैनौ का या जगत सौं,
करहु करम निस्काम॥ 6॥

सृष्टि रची जानै अमित,
फूँकी तन में साँस।
भूलि वाहि कौं चौं करौ,
मैं जग कौ विस्वास॥ 7॥

पूजा अर्चा ठीक है,
पर काकी मन बोल।
धन-धरती-जस-काम की,
या प्रभु की, मुँह खोल॥ 8॥

धरम नाहिं झंडा-बहस,
नाहिं जुलूस-प्रचार।
करनौं है कछु धरम तौ
करि दुखियन सौं प्यार॥ 9॥

भेजौ जानैं जगत में,
बाहि गयौ तू भूलि।
बहतौ पापाचार-नद,
डारि रह्यौ सिर धूलि॥ 10॥
दो रोटी औ दारि सौं,
भरौ न तेरौ पेट।
जग की सारी सम्पदा,
घर में धरी समेट॥ 11॥

ऊपर तू जितनौं चढ्यौ,
उतनौ गिर्‌यौ धड़ाम।
साँस गई, पावक जर्‌यौ,
गरौ कबरि में चाम॥ 12॥

कल तक जो जयकार हौ,
बनौ घृणा कौ गान।
वे ही गाली देत अब,
हौ जिनपै अभिमान॥ 13॥

भेजौ जानैं जगत में,
बाके नाम अनेक।
काहु एक पै च्यौं अड्यौ,
खोयौ बुद्धि-विवेक॥ 14॥

बीज-बीज में विरछ है,
पात-पात में सृष्टि।
फल रस-मय, छाया सुखद
हर क्षण जीवन-वृस्टि॥ 15॥

तू काहू का देतु है,
अपनौ घट तौ देख।
सागर के तट पै खडौ,
खीचैं सिकता रेख॥ 16॥

फूलनि कौं चुनतौ फिरौ,
तू काँटिन कौं भूलि।
माला अपने ही गरे,
पहरि मिलि गयौ धूलि॥ 17॥

छाया छीनी दीन की,
खड़ौ करि दियौ धूप।
अपनौ आसन ऊँच रखि,
फेंकौ वाकूँ कूप॥ 18॥

जल में वह जीवित रह्यौ,
तोहि खा गयौ काल।
जनम दियौ जानैं जगत,
वाकौं देखि कमाल॥ 19॥

चाहे जितनौ चतुर बनि,
बिछा दंभ कौ जाल।
दया-दृष्टि बिन ईस की,
होवै नहीं निहाल॥ 20॥

चढ्यौ यंत्र-बल तू गगन,
पहुँचौ रवि के पास।
मलन भयौ उलटौ उड्यौ,
भयौ दंभ कौ ग्रास॥ 21॥

जिनहिं घृणा सौं देखतौ,
कहतौ "दूरि अछूत।"
वे प्रभु की संतान हैं,
सुखद सरग के दूत॥ 22॥

तू जाकौं सुख मानतौ,
वह आकासी-फूल।
निसि-वासर हुइ पाप-रत,
काटि रह्यौ निज मूल॥ 23॥

मेरौ-तेरौ रटि मर्यौ,
मिलौ अंत में धूल।
अपने ही पथ बो गयौ,
काँटनि-भरे बबूल॥ 24॥

सेवा करबे कौं चल्यौ,
भरतौ घर में वित्त।
जौन परिग्रह-मंत्र-रत,
तिन कौं सान्त न चित्त॥ 25॥

तप-व्रत तेरे बिरथ हैं,
जौलौं मन में ताप।
प्रेम-अहिंसा-खेल में,
बनौ विदूषक आप॥ 26॥

भौतिक साधन खोजतौ
रचतौ दुख-जंजाल।
अपने हाथनि काटतौ,
अपनी जीवन-डाल॥ 27॥

माली बगिया सींचतौ,
तोड़ै तू फल-फूल।
डूबैगौ वा भँवर में
जहाँ न कोई कूल॥ 28॥

धरती पै आकैं कियौ,
भलौ कौन-सौ काम।
पाथर-पाथर लिखि रह्यौ,
जो तू अपनौ नाम॥ 29॥

जस की इतनी लालसा,
खोटे करतौ कर्म।
दया-धरम कौ छोड़ि कै,
करै कौन सौ धर्म॥ 30॥

काटे लाखों पेट तब,
महल बनायौ एक।
कियौ गरब सौ पूत कौ,
फिरि वामें अभिसेक॥ 31॥

तोहि बुढ़ापै में वही,
मारि रह्यौ है लात।
अब रोवै क्यों पकरि सिर,
सहि अगनित आघात॥ 32॥

चौं असुंवन की धार चह,
चौं यह व्यर्थ प्रलाप?
भोगि रहे हैं सब यहाँ,
जितने जाके पाप॥ 33॥

ममता उतनी ठीक है,
जासौं मिलै न त्रास।
फैलै लता-प्रसून-सी
गंधित होइ अकास॥ 34॥

सत्ता के मद में भयौ,
तू घमंड में चूर।
लूटे उपवन गंध के,
रह्यौ दान सौं दूर॥ 35॥

देनौ हौ सो दै चुकौ,
सेस रह्यौ संताप।
लगी यहाँ हर करम पै,
तव पापनि की छाप॥ 36॥

अब तेरे आगे कहाँ,
बची धरम की राह।
घाटी-तम मद-मत्त नद,
मिलै न जाकी थाह॥ 37॥

आँखिन सौं आँसू नहीं
झरन लगै अंगार।
तेरे रोदन सौं नहीं,
पिघलैगौ संसार॥ 38॥

रखौ गरभ में मास नौ
सहिकैं कष्ट अपार।
जन्म दियौ, ढाली मधुर
मुख दूधनि की धार॥ 39॥

करी रात-दिन प्रार्थना-
"दुखै न सुत कौ रोम।"
वाहि जननि कौं दै रह्यौ,
तू दुख कौ तम-तोम॥ 40॥

तिरिया तेरी नासमझ
कालि बनैगी सास।
जोबन कितने दिन रहै,
सभी काल के ग्रास॥ 41॥

जननी कौ अपमान करि,
पूजै तू पापान।
कोई देव न करि सकैं,
यौं तेरौ कल्यान॥ 42॥

अपनौ दामन देखि तू
मत गिनि पर के दाग।
तेरे उर में लगि रही,
जग-निन्दा की आग॥ 43॥

तू जग के भ्रम-जाल में
भूलि गयौ निज पंथ।
मन चिन्ता के चक्र में,
व्यर्थ पढ़ि रह्यौ ग्रन्थ॥ 44॥

सूरज तपै अकास में,
चलै भूमि कौ चक्र।
पिघलै ससि नवनीत जिमि,
तू ही पीतौ तक्र॥ 45॥

पानी पड़तौ धूलि में
निकसत अंकुर लाल।
काकी रचना? कौन तू?
बिरथ बजावै गाल॥ 46॥

जीबौ मरबे सौं कठिन
तू जी कै तौ देख।
जल में तेरे भाग्य कौ,
मीन लिखै नित लेख॥ 47॥

साँस-साँस में बजि रह्यौ
जाकौ अनहद नाद।
बाहि समझबे कौ करै,
तू चौं बिरथ बिबाद॥ 48॥

कियौ बिबिध अपकरम करि,
संचित वित्त अपार।
चल्यौ जबहिं भोगन तबहिं,
डूबि गयौ मँझधार॥ 49॥

हथकड़ियन की झनक में,
अब गूँजैं वे पाप।
धन-मद में करतौ रह्यौ,
जो तू अपने आप॥ 50॥

सतखंडे जा भौन कौ,
कियौ भव्य निरमान।
ता में भटकैगौ सदा,
तेरौ पागल प्रान॥ 51॥

जीवन घोर तनाव में,
काटि रह्यौ दिन-रात।
यौं न घटैगी दुख-निसा,
नाहिंन होय प्रभात॥ 52॥

गुरु के असन वैठि कैं,
करतौ मदिरा-पान।
अन्धौ औरनि बाँटतौ,
नैन-जोति कौ ग्यान॥ 53॥

जोबन के मद में फिरौ
तू फूलनि के पास।
मंगल कुंकुम कौं दियौ
तूनैं भीषण त्रास॥ 54॥

नदी किनारे तू खडौ,
देखि रह्यौ है बाट।
कब आवैगी वह लहरि
जो पहुँचावै घाट॥ 55॥

इतनौ चौं रोवै खडौ,
रख निज नीर सम्हाल।
कल बरसिंगे कुफल सब,
बन बादल विकराल॥ 56॥

सीस पाप की पोटली,
पैर बँधे तूफान।
जीनौ है तौ करम करि,
दै दुखियन मुस्कान॥ 57॥

गाँव नहीं देखौ क्यौं
देखौ जगत अनंत।
खोयौ तूनैं सून्य में,
अपनौ दीठि-दिगन्त॥ 58॥

सैयद की पूजा यहाँ,
झुकै सीस हर थान।
संग रमैं निसि-दिन यहाँ,
गीता औरु कुरान॥ 59॥

मंजरियन सौं महकते,
बागनि रसिक रसाल।
कोयल बाँटति सबनि कौं,
गीतनि के सुर-ताल॥ 60॥

फूल-फूल पै घूम कैं,
लावत पवन सुगंध।
सुद्ध साँस कौ है रह्यौ,
जीवन सौं अनुबंध॥ 61॥

नाव माँगती राधिका,
हँसती खड़ी कछार।
स्याम बजावैं बाँसुरी
जमुना के बा पार॥ 62॥

दुर्जोधन तत्पर भयौ,
चौं करने कौं जुद्ध।
बात-बात में चौं भयौ,
पांडव जन पै क्रुद्ध॥ 63॥

गान्धारी-धृतराष्ट्र नैं,
बिरथ सह्यौ संत्रास।
दुर्जोधन कौ जनम दै,
भये पाप के दास॥ 64॥

सबकी जननी बसुमती,
जो पांचाली रूप।
बसनहीन तिहि करि रह्यौ
दुस्सासन खनि कूप॥ 65॥

न्याय-तुला कौ तोड़ि जो
फैंकि रहे आकास।
जनम-जनम तक वे करै,
घोर नरक में बास॥ 66॥

राम न जाते अगर बन
करते भवन निवास।
कैसैं अत्याचार कौ,
होतौ जग सौं नास॥ 67॥

उठ तू हू सुभ करम कौं,
दै सरीर कौं ताप।
हुंगे तेरे हाथ सौं,
नस्ट जगत के पाप॥ 68॥

जो गीता पढ़तौ रह्यौ,
करौ नाहिं सुभ कर्म।
समझि, न पायौ धरम कौ,
तौ तू कोई मर्म॥ 69॥

तीरथ-तीरथ घूम कैं,
खोजि फिरौ भगवान।
जो कन-कन में रमि रह्यौ,
धरौ न वाकौ ध्यान॥ 70॥

जिनके माया-मोह में,
उरझि रह्यौ दिन रात।
जब तक स्वारथ, संग हैं,
फिर न करिंगे बात॥ 71॥

साथ रहिंगे तब तलक,
भरै न जब तक पेट।
दूरि जाइँगे फेरि सब,
करिकैं मटियामेट॥ 72॥

चौं तू उनकी याद करि,
रोवत है दिन-रात।
प्रेम नाहिं, जो मोह है,
झरैं पेड़ सौं पात॥ 73॥

जनक-जननि कौं देखि तू
रचहिं सकल संसार।
जो इनकौं दुख देत हैं,
डूबत हैं मँझधार॥ 74॥

तू परदेसी होत जब,
जननि रहित बेचैन।
सपने हू आवत नहीं,
खुले रहत हैं नैन॥ 75॥

बाप सोचतौ डाकिया
लावै तेरौ पत्र।
बाट देखतौ द्वार जब,
हँसी उड़ावत मित्र॥ 76॥

हाथ-पैर उठते नहीं,
बुढ़िया भई निढाल।
पूत रमौ परदेस में,
बेटी है ससुराल॥ 77॥

एक-एक करि सब मिटे,
जीवन के आधार।
जरा-ग्रसित माँ-बाप कौ,
नर्क भयौ संसार॥ 78॥

बेटा हू का करि सकै,
बिकौ सहर में गाँव।
सन्नाटे सोए जहाँ,
बोझिल करिकै पाँव॥ 79॥

धुआँ धूलि पीकर जिएँ
कब लौं नीम रसाल।
रोगन कौ घर बनि गए,
कल जो थे चौपाल॥ 80॥

मखमल पै सोवैं सहर,
धूपनि गलैं किसान।
भूख-प्यास की मार सौं
तड़पैं पागल प्रान॥ 81॥

सुनहु टेर श्रीकृष्ण जू,
है भगतिन पै भीर।
छिन-छिन दुख-वदरा घिरैं
जन-जन होत अधीर॥ 82॥

अखवारनि में नित छपैं,
अगनित नर-संहार।
हाड़-माँस के तननि में,
जन कौ रह्यौ न प्यार॥ 83॥

जिनके हिरदय मरि गए,
नित्य करत हैं पाप।
तिनहिं न व्यापत नैंक हू,
पर-जन कौ संताप॥ 84॥

हे प्रभु! ऐसे जननि कौं,
देहु ग्यान-परकास।
अधरम छोड़ैं अरु वनैं,
तव चरननि के दास॥ 85॥

भूख रोग वाधा अमित,
सव मिलि करत प्रहार।
दीन जननि के सोक कौ,
नाहिंन पारावार॥ 86॥

जाति–पाँति कौ भेद नहिं,
करैं गरीबी–वाढ़।
सब ही करत पयान नित,
प्रविसत जम की दाढ़॥ 87॥

गोली, कब पूछति धरमु,
समुझति कब को जाति।
छिन में चीरति वक्ष कूँ
देह पड़ी रहि जाति॥ 88॥

बरसा में बाढ़ति नदी,
वहत सबनि के धाम।
नहिं देखत जल की झड़ी,
कालौ–गोरौ चाम॥ 89॥

तौऊ नर नहिं जगत है,
करत अनेकन भेद।
धरती फोड़ि पताल घुसि,
करत प्रकासनि छेद॥ 90॥

हे प्रभु! जीवन वन भयौ,
हिरदय–हिरदय मैल।
स्वारथ में अन्धे जननि,
देहु ग्यान की गैल॥ 91॥

अंग्रेजी–अच्छर बिकै,
यहाँ स्वर्ण के भाव।
घर–आँगन डूबन लगी,
अपनी भाषा, नाव॥ 92॥

लुटै अंक, भाषा लुटी,
भई नागरी भूत।
धरम-सास्त्र अब को पढ़ै,
अच्छर भये अछूत॥ 93॥

कोलाहल में राति-दिन,
डूबि रहे घर-द्वार।
निर्वसना नारी बनी,
मन-रंजन-आधार॥ 94॥

कवि 'दिनेश' या देस में,
घुसे बाहरी चोर।
धरम-करम सब भ्रष्ट करि
करैं व्यर्थ कौ सोर॥ 95॥

अपने अपने नाम कौं,
करैं झूठ-व्यापार।
छलैं परस्पर, नित करैं,
अगनित भ्रष्टाचार॥ 96॥

जो लिखनौ सो लिखि चुकौ,
आगे लिखनौ व्यर्थ।
अब तक जो मैंने लिखौ,
समुझि बाहिकौ अर्थ॥ 97॥

जो तू ही समुझौ नहीं,
काहि सुनावौं गीत।
सब्दनि की बरसात में,
सम्वेदन भयभीत॥ 98॥

सब भाषनि में मधुरतम,
ब्रजभाषा सिरमौर।
बंसी के सुर में सनी,
रंग राधिका गौर॥ 99॥

या ब्रजभाषा भूलि जो,
करै ज्ञान कौ गर्व।
कवि 'दिनेश' ता जाति कौ,
शेष न रहै अथर्व॥ 100॥

हे जगदम्बे! देस कौं,
देउ अस्मिता–ग्यान।
अपनी संस्कृति पै रहै,
हरजन कौ अभिमान॥ 101॥

चैन मिलै रूप देखें

भीजि गई राधारानी बाँसुरी की सुर–धार
काननि में गूँजि रह्यौ एक नाम प्यारे कौ।
मोर लागे नाँचन, गगन नाँचे बदरा हू
झूमि उठे लता–द्रुम, जादू बंसीवारे कौ।
फूलनि पराग झर्‌यौ, पातन सौं ओस गिरी
दूब हू नें गान गायौ पीतपट धारे कौ।
गाएँ छोड़ि बछरानि भागीं फिरैं बन माहिं
चैन मिलै रूप देखें नद के दुलारे कौ।

ऐसे तुम नेता भए

भीड़ देखि भेड़िन–सी भाषण बड़ौ सौ देत
एकता–अखंडता कौ नारौ हू लगात हौ।
कुर्सी देखि कागन–सी काँव–काँव करि–करि

रात–दिन चीखि–चीखि झूठ में समात हौ।
भूख–प्यास–मारैं लोग फिरैं बिललात, तुम
सामाजिक न्याय की दुहाई दै अघात हौ।
सीत–बँगलान माहिं बैठि रजधानी बीच
जनता में भेद–भाव अगिनि लगात हौ।

न्यारे–न्यारे पंथ औरु मंजिलें हू न्यारी–न्यारी
साधु औ असाधु कौन भेद कछु जानौ है।
कालि सत्रु आज मित्र खेल खेलि बचपन
राजनीति क्षेत्र सब गंदगी सौं सानौ है।
देस पर छाइ रहे मेघ विपदा के तौऊ
स्वारथ कौ गीत रोज तुमकौं तौ गानौ है।
न्याय–धर्म बेचि–बेचि कैसे तुम नेता भये
झोंक भाड़ दया–नीति कौन स्वर्ग पानौ है?

माँगत हैं 'मत' एक

जोड़ैं कर दोनों लएँ, लोकतंत्र कौ पात्र।
पेट घड़ा–सौ बढ़ि रहौ, लगै भीम–सौ गात्र।
लगै भीम–सौ गात्र, पीठ पै कुर्सी बाँधे।
रगड़त नीची नाक, दुपट्टा डारैं काँधे।
माँगत है 'मत' एक, शर्म की रस्सी तोड़ैं।
कवि 'दिनेश' हर द्वार खड़े दोनों कर जोड़ैं॥

मिली है कुर्सी

धंधा इनकौ चलि रह्यौ, आमदनी है खूब।
अनचाहे ही उगि रही, इनके सिर पै दूब।
इनके सिर पै दूब, मिली है कुर्सी जब सौं।
खावत हैं खर खड़े, खुली है रस्सी कब सों।
लोकतंत्र कौ बोझ, झुकि रहौ इनकौ कंधा।
चलतौ कहै 'दिनेश' रात–दिन इनकौ धंधा॥

कहौ कान्ह

अर्जुन पूछत रथ में,
कैसें लड़ें महाभारत में
मारें का कौं रन में?
सब तौ भाई-बन्धु सामनें
भेद करें अब किन में?
सबनै पाप करे, सब कौरव
जात नरक के पथ में।
अर्जुन पूछत रथ में॥
कहौ कान्ह गीता की बातें
कौन करम है नीकौ?
पाप-पुन्य की कौन तराजू
कहाँ धरम कौ टीकौ?
सबके हाथ सने लोहू में
कौन अनय के पथ में?
अर्जुन पूछत रथ में॥

को मंजिल तक जावैगौ

चारों ओर आँधियाँ, घन तम
मरुथल में पथ खोयौ है।
कौन मशाले लै जन-हित कौ
को मंजिल तक जावैगौ?

जाकौ उदर भर्यौ [illegible]
सोनो-चाँदी खावत है।
मदिरा के [illegible] कौ पीकें
जो प्यासौ चिल्लावत है।
चलि न सकै दो पग धरती पै
वह का मग दिखावैगौ!

कौन मशालें लै जन–हित की
को मंजिल तक जावैगौ॥

थके सप्त–रिसियन के कंधा,
नहुष–पालकी पापनि की।
जनता–सभी दुखी–आतंकित,
घिरीं घटाएँ तापनि की।
साप लगौ है इन्द्रासन कौं
पतन पताल पठावैगौ।
कौन मशालें लै जन–हित की
को मंजिल तक जावैगौ॥
सूरज कैसै आवैगौ

दीप नहीं अँधियारौ घिरतौ
सूरज कैसै आवैगौ ?
कौन आँधियाँ चीर रोशनी
मंजिल तक लै जावैगौ ?

पात झरे कलिका सब सूखीं
काँटिन कौ विस्तार भयौ।
पहरे वैठि गए मरघट पै,
जीनौ विष की धार भयौ।
दिसाखोर गिद्धनि सौं बचिकैं
कौन यहाँ जी पावैगौ ?
कौन आँधियाँ चीर रोशनी
मंजिल तक लै जावैगौ॥

घर के सूने से कोने में
चिड़िया नीड़ बनावति है।
जानैं का की कोप–नजरिया

तिनकनि तक कौं खावति है।
बूँद-बूँद संवेदन सूखौ
कण्ठ काहि दुहरावैगौ?
कौन आँधियाँ चीर रोशनी
मंजिल तक लै जावैगौ॥

माखनचोर कन्हैया

दूध-दही बिकि गयौ शहर में,
माखन कौन खवावैगौ?
माखनचोर कन्हैया अब तू
कैसैं ब्रज में आवैगौ?
दूरि गईं गोपियाँ विदेसनि
संस्कृति-नाच दिखावन कौं।
कुंज गलिन में तू नाचैगौ
किनकौं रास सिखावन कौ?
गोकुल नंद-जसोदा दोनों
रोबत विलखत पावैगौ।
माखनचोर कन्हैया अब तू
कैसैं ब्रज में आवैगौ॥

वृन्दावन सन्नाटौ छायौ
ग्वाल न गाय चरावत है।
साँझ नहीं गोधूली दीखै
बछड़हु नाहिं रंभावत हैं।
सूखे बाँस, बदर नहिं बरसै
वंसी कौन बजावैगौ
माखनचोर कन्हैया अब तू
कैसैं ब्रज में आवैगौ॥

पाती

आई बाकी पाती।
दरबाजे पै दस्तक दैकैं
अपनी झोली खाली लैकैं
पेट दबाएँ लौटि गयी जो
बनिकैं बुझती बाती।
आई बाकी पाती॥
माटी नैं बाकौं अपनायौ।
तुमनैं गीत गगन कौ गायौ।
दरसन झूठे भए, भूख सौं
बनौ आतमघाती।
आई बाकी पाती॥
बानैं लिखौ हवा पै इतनौ:-
हौं तौ आयौ पार, काल की
सौंपी तुमकौं थाती।
आई बाकी पाती॥
आँसू दुख सौं भरे नैन कौ।
का कौ है अधिकार चैन कौ?
का की मूक बिथा अम्बर सौं
नाहिं यहाँ टकराती?
आई बाकी पाती॥

होली

आओ खेलौ संग कन्हैया
रंगबिरंगी होली।
ग्वाल-बाल सब खेलन लागे
लै गोपिन की टोली।

पीले पात झरे पेड़न सौं
सरसौं भरी जवानी।
गेहूँ औरु चना के खेतनि
ओढ़ी चादरि धानी।
नई फसल नैं गानौ गायौ

कोयल बगियन बोली।
आऔ खेलौ संग कन्हैया
रंग बिरंगी होली॥
राधा जमना-तीर निहारै
तुमकूँ बंसीवारे!
चलौ संग खेलिंगे हम हूँ
होली साँझ सकारे।
अपने रंग रंगैगी तुमकों
आजु राधिका भोली।
आऔ खेलौ संग कन्हैया
रंग बिरंगी होली॥
एटम की धमकी मति दीजौ

सागर गावत साथ हमारे
साथ हमारे लहरावत है।
चट्टानन सौ टकरावन कौ
इन चरननि मे ज्वार भरे हैं।
फौलादिन के कंकालनि में
तूफानन के सार भरे हैं।

उठति जबहिं आवाज हमारी
ऊँचौ नभ हू झुकि जावत है।
सागर गावत साथ हमारे
साथ हमारे लहरावत है॥

अंगारन सौं राह सजावत
गति में गावति मौत बिचारी।
एटम की धमकी मति दीजौ
करियो मत इनकी तैयारी।

कंकालन की अस्थि अस्थि सौ
बज्र यहाँ पर बनि जावत है।
सागर गावत साथ हमारे
साथ हमारे लहरावत है॥

श्री रत्नगर्भ तैलंग

सी-8 मंजु निकुंज, पृथ्वीराज रोड
सी-स्कीम, जयपुर
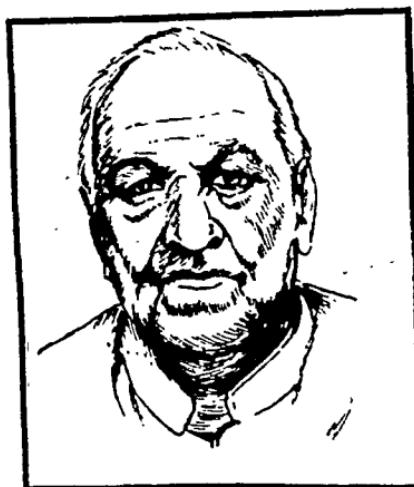
कविता कौ मनभायौ, बोध मिल्यौ बालपन,
सैसव सौं चौरासी लौं, एकसी उमंग हैं।
चलें सदा सद् पंथ, पढ़े बहु सद् ग्रन्थ,
वेदन पुरानन के, सरस प्रसंग हैं।
पिंगल के रंग रूढ़ और अंग-अंग गूढ़,
ज्ञात व्यजंना के नीके, तीखे-तीखे व्यंग हैं।
बिन कोऊ यत्न करैं, लेखनी सौं रत्न झरैं,
रत्न के सरिस रत्नगर्भ जू तैलंग हैं।

परिचै

नाम	:	श्री रत्नगर्भ तैलंग 'देर'
जन्म स्थान	:	जहानाबाद (उ.प्र.)
जन्म तिथि	:	13 नवम्बर, 1914
पिता कौ नाम	:	शास्त्री लक्ष्मीकिशोर तैलंग
माता कौ नाम	:	कालिन्द्री बाई
परिवार	:	द्वै पुत्री
व्यवसाय	:	अध्यापन
प्रकाशित ग्रंथ	:	कानपुर के प्रताप, दैनिक जागरण विभिन्न पत्र पत्रिकान में, जयपुर सौं संस्कृत की भारती पत्रिका में।
अप्रकासित ग्रंथ	:	चक्षु पुराण, प्रहेलिका परिचय, वंश पुराण
वर्तमान पतौ	:	सी-8 मंजु निकुंज, पृथ्वीराज रोड, सी-स्कीम जयपुर

स्मृति के झरोखन सौं

- श्रीमती माधुरी शास्त्री

मेरे परम आदरणीय पिताजी श्री रत्नगर्भ जी शास्त्री कौ जन्म उत्तर प्रदेश के एक महानगर कानपुर के समीप एक तहसील जहानाबाद में विक्रम संवत 1971 में भयौ। आप अपने घर की प्रथम संतान हैबें के काजें, बाबा, दादी बुआ के भौंतई लाड़ले हते। गौर वर्ण, कुशाग्र बुद्धि एवं बाल सुलभ चपलतान सौं सिगरे घर वारेन कूँ दिन भर आनंदित करते रहबे हे।

जैसो कै हर बालक के संग होवे है पांच वर्ष की अवस्था बीतते ही खेल-कूद आदि सौं मुक्त करा कैं विद्याध्ययन के लिए आपकौ पाटी पूजन संस्कार कर दियौ। वहाँ पै हू आपने अपनी कुशाग्र छबि सौं हर अध्यापक कौ मन मोह लीनौ। जो कछू मदरसे में पढ़ायौ या लिखायौ जातो वाकूं घर आयकें तत्काल अपने पिता श्री अरु माता जी कूँ ज्यौं को त्यौं सुना देते।

पैले के समै में अक्षर ज्ञान, आजकल की तरियौं कापी अरु पेन सौं नाँय होतौ हो अरु न तब तानू स्लेट ही चलीं ही। हर बालक के ढिंग लकड़ी की एक पाटी होती। एक 'बोरका' अरु कलम। पाटी कूँ प्रतिदिन कारी करनी परती कोयला सौं फिर वामें घोटा फेरकै चमकानौ पड़तौ याके बाद पानी में घुरी खड़िया सौं कलम(नेजा) के माध्यन सौं, लिखनौ पड़तौ। जे विधि अपनावे सौं तत्कालीन विद्यार्थीन कौ लेख सुलेख होवे हो। जो विद्यार्थी सुंदर-सुंदर अंक अरु अक्षर लिखतौ वाकू पांच नम्बर ज्यादा मिलौ करते।

वा समै की जे परम्परा अच्छी ही जाकौ आजकल भौंतई अभाव दीखे है। या तरियाँ सौं आप निरंतर विद्याध्ययन में रत रहे। आपके पिताश्री शास्त्री लक्ष्मी किशोर जी तैलंग व्याकरणाचार्य हे। कर्मकांड प्रवीण हते, पौरोहित्य एवं पुराणन के अच्छे वाचक हे। साथ ही काव्य कला में हू निपुण। वे अपनी समस्त रचना 'किशोर' उपनाम सौं करे हे। जे तो सभी जाने हैं कै पिता कौ संस्कार तो पुत्र कौं स्वत: ही मिल जाय है। जेई श्री रत्नगर्भ शास्त्री जी के संग भयौ।

अपने अन्य कामन में अति व्यस्त रहवे सौं वे अपने पुत्र पै अपनी कविता कूँ फेयर कागज में उतारवे के लिए कह जावे हे। या प्रक्रिया सौं गुजरवे सौं बालक श्री रत्नगर्भ जी कूँ लय ताल, यति, विराम आदि कौ स्वत: ही वोध है गयौ। धीरे धीरे वे ऊ कछू लिखवे लग गये अरु उठाय के रख देते।

एक बेर ऐसे ही इनके पिताजी की निगाह इनकी कछू कवितान पै गई। मन ही मन खुश तौ भये पै दर्शायो कछू नाँय। उल्टे थोरी सी डांट लगाई कै कविता लिखवौ हंसी खेल नाँय है। भावन की गम्भीरता वाकौ प्रमुख तत्व है, याय लाऔ। खूव सोचो बेर-बेर लिखौ अरु अपने ही लिखे भये कूँ जब तब उठाइके बेर-बेर पढ़ते रहो। सारी गलती स्वत: मालूम है जाएगी। जेई नाँय बिनने अपने पुत्र कूँ विधिवत काव्य कला कौ ज्ञान हू दियौ।

आपकी माता श्रीमती कालिन्द्री दतिया नरेश के राजगुरू श्री बालकृष्ण शास्त्री की एक मात्र कन्या हती। अत्यधिक लाड़िली अरु तेलगू भाषा में निष्णाता; कहे हैं कै मूल सौं ब्याज ज्यादा प्यारो होय। सो हू इनके साथ भयौ। श्री रत्नगर्भ शास्त्री अपने नाना के बहुत लाड़ले दोहिता हे। जद्‌पि इनके बड़े भ्राता श्री हिरण्यगर्भ कौ हू नाना कौ लाड़ प्यार मिल्यौ पै बिनकी बाल्यावस्था में ही मृत्यु है जावे के कारन नाना को समस्त दुलार श्री रत्नगर्भ जी कूँ ही मिल्यौ। नाना नैं ही अग्रिम अध्ययन हेतु इनकूं अपने पास बुला लियौ अरु वहीं सौं अपनो अध्ययन संपूरन करके वापस जे कानपुर आ गए। कछू वर्षन बाद नाना-नानी कौ देहावसान है गयौ।

श्री रत्नगर्भ शास्त्री कौ ब्याह विक्रम संवत् 1986 (सन 1930) में फागुन वदी सप्तमी कूँ भयौ। आपकी पत्नी कौ नाम सौ० शांता बाई तैलंग है। जो मध्यप्रदेश के सागर निवासी श्री यमुना प्रसाद की प्रथम पुत्री हैं। शादी के आठ बरस पाछे श्री रत्नगर्भ शास्त्री के घर पहली कन्या कौ जनम भयौ जाकौ नाम माधुरी रख्यौ गयौ। याके पश्चात् एक

मैं श्री मुद्गल साहब कौ हृदय सौं आभार व्यक्त करते भये गौरव कौ अनुभव कर रही हूं कै बिनकी सूझ बूझ सौं भूले बिसरे श्रेष्ठ कविगन प्रकाश में आ पा रहे हैं।

अछूते संदर्भ

श्री रत्नगर्भ जी नैं अपने पिता पं. लक्ष्मीकिशोर तैलंग सौं संस्कृत व्याकरण, काव्य और ब्रज साहित्य की शिक्षा तो प्राप्त करी हती, ता पाछैं वे राजस्थान में काँकरोली में अपने नाना पं. बाल शास्त्री अरु मामा पं. कंठमणि शास्त्री सौं संस्कृत साहित्य और ब्रजभाषा के काव्य कौ अध्ययन करबे काजैं काँकरोली आय गये। काँकरोली के पुष्टिमार्गीय वल्लभसंप्रदाय के तृतीय पीठ के गोस्वामी अरु श्रीद्वारकाधीश मन्दिर के प्रबंध मँडल की देखरेख में वहाँ कौ विद्याविभाग बिन दिनान में बहुत सक्रिय हो जहाँ सैकड़ान ब्रजभापा के ग्रन्थ, काव्य आदि संग्रहीत हते। विद्याविभाग के अध्यक्ष अरु रत्नगर्भ जी के मामा पं कंठमणि शास्त्री संस्कृत के अरु ब्रजभापा के विद्वान और सुकवि हते। बिननैं बिनके दुर्लभ ब्रजभाषा ग्रन्थन को संपादन एवं प्रकाशन करौ है। अष्टछाप के कविन के पद संग्रह तौ बिनकी लगन के फलसरूप प्रकाशित भये हते।

रत्नगर्भ जी नैं काँकरोली में छ सात वर्ष रह कैं शुद्धाद्वैत दर्शन और ब्रजकविता की शिक्षा प्राप्त कीनी। वही ये ब्रजभापा में कविताऊ करन लगे, यद्यपि बिनकी मातृभाषा अवधी हती।

सी-8 पृथ्वीराज रोड़,
जयपुर-1

■

श्री तैलङ्ग की कविता में भक्ति-भाव

- श्री ब्रजेश कुलश्रेष्ठ

देर कवि शास्त्री रत्नगर्भ तैलङ्ग नैं अपने कविता संकलन में भाँति भाँति के रसन कौ स्वाद चखाय कै पाठकन कूँ आनन्द के सागर में डुबायौ है,कहूं भक्ति रस है तौ कहूं अनूठो अनुपम श्रृंगार रस तौ कहूँ हास्य रस, समूचे संकलन ते ऐसौ लगै कै कवि कौ झुकाव भक्ति रस की ओरई ज्यादा रह्यौ है। भक्ति रस में कवि नैं प्रत्येक देवता के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं पै ऐसौ लगै कि ब्रजनन्दन श्री कृष्ण नैं कवि कौ मन ज्यादा रिझायौ है। कवि नैं अनेक छन्दन में राम,शिव,सरस्वती आदि आराध्यन कौ गुन- गान कियौ है।

वैसें ऐसौ देख्यौ गयौ है कै जीवन के आखरी पड़ाव में भक्ति अध्यात्म, अध्ययन, आस्था, आराधना अरु अनुराग कौ निचोड़ नेंक ज्यादा मुखर अरु प्रखर है उठे। संकलन तै ऐसो लगै जैसे कवि के चित्त नैं भक्ति भाव कौ पूरी तरियाँ रूप लै लियौ होय। अत: भक्ति रस की भीनी सुगंध सब ओर मुखर है उठी है। वैसे तौ ये कह्यौ जाए, कै कविता स्वयं ही भक्ति अरु अध्यात्म कौ गुम्फित रूप है। कवि के मन मस्तिक पै जब कई तरियाँ के दबाव परैं अरु उन दबावन कूँ जब कोई सुघड़ भासा मिल जाए तौ कविता साकार है उठै।

तैलङ्ग जी नैं भगवान श्री कृष्ण कूँ ई अपनौ आराध्य बनायौ है अरु वाई के गुनन कौ, वाई के हावभावन अरु वाई के श्रृंगार कौ खुल कै वर्नन कियौ है। आम परिपाटी ये है कै कोऊ नयौ काम सुरू करिबे ते पैले श्री गनेश कूँ मनायौ जाए। तैलङ्ग जी नैं संकलन सुरू करिबै ते पैले गनेश स्तुति के पश्चात् अपने बन्सीधर कौ ही आह्वान कियौ है।

कवि नैं बड़े सुन्दर ढंग सौं भगवान श्री कृष्ण के नख सौं शिख लौं श्रृंगार को वर्नन कर मंगला में बिनके जगवे की गुहार कीनी है

उठिये कमल नैंन ब्रज चन्द्र रे गोविन्द
आये हैं गुआल बाल टेरत हैं बार बार
सरस गुलाब जल आनन परवार लोहु
लेहु कर मुरलिया आई मधु मंगला

गुहार के बाद कन्हैया जाग गयौ है। मैया नैं पूरे मनोयोग तें वाकौं श्रृंगार कियौ है। याके बाद राज भोग में कन्हैया कूँ भांति भांति के पकवान परोसे हैं-सिकरिन छाछ, मेवा, भात, मोतीचूर चन्द्रकला, फैनी, चूरमा, घेवर, गुझिया और न जाने कहा कहा स्वादिष्ट भोजन परौसो है, पूरे छन्द कवि के भक्ति भाव तैं ओत प्रोत हैं।

आगे चल कैं महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के पुत्र गो. विठ्ठल नाथ के बालपन कौ वर्णन कियौ है, बिन छन्दन में बाललील कै संपूरन भाव प्रगट होए-

कबहूँ उठाय देर गऊमुखी कर लेंय
कबहूँ रिझाय मात कौ कर गहनू हैं॥
लक्ष्मी सपूत सिरी बल्लभ दुलार आप
बाल वेस याही विधि विठ्ठल नचत है॥

याते आगे कवि नैं प्रार्थना के रूप में दसों अवतारन की स्तुति गाई है।

गौ द्विज धर्म सुरच्छा कारन
अरु मर्जादा की विधि धारन
राम रुप धरि मारे रावन
अरु
चोर जुबारल बार कपट रति
कलयुग अन्त होई हैं नरपति
कल्कि रुप धरि दुःख नसावन
जय जगदीश जयति जग पावन।

पूरे छन्दन कूँ कवि नैं भांति भांति के अलंकारन तै अलकृंत कियौ है पै बिन में केशव कवि जैसी कसरत नाँय दीखे। जदि दीखे तौ छन्द भक्ति भाव तै ज्यादा

ओत- प्रोत होतो दीखे याही कारन सौं श्री तैलङ्ग की कविता हमें भक्ति अरु अध्यात्म की ओर खैंच ले जाए है। कवि नैं महाकवि तुलसी की मनोभावना कौ कैसो सुन्दर वर्नन कियौ है। 'तुलसी मस्तक तव झुके, धनुष बान लेओ हाथ' या बात कूँ कवि तैलङ्ग नैं दूसरे ढंग तैं कही है-

तुलसी ब्रज-मंडल बीच गये
मधुरा पहुँचे, पहुँचे बरसाने।
तँह कृष्णहि कृष्ण लखे सरवत्र
सु राम बिना कवि 'देर' दिवाने।
प्रनिपात किये बिन मोहन को
तुलसी मुख साँवर यह बैन बखाने।
मुरली धरि देहु लला अपनी
कर लेहु धनू, सुनि श्री मुस्काने।

यों तौ या संकलन में होरी पैऊ भाव पूर्ण छन्द पढ़िवे कूँ मिलैं, समाज की वर्तमान दसा पैऊ छन्द लिखे गए हैं। पै ज्यादातर छन्द भगवान श्री कृष्ण कूँ ई अर्पित करै हैं। कहूँ सूर की आत्मा बोलती दिखाई परै तो कहूं तुलसी की। मैंने पैले लिख दीनौ है कै संकलन में ऐसौ नाँय दीखे कै छन्दन में अलंकारन की कसरत करी गयी है, साफ दीख रह्यौ है कै कवि की भक्ति भावना की ही प्रमुखता रही है। भाषा अलंकार को जो कछु ज्ञान है वाई कूँ भगवत् भक्ति कौ सहारौ लैकें प्रकट कियौ है याही कारन ये छन्द सीधे-सादे भोले-भाले पाठकन कौ मन अपनी ओर खैंच लेऐं।

वैसे तो तैलंग जी नैं पूरौ संकलन ब्रजभाषा तै सजायौ है पै कहूं कहूं खड़ी बोली केऊ छींटा, दिये हैं जो अखरें जरूर हैं।

बी-68, अनीता कॉलोनी,
बजाज नगर, जयपुर (राजस्थान)

■

देर कवि रत्नगर्भ सौं साक्षात्कार

- श्री गोपालप्रसाद मुद्‌गल

प्र- आपके पूर्वजन नैं ब्रजभाषा साहित्य लिखौ याकी एक बानगी बताएँ ?

उत्तर- हमारे पूर्वजन में एक दत्तात्रेय गोस्वामी भये,जिनकौ उपनाम हौ 'दत्त'। लखनऊ के 'मिश्र बन्धून' नैं बिनकौ उल्लेख अपनी सोध पुस्तक में करौ है। वे कोड़ा जहानाबाद अरु नरवर गाँव में विख्यात हे। सरस ब्रजभाषा में वे फुटकर काव्य रचै हे। एक उदाहरन-श्री कृष्ण वियोग में व्यथित गोपी कौ कथन है-

दही दही घर घर दही, दही दही सु पुकार।
हाय दही, हा हा दही,आए कृष्ण मुरार॥

प्र- ब्रजभासा की ओर आपकौ रुझान कब अरु कैसैं भयौ ?

उत्तर- पूज्य पिताजी के काव्य संग्रह देखिके मन में इच्छा जगी कै ब्रजभाषा में काव्य रचना करी जाए। यह तब की बात है जब मेरी उमर पन्द्रह सोलह साल की होयगी। पिताजी नैं कवित्त,सवैया,दोहा, बारहमासी(विरहनी जगतमासी) लावनी, कजरी, ठुमरी, आदि लिखे। पिताजी गवैया हू हते। बिनकी छन्दन में रुचि ही। बिनके छन्दन कूँ सुनवे कौ पूरौ औसर मोय मिलौ। कानपुर के प्रसिद्ध रामलला अरु जगन्नाथ जी के मंदिरन में काव्य गोष्ठी होती रहतीं। समस्या पूर्ति होती।समस्या पूर्तीन कौ प्रकासन हू नियमित होतौ रहतौ। बिनमें बैठकैं सुनते अरु प्रेरणा पायकैं टूटी फूटी रचना करौ करै हे।

प्र- आपकौ क्षेत्र अवधी कौ है, तऊ ब्रजभाषा की ओर रुझान कैसें भयौ अरु का भाँति की रचना करीं?

उत्तर- कानपुर में ब्रजभाषा के कवियन में पं. श्याम बिहारी, हरिजू प्रणयेश सनेही, हितैषी,शंकर त्रिशूल, किशोर जैसे कवीन की गोष्ठी में ब्रजभाषा कौ माधुर्य अपने आप मन पै प्रभाव डारतौ। याही सौं ब्रजभाषा की ओर रुझान भयौ। अरु हमारी दादीजी कामवन की हीं। विनकौ नाम हौ श्यामा देवी। वे कामां के छोटे दाऊ जू के मंदिर की हीं। जब वे श्री ठाकुर जी की सेवा में रहै हीं तौ ब्रजभाषा के गीत प्रभु कूँ सुनाती अरु रात में बालकन कूँ ब्रजांचल की अनेक मनोहर कहानी सुनावै हीं। हमारे काका श्री बाल कृष्ण भट्ट, जो कामां की रासलीलान में भाग लेते वे हू कविता करै हे। बिनकौ सान्निध्य मिलौ। बातचीत घर में ब्रज में होती। बालकृष्ण 'काका' छंदन कौ ज्ञान देते। मैं हू आठ दस वर्ष ताँईं ब्रज अंचल के कामां में श्री रमणलालजी गुसांई के पुत्र श्री घनश्याम लाल जी अरु रघुनाथ लाल जी कूँ संस्कृत और हिन्दी पढ़ातौ रह्यौ। ब्रज कौ परिवेस अरु प्रभाव रह्यौ। याही सौं अवधी क्षेत्र में रहते भये ब्रज की ओर ललक स्वभाविक ही। काँकरोली में श्री कण्ठमणि सास्त्री हे। वे श्री ब्रजभूषण लालजी के शिक्षा गुरु हे। वे संस्कृत अरु हिन्दी के विद्वान हे, पै ब्रजभाषा में अपनी रचना करते हे। विन मामाजी सौं हू हमें प्रेरणा मिली। बिन्नैं श्रीद्वारकेश साहित्य मंडल की स्थापना करी। हर माह समस्या पूर्ति गोष्ठी होती, महाराज कूँ बड़ौ सौक हौ। एक बेर तुलसी जयन्ती पै हमारे ऐसे अनपढ़ कवि ने अपनी कविता पढ़ी (सब लोग हँसबे लगे)

तुलसी तुलसी तू लसी, तुलसी तूल तवंग।
हुलसी हुलसी हूलसी हुलसी हूल हवंग॥

कांकरौली में हमें हू रहवे कौ औसर मिलौ वहाँ मैं हू समस्या पूर्ति करकें सुनावै हौ। दिव्यादर्श नाम की एक पत्रिका छपै ही वामें मेरे छन्द हू छपै हे। श्री कंठमणि शास्त्री दतिया 'बुन्देलखण्ड' नरेश के परंपरागत राज गुरु हे।

मेरो जन्म गंगातीर-पढ़ाई यमनुातीर
राजस्थानी सेवा करि कमर झुकाई है।

ठौर-ठौर भागवत पाठ किये बहु बार
देस देस घूमि घूमि आयु हू गमाई है।
भासाई प्रदूषण सौं ग्रस्त भयौ 'देर'' तऊ
ब्रज ना बिसारी, कबौं सबकी जो माई है।
मैं ब्रज कौ ब्रज मेरौ वारौं सब ब्रज पर
ब्रज भाषा लागै मोहि बासोंधी मलाई है।

प्र- प्रारंभ में आपनैं कैसी रचना करी ?

उत्तर- प्रारंभ में दोहा लिखौ करतौ सबसौं छोटा छंद दोहा है। हमैं वा समै मात्रा अक्षर आदि कौ कम ज्ञान हतौ। याही सौं यह स्वीकारौ, फिर जिज्ञासा बढ़ी अरु कवित्त सवैया पै आय गए। एक प्रारंभिक रचना या भाँति सौं है-
पिय के रस पीयूप कौ, पिय राधा सुधि हीन।
ऐसौ अचरज देखिकैं, कृष्ण भये अति दीन ॥ 1 ॥
श्री राधे मुख कमल कौ लखैं सु चन्द्र चकोर।
वा छवि राधे पदन लखि विहँसे नंद किशोर ॥ 2 ॥

प्र- ब्रजभाषा के किन साहित्यकारन सौं आप प्रभावित रहे याकौ कारन का है ?

उत्तर- मैंनें साहित्य की परिच्छा दई। वा में रत्नाकर, सूर, बिहारी, देव, मतिराम, ग्वाल, भूषण, पद्माकर, केशव आदि कौ काव्य पढ़ौ, इनसौं ही मैं बहुत प्रभावित भयौ। इन कवीन में तुलसी, सूर के सिंगार अरु वात्सल्य भाव सौं विभोर भयौ। आज हू वामें मोय सूर बहुत भावैं।

प्र- ब्रजभाषा में आपने किन विसैन कूँ चुनौ है?

उत्तर- आध्यात्मिक विसैन सौं विसेस लगाव रह्यौ है। 'कृष्ण' मेरी कवितान के केन्द्र विन्दु रहे हैं। हास्य व्यंग की रचना हू करी हैं-
तमाकू गुटखा खायवे वारेन पै कटाच्छ या भाँत सौं कियौ है-
'महक' आनन्द कोऊ लेत रहे वेर-वेर,
कोऊ भक्त हाथ माँहि सुन्दर सौं ''गुटका है ॥
कोऊ भयौ सुरती कौ, कोऊ भयौ जर्दा भक्त
कोऊ त्रिशंकुवत 'अम्बर' में लटका है ॥

कोऊ भक्त हाथरसी कोऊ है बनारसी को
कोऊ तौ सुजन मैनपुरी पै अटका है॥
कोऊ तो तमालपत्र लिए चूर्णयुक्त "दर"
तरल सन्तुष्टि हेतु कोऊ मुख मटका है।

प्र- काव्य कौ उद्देश्य आप का मानें हैं ?

उत्तर- काव्य आनन्द कौ सहोदर है। आनन्द दैवे वारौ है। जीवन कौ उद्देश्य हू आनन्द पाइवौ है। काव्य के माध्यम सौं आनंदानुभूति कराई जाए तौ अनहद होय है। काव्य कूँ जो औजार के रूप में या विचार के रूप में लाइबे की कहैं बिन सौं हमारौ कोऊ सरोकार नाँए। न यासौं हमारी सहमति है न हम याके पक्षधर हैं। काव्य सौं क्रांति लाइबे के हम हिमायती नाँए।

प्र- अकादमी के तांई आपकौ संदेसौ का है?

उत्तर- संदेस या प्रकार है कै जे ब्रजभाषा के सृजक हैं वे कविवर गद्य सैली के होंय या पद्य सैली के होंय सबई कौ उत्थान,प्रगति होय अरु बिनकी रसभरी कवितान कौ आदर होय। चाहे बालकन की तोतरी भाषा की होय अथवा लालित्य सौं भरी होए। जैसौ उदाहरण भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी कौ है-
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, मिटत न हिय को सूल॥

प्र- नई पीढ़ी में चेतना जगावै कूँ आपकै का सुझाव हैं?

उत्तर- मैं नई पीढ़ी कूँ बतानौ चाहूँ हूँ कै बिना अध्ययन- मनन अरु सद्गुरु मार्ग-दर्शन के बिना सरस साहित्य कूँ उच्च शिखर तक पहुँचावौ असंभव है। हर विधा कौ विधिवत् नियम के अनुसार, पैलैं-अध्ययन, कठिन परिश्रम करैं फिर बाकौ मनन करैं ता पाछैं लिखबे कौ साहस (प्रयत्न) करैं। तुलसी के अनुसार निज कवित्त केहि लाग न नीका। अरु छपबे की मोह ममता कूँ त्यागें। कारण निज काव्य छपास एक विकट बीमारी है जो मानुस कूँ निरासा में ज्यादा ढकेले है। अपने लिखे काव्य या गद्य भाव कूँ और निज काव्य के भावन कूँ, कम सौं कम अपनौ वा कविता कूँ बार बार पढ़ें। गलती अपने आप निकस जाएगी, अरु बाकौ फल (स्वान्तः सुखाय) होयगौ।

प्र- अपनी रचनान के एक दो छन्द सुनाएँ-

उत्तर- कुंभकार कोश्रय

कण कण मृत्तिका को लेइ कोऊ कुंभकार
जल सौं मिलाइ करि पिंड सौ बनायौ है॥
चक्र पैधरिकैं घुमाइ वाये बेर-बेर
काटि दियौ तंतु पौन सेवन करायौ है॥
सप्त दिन अनल प्रचंड में पकाइ 'देर'
रंग सौं रंग्यौ है घट रूप में सजायौ है॥
श्रम कौ सफल तब जानौ कुंभकार बन्धु
सुन्दरी वधू नैं ताहि कटि सौं लगायौ है ॥1॥

उमड़ि घुमड़ि घन गरज गरज घेर,
फेर फेर आवत अकास उड़ उड़ कैं।
निसि अंधियारी कारी बिजुरी चमक जोर,
मोर की कुहुक सुनि मोर मन कुहुकैं।
पवन झकौर सह मदन मरोर रह्यौ,
करे झकझोर जोर पौर पौर फड़कैं ।
बिन बरसात मोहि कछु ना सुहात 'देर'
यह बरसात साज़ लाई गढ़ गढ़ कैं ॥3॥

प्र.- आपके जीवन में का का रुचि रही हैं?

उत्तर- व्यंग हास्य सुनबे की इच्छा अरु क्रीडा क्षेत्र में शतरंज, तास खेलबौ अरु संग्रह करबे में विसेस रुचि। चित्र संग्रह, तास, माचिस, डाक टिकिट आदि, प्राचीन ग्रंथन कूँ पढ़बौ। भागवत पुराण पठन पाठन एवं सांझी बनाइबे में रुचि रही हैं।

प्र.- आपनै समस्यापूर्ति खूब करी हैं। कछू बानगी प्रस्तुत करैं?

उत्तर- नैन बिछाय करी पहुनाई

दधि ओजन भोजन लेहु लला, सुचि 'नेनु' सुधा सी लेहू मलाई।
बंसीवट जाउ सुचराउ अजा, बेनु बजाइ के गोप रिझाई।
मनरंजन की दृगं जन परी, कनी राधे ताहि काढ़ि ना पाई,
संकेत पै स्याम गये सुराधे-नैन बिछाय करी पहुनाई॥ 1॥

जुन्हाई नहाइ सुचंद्रकलाजु-कला विमला सु करी अगुवाई।
द्वारन बंदनवार लसै औ-पौरन पौर बजी सहनाई॥
तिय मोर पखा कटि काछनी काछि सु नंदहि देत सु भान वधाई।
बरसाने बरात चली सजकै-नैन बिछाय करी पहुनाई ॥ 2 ॥

शुभ राम के वाट न हाट गई-कंटक झारि करी जु सिंचाई।
मचिया खटिया कुटिया 'सबरी' गगरी सिगरी जल सौं भरि आई,
बेर कुबेर अबेर सबेर सु-द्रोण भरी सुधरी चतुराई।
जब राम मिले सबरी सबरी, नैन विछाय करी पहुनाई॥ 4 ॥

लंबोदर सूपकर्ण गजानन भालचंद्र
द्वै मातुर एक दंत संकट निवारिये।
कर में शुभ सुमाल मोदक प्रिय गणेश
स्कंद के अग्रज द्विज कलिमल टारिये।
ऋद्धि सिद्धि के दाता विधाता करत गान
सर्प सूत्रधारी पद्म पातकी को तारिये,
गंगाधर के दुलारे प्यारे उमासुत पर
देह गेह नेह सब ताहि पर बारिये,

ब्याह हेतु बरात ले आयो शिशुपाल यहाँ
रुकमिनी कहै मेरी या बला कौं टारिये।
मेरे यहाँ ब्याह पूर्व देवी पूजन कौ नेम
हरन हमारौ करि हमकौ उबारिये।
दासी की विनय पर उदासी ना करै 'देर'
पार कर सिंधु हरि किंकरी कौ तारिये।
सुयस तुमारौ सुनि निसचय करी हम
देह गेह नेह सब ताहि पर वारिये।

कोई अलि आवै अरु विपत सुनावे वहु
चोरी छिछोरी की वान याकी तौ निवारिये।
माखन चुरावै अरु सखान को बाँटि देय
वसन चुराइ लेय यसोमति-दारिये।
वेसुध परी राधे को मन हरन कियो ये
नजर न लागी होय-कछु तो विचारिये।
औषध है मेरौ लाल-वाहि लइ जाउ उतै
देह गेह नेह सब ताहि पर वारिये,

पांडेय मौहल्ला डीग, भरतपुर

■

ब्रज-माधुरी

लंबोदर गज वदन अलि, चार भुजा एक दंत।
आउ चलैं पूजन करैं, बहुरि रह्यौ हेमन्त ॥1॥

एक दन्त मंगल करन, विघ्नराज शुभ तुण्ड।
श्रवन स्रवै मद पै भ्रमैं, ये भंवरन के झुण्ड ॥ 2 ॥

विघ्नेश्वर शुभ गज वदन, एक दन्त गजराज।
कृपा करहु मंगल प्रभो, बनूँ दास ब्रजराज ॥ 3 ॥

चरण कमल की नखत छवि, मणि मरकत छवि देत।
दरसन सौं मुक्ती मिलै, धारौ निर्मल हेत ॥ 4 ॥

पद सरोज की अंगुरिया, चन्द्र किरन की भांत।
चंदन चरचित युग्म छवि, द्विगुणित होती कान्त ॥ 5 ॥

तुलसी सोभित चरन में, शुभ मंजरिका युक्त।
मानहु गंगा यमुन मिलि, करत चरन अभिसिक्त ॥ 6 ॥

नूपुर सज्जित चरण दल, युगल कमल परिपूर्ण।
छुद्र घंटिका कटि लसत, करैं दुःख कौ चूर्ण ॥ 7 ॥

गंगा यमुना सरसुती, मिलि कैं त्रिविध सुमाल।
त्रिवलि त्रिवेणी नाभि की, काटत काल कराल॥ 8॥

वक्षस्थल पर भृगु चरन, अरु वैजन्ती माल।
हरि नख, गज मुक्ता, लसैं श्री गोविंद गोपाल॥ 9॥

कण्ठा श्री के कण्ठ में, सोभित सुन्दर गोप।
श्यामल नीलम कान्ति सौं, दोप होत सब लोप॥ 10॥

श्री मुख की सोभा कहा, कोटिन चन्द्र लजात ।
ता छवि कूँ कवि 'देर'' लखि, बरनत अति सकुचात ॥ 11॥

अधर सुधारस सौं भरे, यथा सु दाडिम पुष्प।
दंतावलि दुति तड़ितवत्, दमकत पुष्कर पुष्प ॥ 12॥

केहरि-अरि के सीस ते, निकसत स्वाती बुन्द।
ताकी नक वेसरि धरी, चीर हरन गोविन्द ॥ 13॥

युगल नयन कोमल सरस, धवल वरण जिमि शंख ।
भृकुटी तौ अहि-सत्रु के, मानहु दोनों पंख ॥ 14॥

चंदन चरचित भाल पै, पीत रंग की खौर।
मृग मद की बैंदी लसै, अहि भुक कौ सिरमौर ॥ 15॥

हंस पै चढ़नवारी सुबुद्धि की दैनवारी
एक कर कंज सुभ वर वीणा बजावती।
पद्म कौं आसन रम्य, अंबर सौ तन सुभ्र
मुख सौं वचनामृत सरस उचारती।
कष्टन कौ हरै आप व्यथित उपासकन
विद्या बुद्धि मंडित कर पंडित बनावती ।
सरन तुमारी आय सुबंदना करैं 'देर'
मेरी ओर दया दृष्टि करौ मातु भारती ॥ 16॥

मंगला

उठिये कमल नैंन व्रज चन्द रे गोविन्द
बोलिये मधुर बैन जिमावै श्री मंजुला।
आये हैं गुआल बाल टेरत हैं बार बार
बाजे मधु बाँसुरी मृदंग ढोल तबला।
सरम गुलाब जल आनन पखार लेहु
लीजै सद्य नवनीत, सुकंद हि सौं मिला।
बीरी अरोगौ पुनि गोरोचन तिलक देहु
लेहु कर मुरलिया आई मधु मंगला ॥ 17 ॥

सिंगार

अधर धरे मधु बाँसुरी, रूप सुरूप अपार।
राधेजू कौ आज तौ, करत कृष्ण सिंगार ॥ 18 ॥

ग्वाल दरसन की भावना

छाक अरोगत युगल शुभ, गल वैजन्ती माल।
ग्वाल बाल मिलि खेलते, बलदाऊ गोपाल ॥ 19 ॥

मंजुल मनोहर मुक्तान के धवल हार
मोर मुकुट सुन्दर सीस पै भ्राजत हैं॥
हीरक सुसोभित चिबुक मुख गोविन्द कौ
विद्रुम से अधर पुट छवि छाजत हैं।
कटि तट लसत छुद्र घंटिका मंजु 'देर'
दिव्याभरण बसन श्री अंग साजत हैं।
लोचन ललाम अभिराम व्रज धाम रम्य,
पूर्न घनश्याम स्याम राधिका राजत हैं ॥ 20 ॥

राजभोग

सलौंने अलौंने बहुभाँति पकवान बने,
सिकरन, दही, छाछ, औं मोहन भोग है।
मोहनथार वासोंधी मेवाभात सद्य खीर
मोतीचूर चंद्रकला सु फेनी कौ योग है।
थपड़ी कचरी सेव पापर मखाने सेव दाल
पाँचों भात बाटी चूरमा घी को संयोग है॥
मठरी मावा मगद, ठौर फल फूल रम्य
तुलसी दल सौं सुपूरित राजभोग है॥ 21॥

गोल गोल घेवर हैं गुझिया मेवा सौं भरी
तिलवरी सांउगे तरल तिनकूरा है।
मिलसारू अडबंगा कह भुरता अनेक
पूरी तवापूरी पुआ मुठिया कौ चूरा है।
खुरचन रसभरी खुरमा कपूर कंद
काँजी कढ़ी दधि मंड बेसन कौ कूरा है।
सरस अवलेह आदौ और सुदाख मिली
सकरी अनसकरी मिसरी और बूरा है ॥ 22 ॥

श्री मुख सुद्धी हेतु है सीतल जल की झारि।
नागर एला लौंगयुत, वीरी खैर सुपारि॥ 23॥

या विध भोग अरोग हरि, करि छन लौं विसराम।
उत्थापन कौ दरस दैं, राधे नयन लालाम॥ 24॥

कमल वदन कर में कमल, कमल सजी परयंक।
कमल नयन करते सयन, कमला श्री निः संक ॥ 25॥

अष्टाक्षर मंत्र महिमा-

जपत निरंतर मौन, अष्टाक्षर इक मंत्र है।
संसय या में कौन, सब सुख वाकौ मित्र है॥ 26॥

श्री- तौ सौभाग्य को जु करनहार महा दिव्य
कृ- नाम लेवत ही कटत भव पाप हैं।
ष्ण-सब्द कहते कटै तीनों ताप 'देर' कवि
श- कार के कहे कट जात संताप हैं।
र- कार बढ़ावै सुज्ञान को अपार निधि
णम्- सब्द प्रीति देय गुरू कौ प्रताप है।
म-कार को कहै जीव पावै न जनम पुनि
म-न मोहन में रमै, मंत्र की ये छाप है। ॥ 27 ॥

गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की जयन्ती पै

लक्ष्मी सुत, पदमापती, श्री विट्ठल गिरिराय,
लीला अद्भुत आपकी, लखि सन्देह नसाय ॥ 31 ॥

पौष कृष्ण नवमी तिथी, नयन ऋषी सर इन्दु ।
प्रगटे वल्लभ भवन में, श्री विट्ठल नव चन्दु ॥ 32 ॥

अंक सौं उतरि मात के प्यारे श्री विट्ठल जू
तात ढिंग जाय बहु कौतुक करत हैं ॥
परिजन देखत हैं बाल लीला नित्य-नित्य
कृष्ण-कृष्ण कहि तारी देत हैं हँसत हैं ॥
कबहू उठाय 'देर' गऊमुखी कर लेंय
कबहूँ रिझाय मात कौ कर गहत हैं ॥
लक्ष्मी सपूत सिरी वल्लभ दुलारे आप
बाल भेस या ही विधि विट्ठल नचत हैं ॥ 33 ॥

उत्प्रेक्षा अलंकार

पिय के रस पीयूष कौ, पिय राधा सुधहीन।
अचरज सौं यह देखि कैं, कृष्ण भये अति दीन ॥ 34 ॥

कालिया के फनन पै
लखि के चरित चूडामनि ब्रजधाम माँहिं
आवै नहीं बात ये मुनीन के मनन पै ॥
देखे गोविन्द सु गोप गोपिन गैय्यन बीच
विष पान हेतु पूतना के स्तनन पै ॥
यमुना पुलिन आय देखी जो अनीति राह
नगन नहाती गोपियन के वसन पै ॥
गैंद मिस कूदि परै स्याम कालीदह माँहि
नाचत कन्हैया आज कालिया फनन पै ॥ 35 ॥

होबैं हैं अनर्थ जबैं, लेबैं अवतार विष्णु
कहीं तो कराल नरसिंह रूप लावैं हैं।
कहीं वामनावतार राम कौ सरूप धारि
रावण अभिमानी कौ नास करि जाबैं हैं॥
कबौं बुद्ध कबौं मीन, कबौं कच्छप वराह,
शंभु हेतु मोहिनी स्वरूप दिखलाबैं हैं॥
आज भक्त-भयहारी, रसिक बिहारी कृष्ण,
नंद के निकेत धर्म हेतु धरा आबैं हैं॥ 36 ॥

सुखद समीर बहै मंद-मंद अंब बिन्दु,
मैना-मैना बोलै शुक कूकै पिक वन में॥
बाजत मृदंग ढफ-ढोलक उमंग संग,
नाचत अनेक गोप नंद के सदन में॥
भांति-भांति चौक पूरैं गोप ललनाएँ सबै
गाती हैं बधाई मोद मावे नहीं तन में ॥
भाद्र कृष्ण अष्टमी कौ दिवस महान शुभ,
उत्सव है कृष्ण, जन्म, नंद के भवन में॥ 37 ॥

दशावतार

जय जगदीश जयति जग पावन
हयग्रीव संहारन कारन।
मीन स्वरूप कियौ हरि धारन
सत्य व्रत को प्रलय दिखावन ॥
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 38 ॥

कीन्ह सुरासुर अरणव मंथन
अमृत हेतु लिख्यौ सद्ग्रंथन ॥
कच्छप बनि मेरु उठावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 39 ॥

स्वर्ण नेत्र भयौ अति दारुन
बनि वराह तेहि मूल संहारन
दधि पर भूमि लगी तैरावन ।
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 40 ॥

हिरणकशिपु कौ मारन कारन
नरसिंह रूप कियौ प्रभु धारन
तब प्रहलाद् भक्त उद्धारन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 41 ॥

नृप बलि कियौ यज्ञ, सुख कारन
वामन वेस कर्‍यौ मनभावन
छलि करि भूमि दई सब देवन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 42 ॥

दुष्ट नृपन कौ भयौ जब वरधन
बारम्बार कियौ तब मरदन
परसुराम बनि रूप सुहावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 43 ॥

गौ द्विज धर्म सुरच्छन कारन
अरु मर्जादा की विधि धारन
राम रूप धरि मारे रावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 44 ॥

भक्त जनन के हिय हुलसावन
लीला करी वहुत वृंदावन
कृष्ण रूप वनि कंस नसावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 45 ॥

जयति बुद्ध सन्मार्ग प्रचारक
कुमतिहारि खल दर्प विदारक
मोहत दैत्य सदा मन लावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 46 ॥

चोर जुवार लवार कपट रति
कलियुग अंत होई हैं नरपति
कल्किरूप धरि दुःख नसावन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 47 ॥

जो यह पढ़ै सुनै चित लावहिं
दशावतार चरित सुठि गावाहिं
तिनके अघ सव दूरि विनासन
जय जगदीश जयति जग पावन ॥ 48 ॥

मदमत्त मयूर घने कुहकैं
पिक वोलत वोल सुहावन में ॥
युवती सुभ साजि सिंगार करैं-
सुविहार करैं मिलि कानन में ॥
कोइ गावत राग मलार भली-
डारि हिंडोर सुडारन में
कवि 'देर' कहै यह पावस की-
छवि नीकि लगै इमि सावन में ॥ 50 ॥

नव कोमल पल्लव के तन वस्त्र
सुपुष्पन की सजि मौर सुहावन॥
गिरि गैरिक कौ सिर टीकौ दियौ
बिखरी जु लता पटुका हरसावन॥
चहुँ ओर है भीषण बिज्जु छटा
सँग वीरबहूटि सखी मनभावन॥
दुलही बरसात को साथ लिये
दुलहा बनि घूम रह्यौ वर सावन॥ 53॥

झांकी सुझांकी जबसे बाँकी मनमोहन की,
तब सौं हिया की गति या विधि ठगी रहै॥
घर ना सुहाय वर-वर ना सुहाय अरु,
तरु ना सुहाय चाह चहुँधा पगी रहै॥
'देर' कवि कहै बेर-बेर हेर फेर-फेर
जाऊँ मिलि आऊँ ऐसी भावना जगी रहै॥
कहा ये बताऊँ बासौं कैसें मिलि पाऊँ सखि
दारी ननदुल लो दांयें, बांयें ही लगी रहै॥ 54॥

होली 'नवजीवन' में होली कई बेर 'देर'
गोकुल 'बाजार मौंहिं' अब तो बहारें हैं॥
'आवैं' सखि जो तिन्हे हू बरसाने सौं बुलाय
चलि कैं कहैंगे राधा तेरे ही सहारे हैं॥
'अवनी आकाश लौं' पैठी हैं तिहारी बात
एरी बीर देखि जुरि आये हुरिहारे हैं॥
'बाजत' मृदंग ढप ढोलहू उमंग संग
नंद के दुआरे 'छूटैं' रंग के फुहारे हैं॥ 55॥

उमड़ि-उमड़ि घन गरज-गरज घोर
फेर-फेर आवैं सु अकास उड़ उड़ कै।
निसि अँधियारी कारी बिजुरी चमक जोर
मोर की कुहुक सुनि मोर मन कुहुकैं॥
पवन झकौर सह मदन मरोर रह्यौ
करे झक झौर-जोर पौर-पौर फड़कैं।
बिनु बरसात मोहि कछु न सुहात 'देर'
यह बरसात साजि लाई गढ़-गढ़ कैं॥ 56॥

ताल तलैया भरी बहु ठौर कहूँ अरविन्द खिले मनभावन।
मत्त मयूर नचैं जु कहूँ सु कहूँ पिक बोल रही जु सुहावन॥
दादुर ताल सौं हूकैं भरैं अरु झींगुर वृन्द मँजीर बजावन।
गावैं सबै इकहि सुर सौं सखि बारहु मास बन्यौ रहे सावन॥ 58॥

देख सखी यह बान बुरी यह रोज हमैं मुख चौं मटकावै।
नंद सौं जाय कहूँगी अबै निज पूत की छूत चौं नाँय छुड़ावै॥
मारग बीचि मिल्यौ हम सौं रस ऐंचि चख्यौ औ सींग दिखावै।
आज वही रंग खेलिबै कूँ अरी बीर अबीर लिये चलि आवै॥ 59॥

सुन बात अरी इतराय नहीं हम जानत हैं कजरी कजरा।
सर तीर खडी जब तू जुहती तब छूट परे लुगरी लुगरा॥
अलि दोस हमारौ कछू हू नहीं सुन स्याम कियौ झगरी झगरा।
भयभीति भई हिय छुट गयौ, मग भूलि लखी मगरी मगरा॥ 6 0॥

बारी तिबारी मेरौ आइबौ भयौ हैं बन्द,
उड़ी उड़ाइवौ नयौ हिये हरियतु है॥
बालपनौ मेरौ गयौ घटि बढ़ि अंग भयौ
मित्रन कौ संग गयौ बैठे बढ़ियतु है॥
'देर' कवि कहाँ लौं कहै यह आपनौ दुख

गोखन सौं देखिबे की साध सधियतु है।
जा दिन ते जोबन हमारे अंग आयौ अरि
ता दिन ते फूँकि-फूँकि पग धरियतु है॥ 61॥

जनम के छठे दिना पूतना उद्धार कियौ
तृणावर्त शकटासुर हू कौं पछारे हैं॥
रसरी-रसरी बँधि दामोदर भये हरि
ताथेई-ताथेई करि अहि सीस फारे हैं॥
माटी जब खाई जसोदा कौ मोहित कियौ
वसन चुराइ तरू डार डार डारे हैं॥
नख पै गिरिधारि गिरधर कहाये आप
मोर मुकुट वारे हमारे रखवारे हैं॥ 64॥

ध्रुव पै प्रसन्न होइ हरि आपु दर्स दियौ
प्रहलाद हेतु नरहरि रूप धारे हैं॥
सुदामा के चाउर चखे मु सबरी के बेर
कौरव गृह त्यागि विदुर के पधारे हैं॥
गज की पुकारि सुनि नंगे पग धाये नाथ
ग्राह कौं मारि कैं गयंद कष्ट टारे हैं॥
गोपिन के नैन तारे राधे जू के प्राण प्यारे
मोर मुकुट वारे हमारे रखवारे हैं॥ 65॥

जयपुर बर्नन
हाट किनारे खाट बांस औ निवारवारे
सरस मिठाईवारे कहीं मिर्चीवारे हैं॥
जालिन में सजे खुब जेवर अनेक भाँत
बैठे साहूकार कहूँ बड़ी तोंदवारे हैं॥
घृत-तेलवारे कहुँ साग फलवारे कहूँ
कहूँ पै किनारी कहूँ बासन सँभारे हैं॥
लाट के सहारे रंगवारे औ मसीन वारे
अतर -फुलेलवारे कहूँ फूलवारे हैं॥ 66॥

पैर पसारे

हरि लीला करी सिगरे ब्रज में
महिमा विनकी सब वेद उचारे॥
नंदलाल कबौं तजि गोकुल कौं
बलदाऊ कूँ लै मथुरा पगधारे॥
तँह युद्ध जरा सौं भयौ तौ भजै
दोउ जाय घुसे इक खोह मझारे॥
तब कोप सौं काल ने लात हनी
इत सोए निसंक हो पैर पसारे ॥ 69 ॥

दु:सासन चीर कैं खैंच्यौ जबै
तब द्रोपदि आरत बैन उचारे॥
दीन के बन्धु पियूष के सिन्धु
दुखी गजराज के प्रान उबारे॥
आन कैं लाज बचाओ हरी
कहँ 'देर' लगावत मोहन प्यारे॥
आज विपत्ति पहार परे
तुम जाय कहाँ पर पैर पसारे ॥ 71 ॥

तरंग में

नव रस सौं भरे सरस अलंकार सबै
भाव अनुभाव सौं तुकान्त है प्रसंग में॥
सुन्दर हैं सोराठा सु छप्पय हैं भाँति भाँति
दोहन की पंक्तिन लगी हैं राम रंग में॥
करि कैं प्रनाम बूझत हौं एक बात,
कीजियौ छिमा जो कवि 'देर' हैं उमंग में॥
नारी तो त्यागी पैन त्यागै नारी वाची शब्द,
कैसें करी कविता ई तुलसी तरंग में ॥ 77 ॥

श्री मुसकाने

तुलसी ब्रजमंडल वीचि गए
मथुरा पहुँचे, पहुँचे वरसाने॥
तँह कृष्णहिं कृष्ण लखे सरवत्र
सुराम विना कवि 'देर' दिवाने॥
प्रनिपात किये बिन मोहन कौं
तुलसी मुख सौं बर वैन बखाने॥
मुरली धरि देहु लला अपनी
कर लेहु धनू, सुनि श्री मुमकाने॥ 78॥

तुलसी

तुलसी जग पाप नसावन है
त्रय ताप निवारत है तुलसी॥
तुलसी भव फंद विनासि सवै
हरिधाम दिवावति है तुलसी॥
तुलसी गति है तुलसी मति है
पत राखनहार अहो तुलसी॥
तुलसी हरि कौ ऐती प्रिय है
नहिं भोग लगावैं बिना तुलसी॥ 83॥

बातैं-

सूर रँगे घनस्याम के रंग में
नैन बिना दरसा गए बातैं॥
राम रमायन कूँ रचि कैं
तुलसी अवधेस सुनागे बातैं॥
एक ही काल में दोऊ भये
औ दोउ सिरोमनि गा गये बातैं॥
सागर सूर रच्यौ रुचि सौं
भरिगौ तुलसी अवधेश की बातैं ॥84॥

तुलसी सपूत की
आगे चलि कलि में समस्त सुभ कर्म धर्म
होइंगे विनष्ट यह जी में जिन कूत की॥
कुटिल कुचाली गैर हाली सब लोग होवैं
कैसैं भक्ति होगी इन कुमति कपूत की॥
'देर' कवि कहै पद बंदि रामचंद्र जू के
रचि रामायन राम भक्ति मजबूत की॥
जाते राम धाम भयौ सुलभ महान पूत,
समता करैगौ कौन तुलसी सपूत की॥ 85॥

मोर सोर करते-
नैनन ही नैनन में दोउन में भई बात
रसिक बिहारी राधा दोऊ चले घर ते॥
आये बन बीच वेकरीलन की कुंज माँहिं
चाहैं रस केलि पै संकोच भरे डरते॥
पीउ पीउ बोली पिक दूर-दूर दादुर ये
कास कुस अंग अंग माँहि जु अखरते॥
राधे कहै स्याम सौं अरु स्याम कहैं राधे सौं
भाग में मिलन नाहिं मोर सोर करते॥ 86॥

झूमत डाली-
भाल पै केसर खौर लसै
झलकैं अलकैं अति सुंदर काली॥
मुक्ताअवली सी अति सोभित है
अधराधर दाँत की पाँत निराली॥
गोप वधूटिन संग लिये
करि रास रहे वन में वनमाली॥
'देर' कहै धुनि नूपुर की सुन
पवन झकौरन झूमत डाली॥ 87॥

सोरठा-

वंदहु तुलसी दास, जिन रामायन रचि कियौ।
राम भक्ति परकास, जगमगात जिमि चाँदनो ॥ 88 ॥

चाहैं तौ मयंक कौं पतंग सौ बना दें कहौ
चाहैं तो मयंक में दिखावें उष्णता घनी॥
चाहैं अति नीच कौं बनावें अति उच्चतम
धनी कौ बनावें रंक, रंक कौ महा धनी॥
बड़े बड़े सूर वीर राजा महाराजन कौं
चाहैं तो भगावें बिन आयुध बिना अनी॥
ऐसी अत्युक्ति 'देर' कविन की ही सक्ति है, जो
चाहैं तो अमावस में चमकावें चाँदनी ॥ 90 ॥

औघड़ शंभु के ब्याह समै सजि
आइ परे सब अद्भुत भुत्तू।
आनन वक्र अरु वाहन नक्र
सुआयुध चक्र ओ भोजन सत्तू॥
बाजत शंख मृदंग कहूँ कहूँ
बाजत शृंग सु धुत्तर धुत्तू॥
स्वागत हेतु हिमांचल नें सबै
भाँग पिबाय कैं करि दिये बुत्तू॥ 91 ॥

गुरु के आदेस सौं दिलीप नृप भए भक्त
सेवा करि गौ की कीन्ह सुजस कमाई है॥
जमदग्नि से भये कर्मनिष्ठ ऋषिवर
गौ के हेतु मुनि राज जान लौं गमाई है॥
तनिक सी भूल किए कष्ट पायौ नृगराज
है कैं कृकलास पुनि सुभ गति पाई है॥
याही हेतु धन्य मात जय हौ तुम्हारी सदा
काटती कलेश लेस राखती न राई है ॥91 ॥

सोचौ हौ कै चैत में चढ़ाइंगे प्रसाद हम,
बीते बैशाख जेठ गरम लू के झौंके में॥
आयौ आषाढ़ मास औ सावन तो सुन्न भए
भादौं भीर देखि शान्त रहे ऐन मौके में॥
क्वार कातिक में कछु गिरस्ती कौ फेर फार
अघन पूस बहु तापे ईंधन फोके में॥
फागुन को मास 'देर' बीति गयौ हुल्लड़ में
चढ़ो न प्रसाद हाय, बीते दिन धोखे में॥ 97 ॥

मथुरा है

श्रीकृष्ण नें जहाँ जन्म लियौ वो है ब्रजभूमि
कालिन्दी कूल ढिंग सुन्दर सातघरा है॥
यम न सतावै सो दोज के दिन स्नान करौ
देव दर्शन करो जीवन में का धरा है॥
सिरी गिरिराज जू के पास मानसी है गंग
प्रेम सरोवर और कुण्ड अप्छरा है॥
महावन कामवन सु कोकिलावन भ्रमौ
सब नगरीन सौं न्यारी प्यारी मथुरा है॥ 98 ॥

बसन्त है

मानस में बसन्त मन मंदिर में बसन्त,
मान में बसन्त महिलान में बसन्त है॥
मग में बसन्त महि मरुधर में बसन्त
मावस मयूर मूल मणि में बसन्त है॥
मुक्ता में बसन्त मुरज मलार में बसन्त
मेवा मिष्ठान्न मधु मधुर में बसन्त है॥
माघ में बसन्त मंडली मंडित में बसन्त
मौज माँहि माननी में मंगल बसन्त है॥ 99 ॥

आयौ ऋतुराज सोर भयौ चहुँ ओर 'देर'
प्रकृति पुरातन बदले पट तन्त है॥
कोमल कलियन आवरन हटायौ निज
मलय समीर सौं सुरभित दिगन्त है॥
पाटल पै गुंजरित है रहे मधुप वृन्द
सरल सरस पिक शब्द हू सुबन्त है॥
अंबर में बसन्त धरनि धरा में बसन्त
सुजन प्रियजनन बगर्‌यौ बसन्त है॥ 100॥

मनभावना

प्रात ही उठ गई री तू तौ नीर लेन सखि
आई भाग कहि कहा भूली सो बतावना॥
ब्रजभूपण देखि भूषण गिरे तुव अंग
तट पै परे हैं तिन्हें जाइ लइ आवना॥
तेरी सखि सौंह अब जाऊँ नाँय भूलि वहाँ
वह गिरिधारी कौ तू जानत सुभाव ना॥
जैसौ वह कारौ तैसी करतूत वारौ
ऊपर सौं दीखै 'देर' बड़ौ मनभावना॥ 102॥

वीर बानौ है

आयौ हौं प्रचण्ड बनि रण भूमि मध्य आज
शत्रु दल दलन कौ मैंने पन ठानौ है॥
ज़ानौ है तिन्हें हू यम लोक जाके लिखे नाम
तहाँ बैठि चित्रगुप्त जू की खोर खानौ है॥
आनौ है न लौटि तिन्हें बुरौ है जमानौ यहै
तानौ निज सीस जिहि ताहि पीर पानौ है॥
राना रणधीर सिंह जू कौ समझानौ सुनि
वीर सैनिकन हू बनायौ वीर बानौ है॥ 103॥

लाई री-
जाहि दिना गये हैं मोहन परदेस सखि
ताहि दिना वीर ये वियोग भरमाई री॥
सरद सिसिर हेमन्त कौ हू अन्त नाँय
कंत नहीं कंत नहीं रटन लगाई री॥
ग्रीसम वितायौ कूल कालिन्दी के वैठि 'देर'
साँवरे की वाट जोइ घोर दुख पाई री॥
आयी वरसात सखि, आयी बेर सात सखि,
आयी वरसात वर साथ नहिं लाई री॥ 104॥

बसन्त पर

मंद-मंद महकै मालती मुचकुंद कुंद,
मलय समीर है सुवासित बसन्त पै॥
मोर मोर टेरैं पीउ पीउ पिक डारन यै
रसिक रसान के वौरन बसन्त पै॥
मत्त मतवारे मधु मोहक मिलिंद मिलि
गावैं हैं धमार ताल देत हैं बसन्त पै॥
'देर' कवि श्याम श्याम हो रहे बसन्तमय
फूल रही सरसौ सु सोने सी बसंत पै॥ 105॥

घसीटत चींटी

ग्रीष्म बिताइ चले घर सौं, दूर सौं सुनि लई रेल की सीटी॥
नैन में डारि कैं धूर सी चोरन, लीनैं चुराइ कैं भूसन बींटी॥
भौंचकि होइ कै हारे सबै सुनि, उत दीखै नाहि कहूं पै टी टी॥
बिस्तर 'देर' उठाइ चलै जिमि, मत्त-गयंद घसीटत चींटी॥ 106॥

कीजिये -

ठूँस ठूँस खूब घास फूँस जैसौ खायौ अन्न
मात किये फागुन हू अब तो पसीजिये॥

इतनौ उजाड़ कियौ पाँव ही उखारि दिये
गेर्‌यौ है पहार जेसौ प्रान गये, खीजिये॥
आपसे कुपातर सौं अव लौं ना भेंट भई
झुलसौ है गात घर दूजो तजि दीजिये॥
चाहे जितै सीजिये न दीजिये आसीस भले
लीजिये विदाई और कृष्ण मुख कीजिये॥ 107॥

पानी है

बीतिगौ आपाढ़ अरु सावन हू गयौ सून
सून मानसून यहै कौन ठान ठानी है।
चमके न चपला ना उठै घटा घन घोर
ठौर ठौर मची त्राहि कहा मन मानी है।
सूख्यौ सर-नीर मानो पी गये अगस्त अंबु
शंभु की जटा हू पटा पट्ट सी सुखानी है।
दौरे चीनी तुर्क अरु ईरानी जापानी सबै
पानी पानी टेरैं तऊ पावत न पानी है॥ 108॥

सेस फुफकारैं दिग्गज दहारैं दिसि दिसि
नारद मल्हार पै हू बरसै न पानी है॥
ब्रह्मा अकुलाने चार आनन सुखानै जबै
देखे हैं कमंडल में वामे हू न पानी है॥
दीन भये देवेन्द्र सूखि गयौ नंदन वन
कलपै कामधेनु कहाँ गयौ अब पानी है॥
तृपित मृडानी पड् आनन मलीन भए
सूँड सटकाए गजराज कौं न पानी हैं॥ 109॥

सूखौ मान सरवर उड़ि गये हंस अबै
नंदी बापुरै कौ आज आवै याद नानी है॥
दोऊ नीलकंठन के कंठन गरल तेज
सुमन सु सेज तजि भूमि पै भवानी है॥
औंधौ पर्‌यौ लोटा औ सिलौटा करुं और 'देर'
सटकारें जटा शम्भु गंग हू सिधानी है॥

मूषक न सूंघै धर्‌यौ मोदक गजानन कौं,
चढ़त त्रिशूल खोजि देखैं कहाँ पानी है॥ 110॥

हिंडोले में
केसर की क्यारी में बिहारी किशोरिन संग
खेलैं दृग मींचिबो सुखेलैं एक गोले में॥
अंबर में उठी घनघोर घटा ताही समै
पटापट संभारैं बिछोह भयौ टोले में॥
खोजत बिचारी गिरिधारी तऊ पायै नाहिं
विपत की मारी चित्त चंचल न चोले में॥
कुंज कुंज धाई आई देखत कालिन्दी-कूल
डारि गलबहियां स्याम झूलत हिंडोले में॥ 111॥

पद की
पावन कियो है घर विदुर कौ कृष्ण जाइ
छिलके खाइ कदली के आपने हद की॥
ग्राह नें ग्रस्यौ जब गज कौं सरोवर बीच
तब कंज लै मुक्ति हेतु जोर सौं नद की॥
सुनि कैं पुकार भव सागर कियौ है पार
मुष्टिक प्रहारि अंत करी कंस मद की॥
तारी अहिल्या कौ आपने चरण रज सौ
माथे धरैं ऊधो रज, तब पद्‌म पद की॥ 112॥

मचले
मचलैं अवसर देख कैं, कर पकरे गोविन्द।
कहैं नंद सौं बबा हम, लैहैं यह सुभ चन्द॥
लैहैं यह सुभ चंद हमें है अति ही प्यारौ।
करैं कौन सी जुक्ति चंद नभ सौं हौ न्यारौ॥
कहैं 'देर' कविमंद चन्द धरि थारी उछले
जल बिच दियौ दिखाय पकरिबे मोहन मचलैं॥116॥

रोला छंद

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर अति छाये।
सरस सुगंधित पुष्प सुसरसत हिये सुहाये।
लसत राधिका स्याम अनोखी छवि सौं भाये।
पकरि परस्पर करन मनोहर रूप दिखाये ॥ 117॥

गिरिराज है

चाहौ जु अनन्द आपु गहिये गोविन्द पद
धन्य ब्रजभूमि सब देस सिरताज है।
कोसन चौरासी मध्य बने रमणीक कुण्ड
तिनमें नहायबैं सौं पड़ै नहिं गाज है।
जमुना समान गंगा मानसी की छटा रम्य
वाही के किए सौं याद सिद्ध होत काज है।
सुन्दर सी लता औ पतान भरी कुंज यहै
स्वामिनी सरोज सोहैं, गिरि गिरिराज है॥ 119॥

बरसाने की

नंद उपनंद मिलि पूजैं आज सैलराज
यशोमति माँगति असीस मन माने की।
कीनैं नमकीन मीठे व्यंजन अनेक भाँति
मनसा भई इन्द्र की ब्रज कौं सताने की।
कोप करि चाबुक चलायौ बलाहक पर
यत्न करि डारौ आज ब्रज कौं बहाने की।
बचै नाँय गोकुल औ रहे नाँय नंद गाम
दसा सौं कुदसा करि डारौ बरसाने की॥ 120॥

पीत पटधारी गिरधारी मन ठानी यहै
आज रमन रेती पै रास कै रचाने की॥
सोर सुनि रास को कंदर्प हिय दर्प भयो
सोची कछु मन मांय मोहन रिझाने की॥
मुरली बजाई नाम लेइ-लेइ गोपिन के
सुनि धुनि धाई भूली तन कौं सजाने की॥
करि के सिंगार आई बालाएँ बिहार हेत
नवल नवेली चलि गोपी बरसाने की॥ 121॥

बसी सुनि दारी ये पिछारी छोरि छोरि कहू
भूसन विहीन, तारी मिली ना खजाने की।
वारिन की सारी जरतारी सुकिनारीदार
वारी सजि धाई 'देर' सारी चार खाने की।
वारी भरै बारी झार-पौंछ करैं बारी माँहिं
वारिन निवारी खीर मिसरी मखाने की॥
वारि पति त्यागि अनुरागी बनी मोहन की
वारि बड़बोला औ मखोला बरसाने की ॥ 122 ॥

फंदा

निज जन्म कृतार्थ कर्यौ जो चहौ
तुम दर्श करौ प्रिय गोकुल-चंदा॥
ब्रज-धूरि कौं सीस लगाये रहौ
जमुना जल न्हाइ करौ जु अनंदा॥
रस नाहिं तजौ, रसना कौं तजौ
फल फूल व मूलहि खाय सु कंदा॥
रस स्याम कौं जा में भर्यौ सो पढ़ौ
काटत है भागवत जम के फंदा॥ 132 ॥

बंसीवारे की सेवा-

बाजी दुलरावैं बाजी अंक लै खिलावैं 'देर'
बाजी करैं अंगराग बाजी नहलावैं री॥
बाजी पौंछै अंग बाजी झंगुला धरावै दिव्य
बाजी करैं कंघी बाजी कजरा लगावैं री॥
बाजी लेइ रोरी बेंदी श्याम कै लगावैं भाल
बाजी मुख चंद्र देखि ठाड़ी मुसकावैं री॥
बाजी करै राई नोंन बाजी गहि रहै मौन
बाजी ब्रज बाम स्याम पलना झुलावैं री॥ 133 ॥

कुबरी को घर है

केसर कस्तूरी बहु सीसिन सनेह भर्यौ
चौकी धरै मुकुट औ कंग ही अगर है॥
गुदगुदे तकिया सुखद् परयंक सजे
दीप की सिखान घर जगर मगर है॥
चहूँ ओर छाजै चारु चित्र स्वर्ग गनिकनि
अंक में सितार पर्यौ ता पै एक कर है॥
बागन में महक परागन की भरि रही
सेठ कौ सदन कैंधो कूबरी को घर है॥ 134॥

स्याम स्वरूप सजे सुचि कुण्डल
क्रीट विराजत भाल पै चंदन॥
पीत ही अंबर धारै हुए तन
हाँक रहे प्रभु भक्त को स्यंदन॥
विनती है कवि जू की यही
स्वीकृत हो मेरौ अभिवंदन॥
जय सुख कंदन जय जग वंदन
कंस निकंदन देवकी नंदन॥ 135॥

बिन दाम गुलाम बनायौ हमैं
अपनायो सखे जो दया करि कैं॥
यह जन्म कृतारथ आज भयौ
अखियाँ सरसी अति पाकरि कैं॥
तऊ याद रहे यह बात सदा
बिसराऊँ नहीं वहाँ जाकरि कैं॥
जब प्रेम कियौ तो निभानो पैरै
अपराध हमार छमा करि कैं॥ 136॥

बजत नगारे आज गोकुल में द्वार द्वार
बाँसुरी मृदंग झांझ और सहनाई है॥
वेद पाठी वेद पढ़ैं कोविद् सुनावैं काव्य
गनक गनावैं ग्रह-नखत बताई है॥
मंगल कलश लावैं दधि दूब हल्दी साथ
गावैं गीत मंगल दधि कांदों मचाई है॥
धन्य धन्य मंगलहक यह जन्मोत्सव 'देर'
ब्रज सिरमौर नन्द राय कौ बधाई है॥ 140॥

गाय की दुर्दशा-

देती रही धेनु दूध मान दियौ नेह दियौ
पाछैं छोड़ि दई मग सुधि लई नांई है॥
विपत की मारी हा बिचारी भई निराधार
देवैं जितै मुख तितै मिलत पिटाई है॥
सोचि सोचि दीन दशा आपुनी कौ 'देर' कवि
तृन बिन तन की ठठरी सी बनाई है॥
ऐसी दीन दुखिया की मुखिया न पूछै बात
जानौं धरा बीच वाए क्रूर औ कसाई है॥ 142॥

मारत चोंच अचानक तोता

भूलि रह्यौ भ्रम सौं जग में-
न रह्यौ कछु ज्ञान निरन्तर सोता॥
ईश को ध्यान न कीन्हौं कबौं
चित्त लगावै न प्रेम में गोता॥
मंत्र महा न गुरू पर प्रेम
न छेम दया सतसंग हु होता॥
तौ नर को फल जानि कैं काल कौ
मारत चोंच अचानक तोता॥ 143॥

कण कण मृत्तिका को लइ कोऊ कुंभकार
जल सौं मिलाइ करि पिंड सौ बनायौ है॥
चक्र पैधरिकैं घुमाइ बाये बेर-बेर
काटि दियौ तंदु पौन सेवन करायौ है॥
सप्त दिन अनल प्रचंड में पकाइ 'देर'
रंग सौं रंग्यौ है घट रूप में सजायौ है॥
श्रम कौ सफल तब जानौ कुंभकार बन्धु
सुन्दरी वधू नैं ताहि कटि सौं लगायौ है॥ 146॥

वन की शोभा पावस में अलौकिक लख
देखो 'देर' उतै स्रोत गिरिन ते झरहैं॥
वायु के झकोरन ते झूमि रहे वृक्ष वृंद
सुंदर कदम्ब के पुहुप वहाँ पै परहैं॥
मंजु षटपद नित विहरैं सरोजन पै
झिल्ली झनकार रही दादुर टिट करहैं॥
मंद मंद गरजि अमंद बुन्द झरै मेह
पेगि-पेगि किहों किहों मोर सोर करहैं॥ 148॥

कालयवन कौ भस्म करि, दियो दर्स मुचकुन्द
कलि में अलि ये हो गये, सुन्दर बाल मुकुन्द॥ 149॥

ताम्र परकोटा परि कनक कंगूरा बने
लोह बनी बुर्ज अष्टधातु के किंवार हैं॥
चौक मणि मोतिन के, बीच बीच वाटिकनि
सिंहपौर गजपौर चंदन के द्वार हैं॥
सुंदर सरोवर में कल हंस केलि करैं॥
झूमै गज बाजि तहाँ लाखन सवार हैं॥
मुष्टिक अरिष्ट दुष्ट आदि चाटुखोर वीर
कंस के हितैपी वीर करैं जयकार हैं॥ 151॥

मोरन की पाँख धारि कच्छ औं कछौटा मारि
ग्वाल वाल संग लिए स्याम लखी नगरी॥
आयौ रंगकर्मी रजक एक वरजिवै कूँ
खाईकै प्रहार मुष्टि दशा तासु विगरी॥
दरज़ी सुधारे वस्त्र माली पहिराये हार
तोर्यौ धनुराज गज आतमा हू निकरी॥
चंदन कटोरी सुचि लेइ मिली कूवरी जो
चंदन दै स्याम-भाल दासी दसा सुधरी॥ 152॥

कंस अनाचारन सौं धरती कौ भार बढ्यौ
गौकुल औतार लियौ सव सुख छाए हैं॥
पूतना पछारी सकटासुर संहार कियौ
मारे आतताई सवै गिरि कौं उठाए हैं॥
गोपिन कै चीर हरै पूनम कौ रास रच्यौ
सवन सौं मोह छोर मथुरा सिधाये हैं॥
सुधनु कौ नष्ट करि मल्लन को मार मार
कंस कौ घसीट विसराम घाट लाए हैं॥ 153॥

कोई कहैं पूत-ना सौं निपूती कही है वाये,
कोई कहैं पू-तना पवित्र तन वारी है॥
कोई कहै पू-जहर ना नारी विषवारी ये
कोई कहैं जननी जानि या सौं निवारी है॥
कोई कहैं शिव विस, माखन आरोगे स्याम
कोई कहै वाम जानि नैना ना उघारी है।
कोई कहैं पय नहीं याहि कै उरोजन में
कोई कहैं महाकारी पूतना कूँ मारी है॥ 154॥

कंस कौ इमारौ पाइ पूतना हौ गोकुल में,
चंद्रमुखी वनि वेणी भार्‌यौं एकु फूल हैं॥
विंव से अधर दोऊ पुहुप के हार गले
चुन्नट की सारी अहो कांधे पै दुकूल है॥
आई है तिवारी मग झांकि देखे नंदलाल
भारी भार नहीं नव कमनीय तूल हैं॥
जसोदा सौं वोली एरी ऐसे ना खिलावै पूत,
सूंत डारौं याकौ जेही समै अनुकूल है॥ 155॥

कारी कारी महाकारी नाक तौ नारेल सम
वाके विकराल -दाँत भैंस के से खूँठा हैं॥
आँखें दोऊ आँधो कुआँ छाज सम दोऊ कान
हाथ पैर मेढ़क से बाकी तन ठूँठा है॥
ताड़ सम लंबी अहो कठौता सी वनी नाभि
कारे कारे केस सव तन भरभूँठा है॥
पूतना पिसाचिनी की, देह भई चंदन सी,
छाती बैठि श्याम निज, चूसत अँगूठा है॥ 156॥

बरसाने की

नामी है जलेबी जबलपुर की मावेवारी
नामी कलाकंद खास जैपुर घराने की॥
मिर्जापुर के चेहुरा रेवड़ी लखनऊ की
ख्याती है विंध्याचल के लायची के दाने की॥
गट्टा कन्नौज के सुफेनी जहानाबाद की
तुअर की दार कंपू लट्‌य्या रामदाने की॥
गोकुल की मिसरी सुपेरा मथुरा के 'देर'
माखन मधुवन कौ छाछ बरसाने की॥ 158॥

महलन में ताजम्हैल नूरन में कोहनूर
फलन में दाख और मेवा में मखाने की॥
कहै कवि 'देर' सु देविन में मंगला मुखी
तीर्थन में बांध यात्रा है बस जेलखाने की॥
जप तप व्रत पूजा पाठ सब यहीं छोड़
प्रतीक्षा बनी रहत सिनेमा में जाने की॥
पाप के छिपायबे को अनेकन उपाय हैं
जरूरत है बस रुपया बरसाने की॥ 159॥

वाँसुरी सँभारै कटि काछनी कूँ धारै कृष्ण
कीन्हीं है जुगत आज रास कै रचाने की॥
मुरली बजाने नाम लै लै गानै तान गान
मधुर सुनावै 'देर' गोपिन बुलाने की॥
सुनत ही नाम निज भूली काम धाम सबै
याद नहीं वस्त्र और भूषण सजाने की॥
नरी की कुवांरी नारी सरस आन्योरवारी
कामां की नवोढ़ा आई प्रौढ़ा बरसाने की॥ 160॥

पंद्रह अगस्त

एक अगस्त प्रशस्त भए जो
तिन पेट में उदधि समाने लगे।
अन्य अगस्त भए जो यहाँ
वह व्योम में जाइ चमकाने लगे।
तीजे अगस्त भये कवि 'देर'
वे तरुवरों नाम लिखाने लगे।
चौथे अगस्त गुलामी त्यागि कै,
वह पंद्रह अगस्त कहाने लगे॥ 165॥

'महक' आनंद कोऊ लेत रहे बेर-बेर

कोऊ भक्त हाथ माँहि सुंदर सौं गुटका है॥
कोऊ भयौ सुरती कौ, कोऊ भयौ जर्दा भक्त
कोऊ त्रिशंकुवत अंवर में लटका है॥
कोऊ भक्त हाथरसी कोऊ है बनारसी कौ
कोऊ सौ सुजन मैनपुरी पै अटका है॥
कोऊ तो तमाल पत्र लिये चूर्ण युक्त 'देर'
तरल संतुष्टि हेतु ये मुख मटका है॥169॥

हरि के कारण गोपिका, सिगरी भई उदास।
द्वापर में हरि हो गये, कलि में सूरज दास॥ 171॥

प्रेम सहित हम सबन सौं मिलि कीन्हों हरि रास।
जो सुख पायौ रास में, को करि सकै प्रकास॥ 172॥

जिलो है फतेहपुर कस्वो है जहानाबाद
ताही माँहि फूटौ एक भौंन जाय घेरौ है॥
दक्षिण दिसा कौ सु विप्र हौं तैलंग भट्ट
पूर्व पुरखान पूज्य हरि भट्ट हेरौ है॥
तिन्हीं के अन्वय में भए श्री राधारमणजू
तिनके पुत्र लक्ष्मी किशोर जी उजेरौ है॥
लक्ष्मी सुत कुल कमल दिवाकर परम
उपनाम 'देर' रत्नगर्भ नाम मेरौ है॥ 173॥

आशु कवीतो आप हैं-
शीघ्र कवी अभिराम॥
केर वेर कविता करूँ
'देर' कवी उपनाम॥ 174॥

अमरी कवरी भारगत-भ्रमरित मुखरित मंजु।
दूर करैं मेरे दुरित गौरी के पद कंजु॥ 175 ॥

बजवे वाले घंटे पर कछु विचार-

नयौ नहीं युगन सौं नाद ऐसौ करि रह्यौ
देवीन कैं करन कौं मंगलाचरण हूँ॥
कोमल, विमल, लघु वृहद्रूप मेरौ भयौ
देवन सौं व्याप्त सर्व, त्राता भरण हूँ॥
पावैं मौय म्हैल, मिल अथवा मठन बीच
किला कालेज कौ हौं तारण तरण हूँ॥
'देर' कवि मेरे लएं अधिक न पूछौ कछु
अंवरीष कै समैवारौ घंटा करण हूँ॥ 176 ॥

सुनिये श्रीमान हौं सरवत्र हूँ जहान बीच
जितैं मुरि देख तितै मेरौ ही तो तन है॥
कान्हा की कटि में छुद्र घंटिका के रूप रम्य
लटक्यौ है मंदिरन में मेरौ ही जो तन है॥
बन्ध्यौ गज बाजि अजा बैलन के गरे माँहि
सिगरी सवारियन मेरौ ही जीवन है॥
आयौ अवै जनता जनार्दन कैं हाथ 'देर'
कीन्हौ अति त्यागु अरु सेवा कौ छन है॥ 177 ॥

जदपि भयौ है निरमान मेरौ धातुन सौं
मोहे टंकोरे कोऊ साथी मेरौ तृन है
झाल और आरती टकोरा करूँ विजै घंट
और घडयाल आदि नामन कौ घन है॥
मेरे बिन भोग भगवान हु लगावै नहीं
'देर' होवै नांय आरती जे जानैं गन हैं॥
समय बताऊँ औ बचाऊँ घोर आपद् सौं
सोच लियौ मैंने त्याग सेवा हू कौ छन है॥ 178 ॥

देखि तव काव्य रचनान में अनोखी छटा

केकी वनि कविजन कुहुक मचाए हैं॥

व्यास देवरिषी वालमीकि सूर आदि 'देर'

रवि,चन्द, तारन की दमक दुराए हैं॥

सीतल सुगंध मंद वायु वहै तेरो यश

कहूं राम-भक्ति चपला सी चमकाए हैं॥

तुलसी गुसाँई भए तेरे गुण गौरव के

चहुँ ओर घुमड़ि घुमड़ि घन छाए हैं॥ 179॥

आओ चलैं उहि मंदिर अंदर

पूजन होत जहां तुलसी को॥

ध्यान धरैं सव लोग जपैं हरि-

नाम सुमाल लिये तुलसी को॥

देर 'रमायन' पाठ करैं नर-

नारि सुनैं जु रची तुलसी को॥

आज जयन्ती उन्हीं प्रभु को

सव लोग कहौ जय हो तुलसी को॥ 180॥

कृष्ण के प्रेम में अति चूर हती

उन देखी सु और उठी लहरैं॥

तत्काल भगी घर सौं अपने

जहँ पै विरहान भरी कहरैं॥

सूनी विलोकि वहाँ की निकुंज

जहाँ बहैं निर्मल नीर की नहरैं॥

कौन उपाय करूँ सखि मैं

गल हार के डार उसै विहरैं॥ 181॥

सुन्दर बने हैं पार्क सहर में रम्य अति
जहाँ के मीलन पर मील ही लखात हैं॥
उत्तर तट निर्मल देव नदी बहै 'देर'
जामें नर नारी प्रति दिन प्रात न्हात हैं॥
यहीं है वैकुण्ठ अरु दर्शनीय कैलास ये
देवन कैं दर्स किये पाप हू नसात हैं॥
तदपि हू होत यहाँ अचंभे की बात एक
कानपुर आवैं ताके कान पुर जात हैं॥ 182॥

चरण पहाड़ी पास सुन्दर चौरासी खंभ
तहाँ श्री कामेश्वर की महिमा लखात है॥
सरस दृगम्बु भर्‌यौ बन्यौं श्री विमल कुण्ड
तट पै बकुल वट नीम पारिजात हैं॥
कामां माँहि सतपुरी दाऊजी औ चारों धाम
लंका पलंका थारी, भोजन हू विख्यात है॥
परम पवित्र पंच कोसी परिक्रमा हेतु
आवै कामबन ताको, काम बन जात है॥ 183॥

हूक लागै सुहावन काऊ समै काऊ ठौर
हूक लागै पीर भरी सौतन के मन में॥
चूक लागै मीठी कहूँ औ कहूँ अधिक तिक्त
चूक जात कहूँ योगीजन एक छन में॥
टूक लागै फीको यदि रंग बदरंग होय।
टूक लागै नीको जब भूख होय तन में॥
थूक लगै असुभ यदि परौ होय सभा बीच
थूक लागै जहाँ पानी न होय टिकटन में॥ 184॥

मंजु मधुवाला के मयंक -मुख छविवारी
मीना मतवारी सी मतंग चालवारी हैं॥
कांत कामिनी सी कल कौतुक कलामय हैं
रमणी रेहाना सी जे रूप उजियारी हैं॥
कुक्कू कमनीय सी है चंचल चपल चारु
नैनन सौं नलिनी सी चलत कटारी है॥
निम्मी सी नसीम सी नरगिस निगार जैसी
सुंदरी सुरय्या सी समधिन हमारी है॥ 194॥

टूटी परतंत्रता की वेड़ी दास भारत की
है गए स्वतंत्र लोग हरखे जहान में॥
घर-घर सज गए, वाजे हू बजन लगे
झंडा फहराए गए ऊँचे आसमान में॥
हाट बाट घाटन की शोभा कहैं 'देर' कवि
दूनी दिखरात दीप ज्योति जगमगान में॥
नारे जय हिंद कैं सौं गुंजित समस्त देस,
नारिन हू गावैं जय हिन्द नई तान में॥ 197॥

घनेरे समै तैं लोग तोहि अपनाये भये
भारत स्वतंत्रता के ये वने भिखारी हैं॥
वार वार गाड़े गये औ उखाड़े गये तुम
चीरे गये फारे गये सही खूव ख्वारी है॥
तुमकूँ स्यावास देर वही वैरी सव आज
ढिंग तेरे आय करै वंदना तुमारी है॥
धन्य है तीन रंग ध्वज कोटि है प्रणाम तोहि
तुमी से भई ये आज विजय हमारी है॥ 198॥

कामिनी अरु 'क' वर्ग-

कामिनी कैं कच करैं पन्नगी कूँ मात देर
कामिनी कटाक्ष हू कुरंग चालवारे हैं ॥
कामिनी के कपोल कश्मीरी सेव लाल-लाल
कामिनी सुकण्ठ केकी कोकिला कूँ प्यारे हैं ॥
कामिनी कुच उन्नत श्रीफल सरोज सम
कामिनी के कर कचनार अनुहारे हैं ॥
कामिनी की लंक कटि छीन करै केहरि की
कामिनी की नाभि तो सुधा कैं नद नारे हैं ॥ 201 ॥

सावन सुहायो है

आए घनस्याम स्याम घन देखि अंबर में
बरखा सुहानी नव रंग दरसायौ है ॥
केकीगन नृत्य करैं-दादुर सु ताल देत
दामिनी की द्युतिन मलार मेघ गायौ है ॥
तरु सहकारन पै पिक कुहु कुहु करैं
शुक सारिका के हिय मोद उमगायौ है ॥
डारिन कदम्बन की झूलैं स्यामा स्याम 'देर'
सखियाँ झुलावैं सुख सावन सुहायौ है ॥ 203 ॥

हरियाली पेखिनार मोर मोर सोर करैं,
घूमैं भूमि पटल पै वीर की बहूटी हैं ॥
चंपा अरु वेला कहूँ केतकी चमेली फूल
गूंथैं शुभ चोटी जाकी उपमा अनूठी है ॥
अंबरु कदम्ब डारि डारि झूलैं झूला अलि
नील-पीत परिधान गोपकी वधूटी है ॥
सिंगार हार सिंगार सो सजे पुहुपन के
नीलमणि स्याम राधे, सोने की अंगूठी है ॥ 204 ॥

कन्या कुमारी तैं प्राक-ज्योतिष लौं समस्त
भारत भूमि कौ अंग कहीं तैं न न्यारौ है॥
गंगा की धारा सिंधु नद नीर सब 'देर'
सिगरे पर्वतन को राजा हिमालै प्यारौ है॥
मनसूरी समीर होवै या मरु की उष्ण वायु
पंच नदन को हू हमें अतुल सहारौ है॥
केशर की क्यारी प्यारी नंदन वन समान
प्रानन तैं प्यारौ काश्मीर जे हमारौ है॥ 205॥

मंद मंद मुसकावैं सैनन बुलावैं स्याम
बेर बेर आवैं द्वार बीरी लिए पान की॥
साजि कैं सिंगार सबै चंचला निगोड़ी नार
बरसावैं सरसावैं, समुझावैं, ज्ञान की॥
सुंदर सलौने स्याम हू तो पगे ताकैं प्रेम
बड़न कौं त्यागि करैं, बात अपमान की॥
कहा करूँ आली काऊ जतन बताओ 'देर'
दासिन की दासी बनूँ कृष्ण भगवान की॥ 206॥

आजु गणेस जयन्ति कौ उत्सव
धरैं ध्यान धनी वहाँ पै बड्डू॥
पान सुपारि सिंदूर चढ़ै कहू
अति भाव दिखावत लोकल अड्डू॥
कवि देर को भाव विचित्र अहो
न सार तुकान्त न चुंबक चड्डू॥
परसाद हमारे सु हाथ पर्‌यो
चार पदारथ के चार ही लड्डू॥ 208॥

करवीर के पुष्प विहारी लिये
कछू गोप लिये औ लई कछु गैयाँ॥
यमुना तट पै तिन्हैं राधा मिली
गोप निवार गही गलबहियाँ॥
करकैं सिंगार लली को अरी
मनुहार करी अरु लैंय बलैयाँ॥
कछु भानु कौ तेज सु भारी भयौ
तौ दुहु चलि आये कदंब की छय्याँ॥ 209॥

दधि माखन तो मोहि भावत है
खुरचन हू अति लागत मीठे॥
मठरी अरु ठौर कठोर लगै
पपची गुझिया हू सुवासित मीठे॥
मिसरी रबरी की कटोरि भरी
खुरमा औ चूरमा मुखागत मीठे॥
घनस्याम कहै सुनु बात अरी
सखरी निखरी के पदारथ मीठे॥ 210॥

सी–8 मंजु निकुंज
पृथ्वीराज रोड़ जयपुर (राज.)

■

श्री आनन्दी लाल 'आनन्द'
आनन्द निवास , नया अखाड़ा
काँकरोली जिला–राजसमन्द

जन्म लियौ नाथनग्र, श्रीजी छत्र छाया बीच,
श्री आनन्दीलाल वर्मा, प्रेमी व्रज बोली कौ।
करिकैं पढ़ाई प्राथमिक पाठशाला बीच,
सेवक समाज कौ है मौजी मस्त टोली कौ।
अखाड़े कौ मल्ल रहौ, फुटबॉल कौ खिलारी,
पैंगा नाम सौं प्रसिद्ध, यार हमजोली कौ।
रसिया अनौखौ देस कौ सुतंत्रता सैनानी,
सबमें समायौ है आनन्द काँकरोली कौ॥

परिचै

नाम	श्री आनन्दी लाल गोरवा 'आनन्द'
पिता	श्री मोडी लाल गोरवा
माता	श्रीमती चन्दा वाई
पत्नि	श्रीमती सुन्दरवाई
जनम तिथि	18.9.1922
जनम स्थल	नाथद्वारा . जिला राजसमन्द
शिक्षा	प्राथमिक
व्यवसाय	(1) श्री नाथ मन्दिर में सेवा (2) प्राइवेट बस कंट्रोलर पद पर सेवा (3) समाज एवं राष्ट्र सेवा (4) दुकानदारी (5) आध्यात्मिक जीवनयापन
रचना	हिन्दी, राजस्थानी अरु ब्रजभाषा में फुटकर रचना (अप्रकासित)
विशेष	कुछ ब्रजभाषा के छन्द साहित्य मण्डल नाथ द्वारा अरु राज. ब्रजभाषा अकादमी जयपुर की त्रैमासिक पत्रिका 'ब्रजशतदल'में प्रकासित भई ।
ठिकानौ –	श्री आनन्दी लाल गोरवा 'आनन्द' आनन्द–निवास नया अखाड़ा, कॉंकरोली– जिला–राजसमन्द (रांज.)

❑

लोक कवि आनंदीलाल

— श्री गोपालप्रसाद मुद्‌गल

लोक साहित्य की जड जन-जन के मनन तक फैली हॉय। याही सौं लोक साहित्य, श्रोता अरु पाठकन कूँ अपनी ओर आकर्सित करै। लोक साहित्य की ओर लोग अपने आप खिंचे चले आवैं। मन सौं आवैं। लोक साहित्य में रच पच जाएँ। लोक साहित्य कूँ अपने होठन पै उतारैं। अपने जीवन में उतारैं। जीवन के ताँई रस लैं। ऐसे साहित्य के सर्जक लोक में पुजैं। बिनके हर आखर जन जन के गले के हार बन जावैं। ऐसे ही लोक साहित्य के सर्जक हैं कांकरौली के आनंदीलाल वर्मा आनंद।

रंग गोरौ। कद ठिगनौ। पर गोल मोल। ऊँचौ ललाट। भाल पै गोल-गोल रोरी कौ बिन्दा। सिर पै लम्बे-लम्बे बाल। दाढ़ी हु अच्छी खासी सफेद। ऐसौ लगै रविन्द्रनाथ टैगौर की अनुकृति हौं। भारतीय वेस भूषा-धोती-कुरता, गरे में पीरौ रामनाम कौ दुपट्टा, तापै भजन करबे की माला अलगई चमकते भए मौन रूप सौं कहै-

जल देखे क्रिया बढ़ै, माला देखे राम।
शस्त्र देख तामस बढ़ै, तिरिया देखे काम॥

हाथ में लकुटिया लिए, ठक्क-ठक्क करते भए मस्त चाल सौं आते भए अँधेरे में हू पहचान लिए जाएँ कै श्री आंनद लाल आनंद के बोलन सौं आनंद लुटाते चले आ रहे हैं। नर्ववेश्वर महादेव पै भव्य मूर्ति अलगई पहचान में आ जाय।

जीवन ज्यादातर सोच फिकर के गरम झौंकान में तप-तप कैं कंचन हैं गयौ है। पेट के ताँई न जानैं कहाँ-कहाँ भटकनौ परौ। रोजी-रोटी के ताँई न जानैं कितेक घर-घाट झाँके। इन सब अनुभवन कूँ बटोर कैं आनंदीलाल लोक कवि बन गए। ' भक्ति भावना ' में लीन कोरे धर्म तकई सीमित नाँय रहे। कृष्ण की उपासना में रचपचकें लिखवे

वारे समाज के उत्सव-पर्व-त्यौहारन की अच्छी खासी तस्वीर खींचते रहे। पर सब सौं बढ़कैं समाज के सुख-दुख, हर्ष-विषाद आकर्सन-विकर्सन के ताने बानेन सौं लोक साहित्य कौ सृजन करते रहे। आम आदमी की तकलीफन कूँ अपनी कलम सौं उभारते रहे।

आम आदमी महँगाई की मार सौं पीड़ित है। सुरसा के मुँह की नाँई मँहगाई बढ़ रही है। लोगन कौ जीवन दूभर है गयौ है। पहलैं लोग चटनी और प्याज सौं रोटी खा लैंते पर अब तौ प्याज के भाव आसमान कूँ चढ़ गए हैं। गरीब लोग कैसैं जिएँ। का खावें, का पीवें ? दूसरी और आजाद भारत में राजान की जगह कर्णधारन नैं लै लई हैं। मनमानी करबौ अरु घर भरबौ जिनकौ लक्ष्य बन गयौ होय वे कैसैं सेवा कर सकैं। कैसें गरिबन के दुख-दर्द कूँ समझ सकैं। जिन्नैं उद्‌घाटन, भापन अरु चाटन सौं फुरसत नाएँ वे कैसें गरीवन की राम-कहानी सुन सकैं। श्री आनंदीलाल नैं ऐसे कर्णधारन की जो कहैं कछू हैं अरु करैं कछू हैं बिनकी बातन कूँ हू जनता चौं सुनैगी -

बिजली न मिलै, नहिं पानी जुरै,
कठिनाई है गैस जुटावन की।
महँगाई सौं त्रस्त भई जनता,
भरमार भई है सिंगारन की।
उद्‌घाटन, भासन, चाटन, में ,
नित भीड़ बढ़ी मेहमानन की।
गुमराह करैं नहिं नैंकु डरैं,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

आनंदी लाल हृदय सम्राटन की कदर करैं पर ढौंगीन सौं खुद बचैं, ओरन कूँ सीख दैं कै बहरुपियान सौं बचियौं एक सवैया में दो टूक बात कही है -

पापी पुराने मिले जुर बैठिकैं,
गाल बजाबैं करै, धुन की।
कुल वेद पुरान बिसार दिए,
नहिं सीख सुहाबै बिनैं गुन की।
गढिकैं नई बातन कूँ नित ही,
नित राह बताव्रत नरकन की।
बचियौं इन ढौंगिन सौं आनँद,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

श्री आनंदी लाल ज्यादा पढ़े-लिखे नाहैं पर देसाटन करौ है। सद् संगत करी है। लोक समाज के संग ऐतिहासिक पक्ष हू बिनके मन माथे में हैं। लोगन कूँ समझाइवे के ताँईं ऐतिहासिक विवरन प्रस्तुत करौ है। जन-जन की आँख खोलवे के ताँईं घोटाले करबे वारेन कूँ मन भरकें खूबखूब सुनाई है। एक कवित्त में ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के माध्यम सौं कही है-

नहिं पांडु के पुत्रन भू जे भई,
नहिं पृथ्वीराज चौहानन की।
नहिं दिल्ली भई अंगरेजन की,
नहिं शंहशाह मुगलीनन की।
मगरुरी तजैं दिन चार जे राज,
है तोर मरोर कनूनन की।
बहकाय रहे नित भोली प्रजा,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

बिनकौ कहबौ हैं कै काम करिबे वारे नेता सबके सिर माथै पै रहैं। बिनकूँ नए गुदलस्ता के फूलन की नाँईं अपनी मेज पै सजाय कैं राखैं। पर जो अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे रहैं बिनकूँ उतरे भए फूल मान कैं कूड़े दान में फेंक दियौ जाए। बिन्नैं चुनाव लड़बे वारेन कूँ कबीर की नाँईं खरी-खरी सुनाई है-

कोऊ हाथ कौ पंजा दिखावत है,
कोऊ छाप दिखावत मुरगिन की।
कोऊ पद्म कौ पुष्प बताय रहे,
कोऊ हँसिया धार कटारिन की।
कोऊ घोड़ा चढ़े, कोऊ हाथिन पै,
कोई देत दुहाई किसानन की।
सब कुर्सिन काजैं दीन बनैं ,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी।

जो जनता की नाँय सुनैं, बिनकी जनता हू नाँय सुनैं। बिन्नैं ऐसी पटकनी लगावै कै छटी कौ दूध याद आ जावै। ऐसी खरी-खरी कहबे वारौ वुही है सकै जो देस के हित में लड़ौ मरौ है, पचौ-खपौ है। सुतंत्रता संग्राम में, लोटा, सोटा और लँगोटा बाँधकें

पिल परौ है। जेल की हवा खाई है। आजादी लाइबे के ताँई तबहू प्रेरना के संग डंका की चोट अपनी बात कही है-

ऐसे विचारन काम चलै नहिं,
जान हथेली लै आगैं बढ़ौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाष-जवाहर,
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहौ अंगरेजन सौं,
अरे हिंद के बाँकुरे वीर अड़ौ।
जब लौं न स्वराज मिलै हमकूँ
तब लौं तुम देस के ताहिं लड़ौ।

वे सत्य, अहिंसा, त्याग के समर्थक रहे हैं पर बिनके ओजस्वी स्वर क्रान्तिकारी हैं। गरम दल में बिनकौ पूरौ बिसवास रह्यौ है। ताकत बटोर कैं अपनौ प्रचंड रूप दिखाइवे के हिमायती रहे हैं। तबई तौ बिन्नैं ललकार भरे सब्दन में कही-

अँगरेजन सौं दिनरात लड़ें,
जे सारी बिलात हिलाइंगे हम।
कितनीहू मुसीबत आवैं भले,
पर जान सौं जान लड़ाइंगे हम।
जो दिन-रात सताय रहे,
जग सौं तिनकूँ ही मिटाइंगे हम।
अब नाम ही बाकौ हटाइंगे देस सौं,
बम्ब पै बम्ब गिराइंगे हम॥

जो लोककवि जनता सौं जुड़ौ रह्यौ है जानैं अपनी कलम सौं क्रान्ति के ताँई आग उगली है। जानैं आजादी के ताँई पीड़ा पै पीड़ा सही है बु आजादी की मखौल उड़ते देखकैं चौं नहीं विचलित होयगौ। गरीबन की दुर्दसा देखकैं चौं नहीं रोयगौ। राज बदल गयौ, ताज बदल गयौ, पर गरीबन कौ भाग नहीं बदलौ। आनंद जी समस्यापूर्तीन में हू या बात कूँ कहबे ते नाँय चूके। चाहै प्रभु सौं ही पुकार करी है-

मातु के कपूत लाल, नेता बन डोलैं फिरैं,
चामरी गरीबन की खैंच चीर डारी है।
कैसे मस्त बने सौंड, करैं हैं हवाला कांड,
भाँड सी भुसाई करैं मंच भ्रष्टाचारी है।
चीर-चीर देखौ आज देस कूँ ही चीर रहे,
कौन सुनै कासौं कहैं विपदा हमारी है।
आंनद पुकार कहै, अब तौ बचाऔ नाथ,
लाज कौ बचैया तू ही तेरी बलिहारी है।

समाज की विसंगति हू कवि सौं नाँय देखी जाय रही। महात्मा गाँधी नें रामराज्य की कल्पना करी। सबकूँ रोटी, कपड़ा अरु मकान उपलब्ध करायवे की बात करी है। पर साँचौ कछु हैगौ कछु खोदौ पहार निकसी चुहिया। ज्यों ज्यों समै गुजरतौ गयौ हालात बदतर हौंते गए। वर्ग भेद बढ़तौ गयौ। जातिवाद कौ नारौ सिर पै चढ़ कै बोलतौ गयौ। गरीब-अमीर की खाई चौड़ी हौंती गई । श्री आनंदीलाल के सब्दन में ही विसमता कौ चित्र देखौ-

दूध बिना पूत उतै, गोद में विलाप करै,
इत मदपान मतवारौ भयौ आदमी।
सुनत ना उतै कोऊ आह हू गरीबन की,
इतै हाँ हजूर की हजूरी करै आदमी।
भूखौ अरु प्यासौ है किसान मजदूर उतै,
इत करै हकिम हकूमत सौं आदमी।
लाले परे आनंद के दिन-रात रोने उतै,
का सौं कहैं , कौन सुनै, बहरौ भयौ आदमी।

समाज के ऐसे चित्र कूँ कोऊ लोक कवि ही उतार सकै। समाज के निरधन वर्ग के हिमायती, लोक कवि आंनदी लाल तवई तौ जन जीवन सौं जुड़कै विसमता कूँ दूर करबे कूँ जागरन कौ संख फूंक रहे हैं।

पांडेय मोहल्ला
डीग, भरतपुर

□

पिल परौ है। जेल की हवा खाई है। आजादी लाइबे के ताँई तबहू प्रेरना के संग डंका की चोट अपनी बात कही है-

ऐसे विचारन काम चलै नहिं,
जान हथेली लै आगैं बढ़ौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाष-जवाहर,
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहौ अंगरेजन सौं,
अरे हिंद के बाँकुरे वीर अड़ौ।
जब लौं न स्वराज मिलै हमकूँ
तब लौं तुम देस के ताहिं लड़ौ।

वे सत्य, अहिंसा, त्याग के समर्थक रहे हैं पर बिनके ओजस्वी स्वर क्रान्तिकारी हैं। गरम दल में बिनकौ पूरौ बिसवास रह्यौ है। ताकत बटोर कैं अपनौ प्रचंड रूप दिखाइवे के हिमायती रहे हैं। तबई तौ बिन्नैं ललकार भरे सब्दन में कही-

अँगरेजन सौं दिनरात लड़ैं,
जे सारी बिलात हिलाइंगे हम।
कितनीहू मुसीबत आवैं भले,
पर जान सौं जान लड़ाइंगे हम।
जो दिन-रात सताय रहे,
जग सौं तिनकूँ ही मिटाइंगे हम।
अब नाम ही बाकौ हटाइंगे देस सौं,
बम्ब पै बम्ब गिराइंगे हम॥

जो लोककवि जनता सौं जुड़ौ रह्यौ है जानैं अपनी कलम सौं क्रान्ति के ताँई आग उगली है। जानैं आजादी के ताँई पीड़ा पै पीड़ा सही है बु आजादी की मखौल उड़ते देखकैं चौं नहीं विचलित होयगौ। गरीबन की दुर्दसा देखकैं चौं नहीं रोयगौ। राज बदल गयौ, ताज बदल गयौ, पर गरीबन कौ भाग नहीं बदलौ। आनंद जी समस्यापूर्तीन में हू या बात कूँ कहबे ते नाँय चूके। चाहै प्रभु सौं ही पुकार करी है-

मातु के कपूत लाल, नेता बन डोलैं फिरैं,
चामरी गरीबन की खैंच चीर डारी है।
कैसे मस्त बने साँड, करैं हैं हवाला कांड,
भाँड सौ भुसाई करैं मंच भ्रष्टाचारी है।
चीर-चीर देखौ आज देस कूँ ही चोर रहे,
कौन सुनै कासौं कहैं विपदा हमारी है।
आंनद पुकार कहैं, अब तौ बचाऔ नाथ,
लाज कौ बचैया तू ही तेरी बलिहारी है।

समाज की विसंगति हू कवि सौं नाँय देखी जाय रही। महात्मा गाँधी नैं रामराज्य की कल्पना करी। सबकूँ रोटी, कपड़ा अरु मकान उपलब्ध करायबे की बात करी हैं। पर साँचौ कछु हैगौ कछु खोदौ पहार निकसी चुहिया। ज्यों ज्यों समै गुजरतौ गयौ हालात बदतर हौंते गए। वर्ग भेद बढ़तौ गयौ। जातिवाद कौ नारौ सिर पै चढ़ कै बोलतौ गयौ। गरीब-अमीर की खाई चौड़ी हौंती गई। श्री आनंदीलाल के सब्दन में ही विसमता कौ चित्र देखौ-

दूध बिना पूत उतै, गोद में विलाप करै,
इत मदपान मतवारौ भयौ आदमी।
सुनत ना उतै कोऊ आह हू गरीबन की,
इतै हाँ हजूर की हजूरी करै आदमी।
भूखौ अरु प्यासौ है किसान मजदूर उतै,
इत करै हकिम हकूमत सौं आदमी।
लाले परे आनंद के दिन-रात रोने उतै,
का सौं कहैं , कौन सुनै, बहरौ भयौ आदमी।

समाज के ऐसे चित्र कूँ कोऊ लोक कवि ही उतार सकै। समाज के निरधन वर्ग के हिमायती, लोक कवि आंनदी लाल तबई तौ जन जीवन सौं जुड़कैं विसमता कूँ दूर करबे कूँ जागरन कौ संख फूंक रहे हैं।

पांड्य मौहल्ला
डीग, भरतपुर

❐

श्री आनन्दीलाल वर्मा के ताँई शुभकामना

– श्री नरेन्दपाल सिंह चौधरी

प्रभु श्री द्वारकाधीशजी की पुन्य भूमि काँकरोली नगरी प्रकृति की नैसर्गिक सौन्दर्य सौं अभिभूत करिवे वारी, ब्रज साहित्य कारन की समृद्ध परम्परान की वाहक त्रिवेणी कही जावे वारी जा स्थली के परम् विद्वान प्रिय कविवर श्री आनन्दी लाल जी वर्मा की प्रभावी अरु प्रेरनास्पद रचनान कौ संकलन प्रकासित करिबे के समाचारन सौं मोय अतीव प्रसन्नता भई।

आनन्द कन्द नन्दनवन भगवान श्रीनाथजी की असीम कृपा सौं जे पुस्तक साहित्य जगत की एक आकास गंगा बनिकैं जीवन–पथ कूँ प्रकासित करैगी।

महकैगी कृति आपकी गुलाब बनकैं।
पुलकित होगौ जन–जन, याए पढ़कैं।

सुतंत्रता संग्राम के समर्पित सैनानी अरु मेरे अभिन्न –स्नेही भैया श्री आनन्दी लाल वर्मा की काव्य कृति के प्रकासन के सुअवसर पै मेरी ओर सौं हार्दिक बधाई अरु अनेकानेक मंगल कामना समर्पित करूँ हूँ।

प्रभु श्रीनाथ जी इनके जीवन कूँ मंगलमय करैं।

स्वतन्त्रता सैनानी
नाथद्वारा (राज.)

❑

आनन्दी लाल वर्मा 'आनन्द' बहुआयामी व्यक्तित्व

— श्री फतहलाल गुर्जर

होनहार बिरवान के होत चीकने पात वारी कहावत कूँ चरितार्थ करिबे वारे श्री आनन्दीलाल वर्मा 'आनन्द कौ जन्म श्रीनाथ नगर (नाथद्वारा) में दि०28.5.1922 कूँ भयौ। आपके पिता श्री मोडीलाल जी गौरवा श्रीनाथ के मन्दिर माँहिं सेवक हते। माता श्रीमती चन्दा बाई धार्मिक विचारन की महिला हती, जिन्नैं अपने पुत्र कूँ भौत लाड़–प्यार सौ सरच्छन दियौ। बचपन सौ अपने मामा श्री गोपीलाल जी झपटिया के साथ रहिबे लगे। बिनके साहित्यिक वातावरन सौ 'आनन्द' के जीवन मे व्रजभाषा के संस्कार जमिबे लगे।

श्री गोपीलाल जी झपटिया कवि श्री घनश्यामलाल के प्रशंसक हे। कवि घनश्याम जी कौ प्रकासित 'घनश्याम सागर' ग्रन्थ की रचनान की पाडुलिपि श्री गोपीलालजी सौं ही मिली।

आनन्दीलाल जी की प्रारम्भिक शिक्षा नाथद्वारा के सस्कृत विद्यालय सौ प्रारम्भ भई। या विद्यालय में हर शनिवार कूँ अन्त्याच्छरी प्रतियोगिता हौमती, जामे 'आनन्द' तुकवन्दी करिकै छोटी–छोटी कवितान सौं अव्वल आते। तुकबन्दी सौ कविता करिबे की इनकी आदत सी है गई।

खेलिबे मे इनकौ फुटवाल खेल अति प्रिय हतौ। ठिगने कद के आनन्द अपने लम्बी टाँगन वारे सहपाठी खिलाड़ीन की टाँगन सौ गप्प ते फुटवाल की गेद के सग–संग निकर जामते। इनकी दौरिबे की गति की प्रशंसा सबन के मुख सौ सुनी जामती। संगी साथी प्रसन्न हौमते अरु आनन्दी लाल 'आनन्द' कूँ 'पैगा' उपनाम सौ सम्बोधित करते भये पुकारते। याई गुण सौ कई विद्यार्थी इनके मित्र बनि गए।

दिनन के संग–संग बचपन खेल–खेल में निकर गयौ आनन्दीलाल 'आनन्द' आखिर यौवन की देहरीज ताँई आय पौंचे। बा बिरियाँ ज्वानन कूँ अखारेन पै कसरत–कुस्तीन कौ भौत चाव हतौ। खाइवे–पीयबे कूँ मन्दिर कौ माल अरु खिरकन कौ दूध मिल जामतौ। दंड–बैठक पेलवौ अरु कुस्ती लरिबे की आदत नैं शरीर सौष्ठव माँहि खूब मदद करी।

या समैं देस में आजादी की लराई कौ माहौल हतौ। बापू महात्मा गांधी जवाहर लाल नेहरु अरु सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व माँहि भारी संख्या में आजादी के लड़ैया सुतंत्रता प्राप्ति कौ बिगुल बजामते घूम रहे। राष्ट्रीय चेतना की अलख मेवाड़ में हू श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व में बिजौलिया छेत्र सौं आरम्भ है चुकी हती। या देस–भक्ति आन्दोलन माँहि नाथद्वारा, काँकरोली छेत्र के ज्वानन नें हू भाग लियौ। गामन–गामन में मेवाड़–प्रजा मण्डल के नवयुवक नेतान के कार्यक्रमन सौं श्री आनन्दी लाल 'आनन्द' जुरि गए। इनके नाम कौ गोरी सरकार नैं गिरफ्तारी वारंट निकार दियौ। 'आनन्द' नाथद्वारा सौं गुप्त रूप में भागते भए बम्बई पौच गये। बम्बई में बिन दिनन श्री दाम 'सुदाम' स्वीमिंग कोच की सेवा दे रहे हते। आनन्द नैं बिनके संग रहते भये कई फुटकर रचना लिख डारीं। श्री दाम सुदाम ब्रजभाषा के मँजे मँजाए साहित्यकार हते। बिन्नैं आनन्द कूँ छन्दन कौ ज्ञान करायौ। आनन्द बम्बई सौं पुनः अपने नाथद्वारा कूँ आय गए। अँग्रेजी हकूमत नैं इनकूँ पकरिकैं जेल में डार दियौ।

सुतंत्रता प्राप्ति के पश्चात श्री आनन्दी लाल 'आनन्द' गृहस्थी चलाइबे के काजैं प्राइवेट बस सेवा कार्य कूँ अपनाय कैं कंट्रोलर पद पै हू कार्य करिबे लगे। या तरियाँ मस्ती कौ जीवन बिताते भये 'खाइबे–पीयबे अरु मौज मनामते श्री आनन्दी लाल 'आनन्द' बसन में घूमते। गामन–गामन में सेवा दैबे लगे। कछु दिन श्री चार भुजा माँहि रहे अरु वांचकें समाज सेवा में जुट गए। इन्नैं वहाँ पशुन के पानी पियबे की असुविधा देखी। लोगन सौं आर्थिक सहयोग लैकैं एक प्याऊ कौ निर्माण करायौ। काँकरोली माँहि सार्वजनिक समसान में हू आपनैं सुधार सहयोग करौ। गाँधी पार्क कूँ सार्वजनिक स्थल बनाइबे के काजैं नगर विकास समिति हू में सदस्य रूप सौं कार्य करौ।

गृहस्थी चलाइवे के काजैं अपनी सहभागिनी धर्मपत्नि सुन्दर बाई के संग मुखर्जी चौराहे पै इक छोटी सी दुकान चलाई। या तरियाँ अपने जीवन कूँ विभिन्न रंगन सौं सजामते श्री आनन्दी लाल 'आनन्द' आगे कूँ बढते रहे। इनकौ एक छन्द आजहू प्राइवेट वसन के इंजनन पै लिखौ भयौ देखौ जाय सकैं। श्लेष अर्थ सौ लिखे या छन्द कूँ देखौ–

म्हे प्रतीक हूँ शक्ति कौ, मोपै धरौ ना पाँव।
आनन्द सौं कर यात्रा, पौंचौ अपने गांव॥

या छन्द माँहि आनन्द सौं कर यात्रा' के श्लेष अर्थ के चमत्कार नैं द्विअर्थी भाव सौं विसेसता भर दई है। सन 1985 ई. मे श्री आनन्दीलाल आनन्द नै अपनी संतान की प्रसन्नता के काजैं अपनौ नवनिर्मित गृह 'आनंद निवास' के सामईं नवरात्री माँहि 'गरबा–रास' कौ संकल्प लियौ। माताजी की आराधना–उत्सव माँहि इन्नैं जे. के. इंडस्ट्री में कार्य करिवे आये भये गुजरातीन कूँ जोरिकै 'आनन्द निवास के' पास आम रोड पै नवरात्री में 'गरबा–रास' की स्थापना कर दीनी। गुजराती गामते–बजामते अरु वैयार बानीन कूँ नचाते आए। गुजरात माँहि 'गरबा' नृत्य मे एक छिद्र वारे मिट्टी के पात्र माँहि माता के नाम कौ दीयौ जराकै सिर पै लैकै नाचवे को रिवाज चलौ करै। श्री आनन्दीलाल 'आनन्द' नें हू वाही परम्परा कूँ काँकरोली में चालू करौ। साहित्य प्रेमी होइवे ते इन्नै अपने साहित्यकार मित्रन कूँ या गरबा–रास सूँ जौरौ। श्री दुर्गाशंकर 'मधु', किशन धीरज', ओम यादव, अरु माधव लाल हाडा के संग स्वयं लेखक हू आनन्दीलाल़ 'आनन्द' के या आध्यात्मिक आनन्द सौ जुर गए।

दिनन के बदलाव सौ दो–तीन बरसन बाद इनके गरबान मे गुजराती भैयान नै भाग लैवे सौ मना कर दई। माँ की किरपा सौ लेखक के संग, मधु माधव अरु स्वय आनन्द नै या गरबा रास कूँ व्यवस्थित करते भये चलाइवे लगे। नये गरबा गीत लिखे जायवे लगे। संगी साथीन के द्वारा ही गायके साज–बाजन सग कार्यक्रम होंमते रहे।

सन 1987 ई माँहि श्री आनन्दी लाल 'आनन्द' के एक मित्र श्री शिवराज सिंह राजपूत (सिन्धी) नैं शिव मन्दिर बनाइकैं 'श्री द्वारकेश आनन्द सत्सग मण्डल' कूँ सेवार्थ सौंप दियौ। यहाँ नर्वदेश्वर महादेव के मन्दिर स्थान मुखर्जी चौराहे पै श्री आनन्दी लाल वर्मा 'आनन्द' कूँ ध्यानावस्था में माला घुमांमते वैठे देखि सकै।

या प्रकार, मन मौजी श्री आनन्दीलाल वर्मा 'आनन्द' नैं जीवन की हर मुश्किलन सौं लड़वौ सीख लियौ है। वर्तमान सनै में इनकी उम्र 75 बरस है गई, पर मुख पै प्रसन्नता बिराजी रहै। या उम्र नें लोगन की याददास्त खो जायौ करै, किन्तु आनन्दीलाल 'आनन्द की स्मृति आजलौं पूर्ववत है। बचपन की क्रीडान कूँ यथावत बरनन करते भये श्री आनन्द अजहू ग्यान लगे हैं। इनके संग श्री नर्वदेश्वर महादेव के पुजारी पं. कन्हैयालाल जोशी हू रहै। एक और एक ग्यारह दिखाई परैं।

जाट गली, कांकरौली
संस्थापक/संचालक
श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद्

☐

श्री आनन्दी लाल वर्मा 'आनन्द' सौं साक्षात्कार

– श्री दुर्गाशंकर 'मधु'

1. आपनैं सबसौं पैलैं कब लिखबौ प्रारम्भ करौ ?

उत्तर जब मैं हाई स्कूल (गोवर्धन हाई स्कूल) में पढतौ वा बिरियाँ मेरी बारह बरस की उमर रही होगी। तब अन्त्याच्छरी के कार्यक्रमन माँहि तुकबन्दी करबे लगौ।

2. सबसौं पैलैं अपनैं कौनसी भासा माँहि रचना करी हती?

उत्तर सबसौ पैलै मैंनै हिन्दी भासा मे कविता लिखी। अंगरेजी बरन माला कूँ लैकैं रचना या तरियाँ लिखी–

लेसन पाठ और प्यारा डीयर
सीखो लर्न व सुनलो हीयर
सूरज सन चाँद है मून
स्काई आकाश है जल्दी सून
हेवन स्वर्ग सितारा स्टार
हेल नरक से बचना यार
डे है दिन रात है नाइट
डार्क अँधेरा, रोशनी लाइट
व्यवस्था ऑर्डर हड़ताल स्ट्राइक
भाषण स्पीच, पसन्द है लाइक

3. आपकूँ सबसौं पैलें लिखबे की प्रेरना कौन सौं मिली?

उत्तर मेरे प्रथम गुरु मेरे मामाजी श्री गोपीलाल जी झापटिया हते। बिन्नैं मोय श्री घनश्याम प्यारे के कवित्त सुनाय कैं मेरी जिग्यासा बढ़ाई। मेरे मामा जी हू लिखते। मेरे दूसरे गुरु स्व. श्री दाम 'सुदाम' वर्मा हते जिन्नैं मोय बम्बई में संग रखिकैं लिखबे कौ चस्का लगायौ। ब्रजभाषा माँहि मेरी सोई भयी कविता शक्ति कूँ जाग्रत करिबे की प्रेरना अनोखा, मधु नैं दई। इन मित्रन के संग–संग ब्रजभाषा अकादमी द्वारा आयोज्य पाटोत्सव कार्यक्रमन में साहित्य मण्डल, नाथद्वारा माँहि समस्या पूर्ति करिकैं लै जामतौ अरु मंचते सुनामतौ।

4. आपने किन–किन भासा माँहि लिखबे को काम करौ ?

उत्तर मैंने हिन्दी ब्रज अरु राजस्थानी तीन भाषान माँहि कवितान कूँ लिखौ। अधिक रचनाएँ हिन्दी अरु ब्रज भासा में लिखी भई हैं।

5. आप किन–किन साहित्यिक संस्थान सौं जुरे?

उत्तर सन 1980 ई. सौं पहिले मैं स्वतन्त्र लिखबे कौ कार्य करतौ हतौ। पीछे श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद सौं जुरिकैं, कार्यक्रमन माँहि जाबे लगौ। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर की स्थापना के पीछैं मेरौ सम्पर्क साहित्य मण्डल सौं भयौ। मेरी सदस्यता केवल श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद्, काँकरोली की है, अन्य काऊ संस्था कौ मैं सदस्य नाँय हूँ।

6. राजस्थान माँहि ब्रजभाषा की स्थिति पै आपके का विचार है?

उत्तर मैं ब्रजवासी हूँ अरु ब्रजभाषा सौं मेरौ माँ–बेटा कौ सौ सम्बन्ध है। हम ब्रजवासीन के परिवार माँहि ब्रजभाषा ही बोली जाय। राजस्थान की बात पै मैं तो यही कहूँगौ कै ब्रजभाषा आज सौं नाँय हजारन बरसन पैलें सौं साहित्य की भासा रही है। सब छात्रन माँहि याकौ प्रचार–प्रसार है रहौ है।

7. आप या ब्रजभाषा की समृद्धि के ताँई नवयुवकन कूँ का संदेश देवौ चाहौ?

उत्तर नवयुवकन सूँ मेरौ कहबौ है कै बे अपनी मातृभाषा सौं नेह बनाये रखैं। याही में हम सबकौ भलौ है।

8. राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर नैं आपकौ सम्मान करौ, आप कूँ कैसौ लगौ?

उत्तर राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर नैं मोय सम्मान दियौ। मै आभारी हूँ। *मै सम्मान के योग्य नाँय हतौ। मोमें एकहू गुन नाँय सम्मान* पायवे के ताँईं जे सम्मान विन महानुभावन को है जिन्नैं मोय या सम्मान के योग्य समझौ। या विसै में नीचे लिखी पंक्तीन में मेरे भाव प्रकट भये सो दृष्टव्य हैं–

जानूँ ना कवित्त, पहचानूँ ना साहित्यभाव,
संगति सुजाननकी, नेह राधा रानी कौ।
अनोखा आनन्द कांकरोली द्वारकेश जू कौ,
भयौ जे सम्मान मधु राय सागर पानी को॥
मोहनलाल मधुकर अरु मुद्‌गल को,
मान जे अकादमी, जैपुर राजधानी कौ,
हमारौ सम्मान का, सम्मान ब्रज मंडल कौ,
ब्रजवासी, ब्रजराज अरु ब्रजबानी कौ॥

मेरौ तौ कहवौ जि है कै सम्मान गुनन कौ होय। मेरे सम्मान कौ श्रेय मेरे मित्रन कूँ है जिन्नै मोय अपनाय कै या जोग बनाय दियौ। या सम्मान के सहभागी आनन्द सत्संग मंडल के सखा हैं, जिनके विसै में मैंनें लिखौ है–

माधव मिले मिटे सब रोग।
आनंद, अनोखा, मधु संजोग॥

❑

आनन्दी लाल वर्मा : एक नैसर्गि
लोक क

- श्री मनोहर कोठ

नाथद्वारा नगर वस्तुतः प्रारम्भ सौं ही ब्रजधाम के रूप में मान्य रहौ है के कन–कन माँहि अनायास ब्रज की माटी की सौंधी सुगन्ध के संग ब्रजमाधुरी सहज दरसन है जाएँ। निस्संदेह या की सभ्यता अरु संस्कृति पै ब्रजमंडल की स छाप है। बाकी प्रेरक व मधुर अनुगूंज पग–पग पै सुनाई दै जाए।

ब्रजवासी परिवारन के स्वतन्त्र अस्तित्त्व अरु बिनकी बिलग पहचान कौ मुख्यतः जेही रहस्य है इन ब्रजवासी परिवारन के कुछेक पूर्वज प्रभु श्री नाथजी के बिग्रह के संग जतीपुरा सौं नाथद्वारा आये हते। आज लौं बे अपने कूँ खानदानी ब्रजवासी कहिबे में बिसेस गौरव कौ अनुभव करे हैं। शनैः–शनैः और हू लोग आय गये। या तरियाँ स्थानीय ब्रजबासी समाज हू कौ बिस्तार है गयौ। मेवाड़ रियासत के युग माँहि नाथद्वारा के सम्प्रति धार्मिक ठिकानेन कौ सासन महाराज श्री गौस्वामी तिलकायत के पास सुरच्छित हतौ, यामें काऊ अन्य सत्ता कौ किचिंत हू हस्तक्षेत्र करबे कौ अधिकार नाँय हतौ।

ऐसी परिस्थितीन माँहि गोस्वामी तिलकायत श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज श्री व बिनके मेधावी पुत्र अरु कीर्ति पुरुषन में गोस्वामी दामोदरलाल जी महाराज श्री के कार्यकलापन कौ सहज स्मरन है आवै। सच तौ जि है कै गोस्वामी श्री दामोदरलालजी महाराज वर्तमान नाथद्वारा नगर के निर्माता ही नाँय बरन शिल्पी हू हते। वा जुग माँहि ब्रजवासी परिवारन के बालकन में अखारेबाजी, कुस्तीदंगल आदि के छेत्रन माँहि अधिकाधिक रस आँमतौ। सिच्छा की ओर बिनकी सबसौं कम अभिरुचि हती।

जि प्रवृत्ति ना तौ ब्रजवासी समाज के हित मे हती अरु नाँय नगर के। स्वामी श्री दामोदरलाल जी महाराज् नैं विनकूँ सिच्छा के छैत्र में अधिकाधिक प्रोत्साहित करिबे के उद्देश्य सौ प्रत्येक ब्रजवासी बालक कूँ छात्रवृत्ति दैवे की व्यवस्था कर दीनी। परिनाम स्वरूप ब्रजवासी बालकन नैं सामान्य सिच्छा ही ग्रहन नाँय करी, किंतु उच्च सिच्छा के छेत्र माँहि वे आगैं बढ़े।

इन्हीं ब्रजवासी परिवारन मे श्री आनन्दीलाल वर्मा हू कौ एकु परिवार हतौ। वर्मा मूलतः ठाकुर (गौरवा) जाति सौ विशुद्ध रूप सौं ठेठ ब्रजवासी है। इनकौ जन्म नाथद्वारा नगर में श्री मोदीलाल जी वर्मा के परिवार माँहि भयौ। आपहू के अग्रज अबहूँ नाथद्वारा माँहि रहमें हैं।

या समै श्री आनन्दीलाल अरु इनके अनुज नै अपनौ स्थायी निवास कांकरोली नगर मे बनाय लियौ है अन्य ब्रजवासी छात्रन की तरियाँ आनदी लाल मे शिक्षा के प्रति अभिरुचि नाँय हती अरु खेलिबे कौ चाव भौत हौ। जाही कारण सौं इन्नै उच्च सिच्छा नाँय पाई।

विगत समै में श्री आनन्दीलाल कै बचपन माँय नाथद्वारा मे एक मात्र सिच्छन संस्था'श्री गोवर्द्धन' हाई स्कूल' हतौ। या स्कूल मे बिन दिनन में छ. छः दिना ताँई अन्त्याच्छरी प्रतियोगिता चलती। श्री वर्मा नैं तुकबँन्दी करवौ प्रारम्भ कर दियौ। जे ही कारन रहौ कै इनके अन्तःकरन सौं छिपी भई काव्य–प्रतिभा शनैः शनै रस निर्झरी के रूप माँहि स्फुरित है कै सहसा बहिबे लगी। याही सौं श्री वर्मा की काव्य–यात्रा कौ श्रीगनेश भयौ। इन्नै कवि सम्मेलनन मे सम्मिलित हौनौ चालू कर दियौ।

अद्यतन ब्रजवासी परिवार ते जुड़े हैवे के कारन श्री वर्मा की मातृभाषा हू ब्रजभाषा है इन्नैं ब्रजभाषा अरु हिन्दी माँहि कविता लिखी। इन्हें लोक कवि कहनौ अधिक उपयुक्त अरु समीचीन होयगौ।

हरिपुरा काँग्रेस में लिए गए राजनीतिक निरनय की अनुपालना माँहि तत्कालीन मेवार रियासत की राजधानी उदयपुर माँहि श्री मानिकलाल वर्मा, श्री भूरेलाल वर्मा अरु श्री बलवन्त सिंह महता जैसे कतिपय देस भक्तन नै मिलिकैं 4 अप्रैल, 1938 कूँ मेवाड़ प्रजा मंडल की स्थापना करी।

प्रजा मंडल माँहि थोरे समै बाद मेवार के रियासती सासन द्वारा अध्यादेस (इश्तिहार) संख्या 1874 सें. नं. 2, दिनांक 27 सितम्बर 1938 प्रख्यापित करिकैं मेवार प्रजा मंडल कूँ समूचे मेवार राज्य माँहि अवैध घोसित कर दियौ।

या कारे कानून के विरोध माँहि समूचे संगठन तिलमिला उठे अरु 4 अक्टूबर ते सत्याग्रह करबौ निश्चित है गयौ।

या आन्दोलन कौ सबसौं स्फूर्त प्रचण्ड अरु तीव्र वेग नाथद्वारा माँहि दिखाई दियौ। रियासत के इन्सपेक्टर जनरल भारी पुलिस फोर्स के संग–संग सज्जन इन्फैन्ट्री अरु भीलकोर के कई दस्ता लैकैं नाथद्वारा आय धमकौ। जनता कूँ क्रूरतापूर्वक दबाबे की हर संभव कोसिस करी। बा परिस्थिति सौं उत्तेजित हैकैं चौपाटी पै जनता अरु पुलिस माँहि घमासान मच गयौ। भीलकौर के जवानन कूँ अपनी–अपनी जान बचाय कैं भागनौ परौ। परिनाम स्वरूप प्रसासन नैं बलबे के अभियोग में नाथद्वारा के 40–41 लोगन कूँ गिरफ्तार करिकैं राजसमन्द पुलिस लाइन्स में बन्दी बनाय कैं राखौ। बिनमें श्री आनन्दीलाल वर्मा हू एक हतै।

श्री आनन्दीलाल वर्मा बचपन सौं राष्ट्रीय बिचारन के पोषक रहे हैं। सन् 1957 में, जा बिरियाँ मैं कुम्भलगढ़, आमेर निर्वाचन छेत्र सौं चुन्यौ गयौ, बा समै श्री वर्मा चार भुजा माँहि रहवे हे। इन्नैं मेरे चुनाव में अपनी पूरी शक्ति सौं अरु निष्ठा सौं प्रचार काम करौ।

मेरै छेत्र माँहि मैंने रिस्वत अरु भ्रष्टाचार उन्मूलन के काजैं एक ससक्त मोरचा स्थापित करौ। जे एक महत्त्वपूरन प्रयोग हतौ। यामें श्री आनन्दी लाल वर्मा नैं सक्रिय अरु अग्रनीय बनिकैं सहयोग दियौ।

श्री वर्मा नैं सामाजिक छेत्रन हू में सेवा दई।। इन्नैं जगै–जगै प्याऊ अरु अन्य जन मंगल कार्यक्रमन सौं जनता कौ स्नेह पायौ। मैं भाई श्री आनन्दी लाल वर्मा के दीघार्यु के संग–संग बिनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करूँ हूँ।

नाथद्वारा (राज.)

❒

श्री आनन्दी वर्मा: जैसौ मैंनै देखौ

— श्री हर्षलाल पगारिया

काँकरोली निवासी श्री आनन्दीलाल जी वर्मा कौ बाल्याकाल संघर्षपूर्ण स्थितीन सौं गुजरतौ रहौ है। इन्नैं अपनी प्रारंभिक सिच्छा नाथद्वारा माँहि लई। विन दिनान में सिच्छा की समुचित व्यवस्था हू नाँय हती इनके पिता की सामान्य स्थिति हैबे ते अरु पढाई मे अधिक रुचि नाँय लैवे ते घर छोरिकै वर्मा कूँ बम्बई जानौ परौ। बम्बई में इन्नै साधारन व्यवसाय सुरु करौ। विन दिनन, सन 1938 ई. मे स्वतन्त्रता आन्दोलन नैं जोर पकरौ अरु जे हू वा आन्दोलन माँहि भाग लैबे के काजै जुरि गए। कछु समै पीछैं धन्धे के ना जमिवे सौ श्री वर्मा पूना चले गए। पूना हू में सामान्य व्यवसाय कियौ। यहीं इनकौ कैऊ नेतान सौं परिचै भयौ। अपनै धन्धे कूँ जमतौ नाँय जानिकै श्री वर्मा पुनः नाथद्वारा आ गए।

सन. 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन के छिरवे पै स्थानीय नेतान के संग जिन्नैऊ लगिकै संघर्ष सुरु कर दीनौ। अन्य कार्यकर्तान के सग-सग श्री वर्मा हू जेल माँहि डार दिए गए। 9 माह पीछै जेल सौ रिहा करिवे पै जे नाथद्वारा आ गए।

कछू काम-काज के विना इनकौ मन हू नाँय लगौ अरु ये उदयपुर जायकैं मेवाड की सज्जन इन्फैन्ट्री पलटन माँहि भरती है गए। कछु समै श्री वर्मा वहीं रहे। उदयपुर रहते भये सेना की व्यवस्था डयूटी सौ इनकौ मन व्यथित है गयौ अरु भाग के पुनः बम्बई चले गये। कछु दिना पीछै स्वयं नैं आत्म समर्पन करिकैं 6 महिना जेल की सजा काटिकै लौट आए।

नहिं पाण्डु के पुत्रन भू जे भई,
नहिं पृथ्वीराज चौहानन की।
नहिं दिल्ली भई अंगरेजन की,
नहिं शहंशाह मुगलीनन की॥
मगरूरी तजैं दिन चार जे राज,
है तोर–मरोर कनूनन की।
बहकाय रहे नित भोली प्रजा,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

कोऊ हाथ कौ पंजा दिखावत है,
कोऊ छाप दिखावत मुरगिन की।
कोऊ पद्म को पुष्प बताय रह्यौ,
कोरु हँसिया धार कटारिन की।
कोऊ घोड़ा चढ़े, कोऊ हाथिन पै,
कोऊ देत दुहाई किसानन की।
सब कुर्सिन काजैं दीन बने,

अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥
अल्लाऊद्दीन चितौर चढ़ौ संग,
लै अपनी चतुरंग सवारी।
गौरा ओ बादल बीरन नैं तब,
जंग मचाय दई अति भारी।
पद्मनी जौहर झूझि परी नहिं
पाय सकौ बैरी मति मारी।
ऐसे भिरे रण बाँकुरे बीर जु,
बैरिन खून मही रंग डारी॥

ऐसे विचारन काम चले, नहिं
जान हथेरी लै आगैं चढौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाप जवाहर
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहो अंगरेजन सौं,
अरे हिन्द के वाँकुरे वीर अड़ौ।
जव लौ न स्वराज मिले हमकूँ,
तव लौ तुम देस के ताहिं लड़ौ॥

अँगरेजन सौं दिन-रात लडै
जे सारी विलात हिलाइंगे हम।
कितनीऊ मुसीवत आवैं भले,
पर जान सौ जान लडाइंगे हम।
जो दिन रात सताय रहे,
जग सौं तिनकूँ ही मिटाइंगे हम।
अव नाम ही याकौ हटाइगे देस सौ,
वम्व पै वम्व गिराइगे हम॥

चुनावन वेर गये घर पै,
अरु खूव खुसामद की जिनकी।
जोरिकै वोट कूँ जीत गये,
सुधि भूलि गए अपनेपन की।
हथियाय लई अव तौ कुरसी,
रहे सोय करैं चिन्ता किनकी।
जिनके वल पै इतराय रहे,
अव कौन सुने वतियाँ विनकी॥

नहिं पाण्डु के पुत्रन भू जे भई,
नहिं पृथ्वीराज चौहानन की।
नहिं दिल्ली भई अंगरेजन की,
नहिं शहंशाह मुगलीनन की॥
मगरूरी तजैं दिन चार जे राज,
है तोर-मरोर कनूनन की।
बहकाय रहे नित भोली प्रजा,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

कोऊ हाथ कौ पंजा दिखावत है,
कोऊ छाप दिखावत मुरगिन की।
कोऊ पद्म को पुष्प बताय रह्यौ,
कोरु हँसिया धार कटारिन की।
कोऊ घोड़ा चढ़े, कोऊ हाथिन पै,
कोऊ देत दुहाई किसानन की।
सब कुर्सिन काजैं दीन बने,

अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥
अल्लाऊद्दीन चितौर चढ़ौ संग,
लै अपनी चतुरंग सवारी।
गौरा ओ बादल बीरन नैं तब,
जंग मचाय दई अति भारी।
पद्मनी जौहर झूझि परी नहिं
पाय सकौ बैरी मति मारी।
ऐसे भिरे रण बाँकुरे बीर जु,
बैरिन खून मही रंग डारी॥

ऐसे विचारन काम चले, नहिं
जान हथेरी लै आगैं वढौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाष जवाहर
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहो अंगरेजन सौ,
अरे हिन्द के बाँकुरे वीर अड़ौ।
जब लौं न स्वराज मिले हमकूँ,
तव लौं तुम देस के ताहिं लडौ॥

अँगरेजन सौ दिन-रात लडै
जे सारी विलात हिलाइंगे हम।
कितनीऊ मुसीवत आवै भले,
पर जान सौं जान लड़ाइगे हम।
जो दिन रात्त सताय रहे,
जग सौ तिनकूँ ही मिटाइंगे हम।
अव नाम ही वाकौ हटाइंगे देस सौ,
वम्ब पै वम्ब गिराइंगे हम॥

चुनावन बेर गये घर पै,
अरु खूब खुसामद की जिनकी।
जोरिकैं वोट कूँ जीत गये,
सुधि भूलि गए अपनेपन की।
हथियाय लई अव तौ कुरसी,
रहे सोय करै चिन्ता किनकी।
जिनके वल पै इतराय रहे,
अव कौन सुने वतियाँ विनकी॥

नहिं पाण्डु के पुत्रन भू जे भई,
नहिं पृथ्वीराज चौहानन की।
नहिं दिल्ली भई अंगरेजन की,
नहिं शहंशाह मुगलीनन की॥
मगरूरी तजैं दिन चार जे राज,
है तोर–मरोर कनूनन की।
बहकाय रहे नित भोली प्रजा,
अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥

कोऊ हाथ कौ पंजा दिखावत है,
कोऊ छाप दिखावत मुरगिन की।
कोऊ पद्म को पुष्प बताय रह्यौ,
कोरु हँसिया धार कटारिन की।
कोऊ घोड़ा चढ़े, कोऊ हाथिन पै,
कोऊ देत दुहाई किसानन की।
सब कुर्सिन काजैं दीन बने,

अब कौन सुनैं बतियाँ बिनकी॥
अल्लाऊद्दीन चितौर चढ़ौ संग,
लै अपनी चतुरंग सवारी।
गौरा ओ बादल बीरन नैं तब,
जंग मचाय दई अति भारी।
पद्मनी जौहर झूझि परी नहिं
पाय सकौ बैरी मति मारी।
ऐसे भिरे रण बाँकुरे बीर जु,
बैरिन खून मही रंग डारी॥

ऐसे विचारन काम चले, नहिं
जान हथेरी लै आगैं बढ़ौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाष जवाहर
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहो अंगरेजन सौ,
अरे हिन्द के बाँकुरे वीर अड़ौ।
जब लौं न स्वराज मिले हमकूँ,
तब लौं तुम देस के ताहिं लड़ौ॥

अँगरेजन सौं दिन-रात लड़ै
जे सारी विलात हिलाइंगे हम।
कितनीऊ मुसीवत आवै भले,
पर जान सौ जान लडाइगे हम।
जो दिन रात सताय रहे,
जग सौं तिनकूँ ही मिटाइगे हम।
अब नाम ही वाकौ हटाइगे देस सौं,
वम्व पै वम्व गिराइंगे हम॥

चुनावन वेर गये घर पै,
अरु खूब खुसामद की जिनकी।
जोरिकै वोट कूँ जीत गये,
सुधि भूलि गए अपनेपन की।
हथियाय लई अब तौ कुरसी,
रहे सोय करैं चिन्ता किनकी।
जिनके वल पै इतराय रहे,
अब कौन सुने बतियाँ विनकी॥

... कहनौं।

जिन नैनन सौं तुम प्रीत करौ,
बिन नैनन बीच सदा रहनौं।
जिन प्रेम के पंथ हू पैर गहे,
तहँ दुख औ सुख सबै सहनौं।
हमरे जिय कौ परनाम जिही,
यह देह धरी विरहा दहनौं।

गज–ग्राह लरे जल भीतर हू,
तब दौरिकैं आय गए बनवारी।
ठाढ़ि पुकारे सभा बिच द्रोपदि,
खैंचत देखि दुस्सासन सारी।
साप दिये ते पासान भई तब,
आप नैं तारि अहिल्या दुखारी।
ना समझे तिन का समझावत,
मुण्डन–मुण्डन है मत न्यारी॥

इक नार बसन्ती बसन्त हू पै
लला आइयौ मोरी गली में कहौरी।
अति, चंचल नैन नचाय हँसी,
अरु बात कही रसिया रस बोरी।
फाग की भीर में पाय कै दाव
लुकाय के लैगई भीतर गोरी।
लिपटी हँसिकैं रसवन्ती गई,
झट आँगन बीच मचा दई होरी

कलिकाल प्रभाव बढ़्यौ जग में,
अब भारती मैया यहाँ अटकी।
व्रज में गिरिराज उठायौ प्रभू ,
थन पूतना चूसि धरा पटकी।
इंद्र कौ मान हरौ हरि नै अरु,
बाँह जो कंस की दै झटकी।
अँगरेजन नाव डुबावन कूँ
अइयो प्रभु ये मछरी अटकी॥

कालिन्दी कूल कदम्ब की छाँह मे,
सीतल मंद-सुगन्ध बयारी।
गोप वधू तहँ घेर लई बिच,
मोहन लाड़ली राधिका प्यारी।
हास बिलास सौ मोद भरी,
मद होस भई सब रूप निहारी।
या छवि सौं मन मन्दिर मे,
बिहरैं नित राधिका संग बिहारी॥

गोरस गागर सीस लिये संग,
रूपवती सब गोप कुमारी।
साँकरी गैल ते जाय चली,
दधि वेचन कूँ वृषभान कुमारी।
आइ गयौ झट गैलहि स्यान,
निहारत नेह भरी मनुहारी।
या छवि सौ मन मन्दिर मे,
बिहरै नित राधिका संग बिहारी।

चौरि लुकाय कदम्ब चढ़े, छिपि बैठे
री नागर कुंज बिहारी।
दोस लगे जमुना जल में तुम,
नग्न नहावत चौं ब्रजनारी।
माँगत चीर रिरावत हैं सखि,
सींग दिखावत कृष्ण मुरारी।
या छवि सौं मन मन्दिर में,
बिहरैं नित राधिका संग बिहारी॥

कुंजन में वृषभान सुता सँग,
रास रचैं नित रास बिहारी।
ताल बजैं कर ताल बजैं संग,
चंग मृदंग बजैं, मतवारी।
ता थैया ता ताक धिना धिन,
गोपिन संग नचैं बनबारी
या छवि सौं मन मन्दिर में,
बिहरैं नित राधिका संग बिहारी॥

डारि खड़े गल बाँह अदा,
मुसकान भरे मुख की छबि न्यारी।
टेढ़ि हैं भौंह त्रिभंगी लला,
अधरान धरी मुरली मनहारी।
नैनन सैन चलाय चलाय,
संदेसन भेजत प्रेम पुजारी।
या छबि सौं मन मन्दिर में,
बिहरैं नित राधिका संग बिहारी॥

मोर के पख किराट लसै,
मकराकृत कानन कुण्डलधारी।
गुजन माल गले पहिरात है,
पीत पीताम्बर पै जरतारी।
प्यारी पै प्यार जतावत साँवरो,
रीझत देखिकै गोप कुमारी।
या छवि सौं मन मन्दिर में,
विहरै नित राधिका सग विहारी॥

हौं जाय रही जमुना जल कूँ,
गहि बाँह नई फरिया झटकी।
झटका झटकी चुरियाँ चटकी,
अरु फूट गई सिर की मटकी॥
दई चोट चलाय कैं नैनन की,
हिय ऊपर चोट बड़ी खटकी।
बिन मोल विकाय गई सुन री,
सुधि भूलि गई घर घूँघट की॥

मुरली जो बजी मनमोहन की,
मन माँहि धँसी धुन जा अटकी।
गैल गिरारिन छाँडि भजी
चट गैल लई जमुना तट की।
भटकी न कहूँ चटपट चलिकै,
गल बाँह लई नागर नटकी।
मति मारी गई, सिर सारी गई,
अरु लाज गई पट घूँघट की॥

लै दुहिता सुत सोवत है,
मुख चूम चले वसुदेव सुखारी।
माया हरी हरि काज भयौ,
लखि चारहु ओर खिली उजियारी।
चेत भयौ जसुदा को जवै,
रहि औचक सी सुत रूप निहारी।
सोर भयौ सवैं गोकुल में,
व्रजराज के दर्शन की वलिहारी॥

घर ते निकसी जमुना जल कूँ,
नन्दलाल नैं आ चुनरी झटकी।
गहि बाँह कलाई मरोर दई,
सिर ऊपर ते मटकी पटकी।
नैनन सैन चलाय भजौ,
मुरली धुन मोर हिए अटकी।
घटना घट की औ पनघट की,
अब कौन सुने बतियाँ घट की॥

बरसाने चले रसिया मिलिकैं,
पिचकारी औ, रंग लिये कर भागे।
ग्वालिन संग बजाय कैं चंग,
अनंग के आनन्द में रस पागे।
ज्वानी कौ रंग चढ़ौ सब पै,
लख गोपिन संग में खेलन लागे।
खेलत–खेलत ग्वाल सखा सब,
होरी पै धूम मचावन लागै॥

घनाक्षरी

ब्रज कौ बचायौ, गिरिराज कूँ उठाय, लियौ,
कंस कूँ पछार मारौ ऐसो व्रत धारी है।
महिमा अपार नाथ टेर सुनी द्रोपदी की,
खेंच-खेंच हारौ दुसासन दुष्ट सारी है।
सारथी बनौ है दीनौ ज्ञान महाभारत में,
रूप हू विराट दिखलायो बनवारी है।
ऐसे ब्रजराज कूँ प्रणाम करूँ बार-बार,
देत सदा आनद सु ताकी बलिहारी है॥

मात के कपूत लाल, नेता बनि डोडै फिरै,
चामरी गरीबन की खेंचि चीर डारी है।
कैसे मस्त बने साँड, करै हैं हवाला कांड,
भाँड सी भुसाई करै मंच भ्रष्टाचारी है।
चीर-चीर देखो आज देस कू हू चीर रहे,
कौन सुनै कासौं कहैं विपदा हमारी है।
आनन्द पुकार करै, अब तो बचाओ नाथ,
लाज कौ बचैया तूही तेरी बलिहारी है॥

बाँके विहारी विहार करैं राधा संग,
गोप-ग्वाल संग लिये आनन्द मन भाई है।
चहूँ ओर बासन्ती फैल रही बगियन में,
भौंरन की कुंज माँहि भन्न भन्न छाई है।
अम्वा की डारिन पै कोयल करै कुहू-कुहू,
मयूरा-पपिहरा की बोली सुखदाई है।
फूलन की फुलवारी चहूँ ओर महक रही,
मीठी सी मधुर कैसी गंध महकाई है॥

दूध बिना पूत उतै गोद में विलाप करै,
इतै मदपान मतवारौ भयौ आदमी।
सुनत ना उतै कोऊ आह ही गरीबन की,
इतै हाँ हजूर की हजूरी करै आदमी।
भूखौ अरु प्यासौ है किसान-मजदूर उतै,
इत करै हाकिम हकूमत सौं आदमी।
हाय परे आनन्द के दिन-रात रोने उतै,
कासौं कहैं, कौन सुनै बहरौ भयौ आदमी॥

जमुना सी मात जे बिराजे ब्रज भूमि माँहि,
भानु सौ भयौ है तीन लोकन प्रकाश है।
मधुपुरी वास जहाँ कृष्ण अवतार लियौ,
रतनकुण्ड सोना कौ कलस जहाँ खास है।
श्री जी सुत कहवावें गिरिधर कहैं लोग,
प्रभुनन्द नन्दन की भक्ति मम पास है।
सात ध्वजावारे कौ भरोसौ दिनरात रहे,
जो है बाकौ भक्त ताकौ मेरौ मन दास है॥

है जे दिन चार हू को जिन्दगी ओ प्यारेलाल,
मान-मान मेरी कही पीछें पछतावैगौ।
पत्तर कैं बैठौ आगें-पीछैं को है सुध नाँव,
जीवन अमोल वन जाय तू गमावैगौ।
फँस्यौ माया जाल बीच, हाय कछु आवै नाँय,
खाली हाथ आयौ है तू खाली हाय जावैगौ।
आनन्द मिलैगौ सतसंग में समाजा सखा,
नन्द के दुलारे बिना चैन नहीं पावैगौ॥

हमारे है छोड़ विनै, जाँय तौ जामिंगे कहाँ,
मेरो तौ श्रीनाथ प्रभु प्रानन सहारौ है।
सहारौ दुलारौ है जे अँखियन तारौ है जे,
सुदर्शन चक्रधारी, गोवर्धन धारौ है।
धारौ है जे अँगुरीन, जग में पसारौ वड़ौ,
अष्ठसखा कीरतन भक्ति रस प्यारौ है।
प्यारौ है गोपाल कौ स्वरूप नवनीत जू कौ,
आनन्द-अनोखा-मधु लालन हमारौ है॥

राम औ रहीम एक, कृष्ण औ करीम एक,
भक्तन-विरक्तन नैं जेही निरधारौ है।
आनन्द मिलैगौ कहाँ, खोजत फिरै है कहाँ,
द्वारिका के धीश सम दूजौ का निहारौ है।
एक के ही साधे ते सबहू सध जात यार,
एक डोर बँधे जेही कृष्ण नाम प्यारौ है।
हमारी सुनन हारौ, नैनन निहारौ, नाहिं,
व्रज रखवारौ श्री जी केवल हमारौ है॥

दिल में लगे काँटे डार, होरी मे पजारिंगे,
सभी सखा नाँचे तव, फाग जव गावैगौ।
झगा धार, पाग बाँध, मोर पंख सीस धार,
ढप अरु ढोल ताल दै-दै मन नाचैगौ।
कोड़ा लिये हाथ सखी आमें हुरदग वीच,
पिचकारी लगे हीये आनन्द जे आवैगौ।
सखा कहै सखी सुन, साँची वात तोय क॰
उड़े ना गुलाल चित्त चैन नही पावेगं

ध्यान या मुरारी कौ मो बावरौ बनाय देत,
बाग दिल दुनियाँ उजार करि डारौ है।
वृन्दावन बासी जब बिहरे हीया के बीच,
कब नन्द गाम कब गोकुल कर डारौ है ।
दश हू कौ चाव इन अँखियन लगायौ खूब
मन्दिर बनायौ जहाँ झुक्यौ जग सारौ है।
पीमें प्रेम प्याले कूँ जे जाने हैं अपन गति
दिवानौ बनायौ दिल श्याम नें हमारौ है॥

भारत के हाल,यों बेहाल हम देखि रहे,
कहाकहौ नाथ कोऊ सुने ना हमारी है।
आँधरे बड़ाऊ आज बैठे भये गादिन पै,
नेंक हू ना दीसै चढ़ी खूब ही खुमारी है।
गऊ ब्रज वासिन की बचाऔ श्रीनाथ लाज,
याही काज तुमसौं जे अरजी हमारी है।
सात ध्वजावारे घनस्याम श्रीनाथ प्यारे,
टेर सुनौ आनन्द की, आस हू तिहारी है॥

सन् 1992 की 25 फरवरी कूँ श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् काँकारोली के तत्त्वावधान माँहि गाँधी पार्क के मैदान में ब्रजभाषा कवि सम्मेलन के काजैं 'पधारे भये ब्रज छेत्र के कविन के सम्मान हू में श्री आनन्द ने' जे कवित्त बनाय कै सुनायौ–

दाख औ छुँआरे, कारी मिर्च औ मसालेदार,
विजिया बादाम सिला–लोरी पै घुटाय दैं।
दूध संग साफी हू सफेद स्वच्छ मित्र मेरे,
गुंलकन्द डारि स्नेह सौरभ मिलाय दैं।
काँकरोली द्वारकेश द्वारिका पुरी में आज,
ब्रज के समाज बीच कविता सुनाय दैं।
आनन्द अनोखा या बसन्त सुभ औसर पै
भर भर लोटा भंग कविन छकाय दैं॥

एक विरियाँ आनन्द ते काऊ वस वारे नै पूछी कै उस्ताद हमऊ ए वताऔ इन मोटर चलायवे वारेन कूँ सैंतीसवीं कौम च्यों कहैं?

या वात पै आनन्द नैं एक कवित्त रचिकैं पूछिवे वारे कूँ सुनाय दियौ-

विष्णु ज्यों शंख चक्र गदा पद्म धारन करैं,
ड्राइवर हू शंख चक्र गदा पद्म धारी है।
शंख है होरन अरु स्टेरिन है चक्र सम,
गदा है गेर जहाँ क्लच पद्मचारी है॥
कंडक्टर है पुजारी, घंटी हू वजातौ रहै,
उतारे है, पार खड़ी करिकैं सवारी है।
विष्णु ने वनाई है छत्तीस कौम पूरी जान,
ड्राइवर सैंतीसवीं आनन्द विचारी है॥

रसिया

होरी खेलो मेरे यार अनोखौ फागुन आयौ रे।
फागुन आयौ रे, महीना मन कूँ भायौ रे। होरी०. ..
फागुन कौ जे मस्त महीना, सव मिलि खेलें होरी।
झूम-झूम कैं नाचैं-गायै रंग ते भर-भर झोरी॥
चौपारन पै मिल रंग रसिया, चंग वजायौ रे। होरी ०
सिलवट्टा धर लेऊ वीच में, इक लोटा भर पानी।
कारी मिर्च वदाम सौंफ ते लेऊ भंग रंग छानी॥
ऐसी मस्ती कौ आनन्द कवहू हमनैं ना पायौ रे। होरी०......
सव तरियाँ कैं रंग घुरवावैं कारौ, नीलौ, पीरौ।
केसरिया, कचनार, गुलाबी, हरियल धानी धीरौ॥
मोर पखा सिर वाँध 'मधु' फगुवाय नचायौ रे। होरी ०...

ढोल नकारे शहनाई औ मुरली तान सुनावैं।

पाँवन में पायलिया जोरी घुँघरू कूँ झनकारे॥

लाल गुलावी मुख मलि डारी स्वांग बनायौ रे। होरी०

मधु रस पीनौ होय तो भैया मधुर कंठ सौ गाऔ।

चार दिनन कौ ये जग मेला मिलजुल आनन्द पाऔ।

भागौ-भागौ यार हुरंगा होरी आयो रे। होरी ०.....

❋ ❋ ❋

होरी खेलूँगी श्याम संग आज विरज में मच रही होरी।

ग्वालन संग गोपाल, गोपी संग राधा भोरी॥

नंदलाला नख खेल रचायौ।

होरी कौ हुरदंग मचायौ॥

रंग दई सबन इक संग बची ना व्रज गोरी।

होरी खेलूँगी०.........

करन कमोरी कंचन धारी।

केसर रंग घोर कैं डारौ॥

पनिया भर लाई नार, मटुकी सिरकी फोरी।

होरी खेलूँगी०.......

पकरि लाल अपने दल लाऔ।

कजरा-वेंदी ताय सजाआस॥

अँगिया देऊ पहराय उढ़ाय देऊ सिरसारी।

होरी खेलूँगी०........

साठ हाथ लँहगा पहिरायौ।

होरी कौ हुरदंग मचायौ॥

नर ते वाय वनाय दियौ हमनैं नारी।

होरी खेलूंगी०........

चंस मोर भरमार लगैगी, फिरफिर गाऊँगी।

म्हौड़ौ मटका, दैदै झटका, नैन नचाऊँगी॥

अब तुम ०.........................

जो कछु मोय मिलेगौ सैयां, सब भर लाऊँगी।

आनन्द सौं घर बार चलैगौ, सब सुख पाऊँगी॥

अब तुम ०.........................

आज जमानौ बदल गयौ है, सबै बताऊँगी।

मैया–बाप की, सैंया नहिं नाक कटाऊँगी॥

अब तुम ०.........................

❐